पंचम अध्याय

5.1 लोकगीत

लोकगीत वस्तुतः लोकसभ्यता, लोकाचार, लोकव्यवहार एवं लोक परम्पराओं के पीढ़ी दर पीढ़ी संवाहक की भूमिका अदा करते हैं। लोक साहित्य की सबसे प्रचलित और सशक्त विधा होने के कारण लोकगीत किसी भी समुदाय की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक विशिष्टता और विविधता को स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम है। असम की चाय जनगोष्ठी में प्रचलित लोकगीतों पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर इन श्रमिकों के जीवन की विभिन्न स्थितियों, हर्ष-विषाद, व्याघातों से अंतर्मन में संघनित कटु-तीक्ष्ण अनुभूतियों का कलात्मक प्रस्फुटन दिखायी पड़ता है। भारत के विविध प्रांतीय समाज के इन श्रमिकों के असम आगमन के पश्चात् जिस तरह इनका आपसी सांस्कृतिक तथा भाषिक विलयन हुआ है उसकी स्पष्ट छवि लोकगीतों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। जीविकोपार्जन हेतु अपने मूल स्थान को छोड़ने के बाद ये श्रमिकजन अपने साथ अपने आत्मीय जनों की स्मृतियाँ और लोक-सांस्कृतिक विरासत को लेकर आये। आज भी इस समाज में आयोजित होने वाले विभिन्न मांगलिक अनुष्ठानों में विधिवत लोकगीतों को गाया जाता है। लोकगीतों में भी ख़ासतौर पर झुमुर गीतों की बात की जाए तो इसमें ईश्वरीय लीला के वर्णन के साथ ही बारहमासा के झुमुर गीतों का भी प्रचलन है। इन गीतों में विभिन्न मिथकीय पात्रों के माध्यम से एक ओर आदर्श समाज तथा उच्च जीवन-मूल्यों की स्थापना को दर्शाया गया है वहीं दूसरी ओर प्रकृति के माध्यम से प्रेम के स्वरूप को रेखांकित किया गया है। चाय जनगोष्ठी में विभिन्न प्रसंगों तथा विषयों को लेकर पीढ़ियों से प्रचलित लोकगीतों का समाज और भाषा के संदर्भ में अध्ययन-विश्लेषण यहाँ दृष्टव्य है-

* ***संस्कार गीत***

मानव जीवन से जुड़े विभिन्न संस्कारों जैसे: सोहर, मुंडन, विवाह, मृत्यु आदि के दौरान गाये जाने वाले गीतों को ही संस्कार गीत कहा जाता है। इन गीतों में किसी भी समाज की आतंरिक संरचना, उस समाज में प्रचलित रीति-रिवाज, मान्यताओं, विश्वासों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति मिलती है। अर्थात् केवल संस्कार गीतों के माध्यम से भी किसी समाज की सांस्कृतिक मान्यताओं तथा गतिविधियों से अवगत हुआ जा सकता है। चाय जनगोष्ठी में प्रचलित संस्कार गीतों में विशेषकर 'तुलनी बिया' यानी किसी लड़की के प्रथम ऋतुस्राव के अवसर पर आयोजित अनुष्ठान तथा 'विवाह' संस्कार में लोकगीतों का खूब प्रचलन है। विवाह की लगभग सभी रीतियों में विभिन्न वाद्ययंत्रों के ताल पर प्रसंगानुकूल गीत गाये जाते हैं। इनमें से कुछ गीत प्रस्तुत हैं-

1. "हरदी-हरदी पूरा पाटना
   राइगिरि चंदन रे
   हामार बाबा जाइछिलो
   रायपुर बाजार गो
   छेछिलेना छेछाइ मागो
   पिसिले ना पिसाए मागो
   एई हलद कोन देशेर हलद"[1]

चाय जनगोष्ठी में विवाह के अवसर पर वर तथा वधू को तेल, हल्दी और चंदन लगाया जाता है। इससे उनके रंग-रूप में निखार आता है। दरअसल, चाय श्रमिक समाज में लगन की तिथि निर्धारित होने के दिन से विवाह के दिन तक तेल-हल्दी लगाने का रिवाज प्रचलित है। उपर्युक्त गीत हल्दी लगाने के रस्म के दौरान महिलाएँ गाती हैं। इस गीत को 'हालधि माखा' गीत कहा जाता है। हल्दी को पीसना अत्यंत श्रमसाध्य है। अक्सर विवाह के अवसर पर हल्दी पीसने की रीति पर शगुन दिए जाने का भी प्रचलन है। अतः प्रस्तुत गीत के माध्यम से महिलाएँ यह कहती हैं कि यह हल्दी न जाने किस देश से लायी गयी है जिसे घिसना व पीसना इतना कठिन है। कन्या के पिता द्वारा राइगिरी से लाये गये चंदन तथा रायपुर की हल्दी को खूब अच्छे से महीन किया जाए जिसे लगाकर सौन्दर्य में उतरोत्तर वृद्धि होगी। वैसे हल्दी तथा चंदन का आमतौर पर सौंदर्यवर्द्धक प्रसाधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है किंतु ये दोनों ही औषधीय गुणों से भी परिपूर्ण हैं। इसीलिए चाय जनगोष्ठी के साथ ही अन्य समाज में भी आयोजित होने वाले वैवाहिक अनुष्ठानों में प्रचलित लोकगीतों में इनका उल्लेख मिलता है।

समाजभाषिक दृष्टि से देखने पर यह ज्ञात होता है कि उक्त गीत की पंक्तियों में भोजपुरी, बांग्ला तथा एकाध हिंदी के शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे- 'हरदी' (हल्दी), 'पिसाए' आदि भोजपुरी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं तथा 'पाटना' (पीसना), 'बाबा' (पिता), 'छेछाइ' (घिसना), 'देशेर' (देश का) तथा 'हलद' (हल्दी) आदि बांग्ला भाषा के शब्द हैं। ध्यातव्य है कि 'बाजारे' शब्द का वैसे तो बांग्ला भाषा में प्रयोग किया जाता है किंतु मूलतः यह फारसी शब्द 'बाज़ार' का बांग्ला रूप है जो इस गीत में प्रयुक्त हुआ है। अतः गीत की आधार भाषा सादरी में भोजपुरी, बांग्ला के साथ-साथ हिंदी तथा फारसी आदि भिन्न भाषाई शब्दों के प्रयोग से गीत में कोड-मिश्रण के साथ ही बहुभाषिकता की विशेषता का पता चलता है। इसके अतिरिक्त गीत में प्रयुक्त

‘कोन’ शब्द हिंदी के ‘कौन’ का निम्न रूप है जो ग्रामीण परिवेश में आम जनता द्वारा प्रयुक्त होता है। अतः यह भाषाद्वैत की प्रवृत्ति को दर्शाता है। इसके साथ ही गीत में ‘प्रत्येक’ हल्दी के अर्थ में ‘हरदी’ शब्द की दो बार आवृति हुई है जिससे पूर्ण पुनरुक्ति की स्थिति का बोध होता है। प्रयुक्ति के स्तर पर देखा जाए तो गीत में विभिन्न क्षेत्र की प्रयुक्तियाँ व्यवहृत हुई हैं। उदाहरणतः ‘हरदी/ हलद’, ‘चंदन’ आदि वनस्पति विज्ञान संबंधी प्रयुक्तियाँ हैं तथा ‘राइगिरी’ और ‘रायपुर’ स्थानसूचक प्रयुक्तियाँ हैं। इसी क्रम में ‘मा’, ‘बाबा’ आदि को संबंधसूचक प्रयुक्तियों में शामिल किया जाएगा। गीत में वाक्य के स्तर पर देखा जाए तो कुछ शब्दों विशेषकर क्रिया को वाक्य-संरचना के प्रारंभ में कर्ता के स्थान पर लिखा गया है। जैसे- ‘छेछिले ना छेछाइ मागो’ तथा ‘पिसिले ना पिसाए मागो’। इसमें प्रथम पंक्ति में ‘छेछिले’ (घिसने पर) क्रिया है किंतु इसे वाक्य में कर्ता के स्थान पर लिखा गया है। इसी तरह से दूसरी पंक्ति में ‘पिसिले’ क्रिया को वाक्य के प्रारंभ में रखा गया है। ऐसा वाक्य की क्रिया पर विशेष ज़ोर देने के लिए किया गया है जबकि सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-व्यवस्था (कर्ता+कर्म+क्रिया) के अंतर्गत इन दोनों क्रियाओं को वाक्य के अंत में होना चाहिए। इन दोनों पंक्तियों का मानक या विशुद्ध रूप क्रमशः ‘मागो छेछिले ना छेछाइ’ तथा ‘मागो पिसिले ना पिसाए’ होना अधिक तर्कसंगत होगा। वाक्य के स्तर पर भाषा की इस विशिष्ट प्रवृत्ति को टॉपिकीकरण कहा जाएगा।

2. “कोने तोर देलाई बेटी झिलिमिलि रे शाड़ीया
   कोने तोर देलाई बेटी धेनु बरणेर गाइ।।
   कोने तोर देलाई बेटी दुई कानेरि सोनावा
   कोने तोर देलाई बेटी सीता केरारे सिंदूरा।
   माये तोर देलाई बेटी झिलिमिलि रे शाड़ीया
   बाबा तोर देलाई बेटी धेनु बरणेर गाइ।।
   शशुर जे देलाई बेटी दुई कानेरि सोनावा
   पुरुष जे देलाई बेटी सीता केरारे सिंदूरा।।
   फाटि-चिटि जात बेटी झिलिमिलि रे शाड़ीया
   मरी हेराई जावत बेटी धेनु बरणेर गाइ।
   बेचि-कुचि खात बेटी दुई कानेरि सोनावा
   जुगे-जुगे रहि जात गो बेटी सीता केरारे सिंदूरा।।”[2]

उपर्युक्त गीत विवाह-संस्कार के दौरान 'सिंदूरदान' के अवसर पर गाने की परंपरा है। इसे चाय श्रमिक 'सिंदरादान' कहते हैं। ध्यातव्य है कि विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले अधिकतर गीत महिलाएँ गाती हैं। उद्धृत गीत का आशय यह है कि विवाह के अनुष्ठान में बैठी कन्या को संबोधित करते हुए पूछा जाता है कि उसने जो चमकदार, रंग-बिरंगी साड़ी तथा सोने के आभूषणों से साज-श्रृंगार किया है वह किसने दिया है। गीत के आगे की पंक्तियों में यह कहा गया है कि वधू ने जो विवाह का वस्त्र पहना है वह उसकी माता का दिया हुआ है तथा उसके पिता ने तमाम आर्थिक तंगी के बावजूद अपनी पुत्री को विवाह के अवसर पर ससुराल के लिए 'धेनु' गाय उपहार में दिया। वहीं वर पक्ष की ओर से ससुर यानी वर के पिता ने वधू को स्वर्ण से निर्मित कर्णाभूषण दिये जिसे पहनकर उसके सौन्दर्य में उतरोत्तर वृद्धि हुई है तथा उस कन्या के पति ने सिंदूर से माँग भरकर जीवन साथी के रूप में स्वीकार किया है। इस गीत में अन्य सुहागन महिलाएँ नवविवाहिता वधू को उपदेश देते हुए कहती हैं कि समय के साथ भौतिक चीज़ें समाप्त हो जाती हैं। अर्थात् माता द्वारा दिया गया वस्त्र पुराना होकर फट जाएगा तथा पिता ने जो 'धेनु' गाय उपहार में दिया है वह भी कुछ वर्षों के बाद मृत्यु को प्राप्त हो जाएगी। इसी तरह से ससुर ने जो स्वर्ण आभूषण भेंट किया है उसे आर्थिक तंगी में बेचने की आवश्यकता भी पड़ सकती है किंतु पति ने जो सिंदूर से उसके रूप की शोभा बढ़ाया है वह आजीवन उसकी ललाट पर चमकता रहेगा। इसीलिए सदैव उसका मान रखने हेतु उपदेश दिया गया है। कुलमिलाकर यह कहा जा सकता है कि चाय जनगोष्ठी में वर-वधू को राम-सीता की आदर्श जोड़ी के रूप माना जाता है तथा उनके प्रेममय जीवन की कामना की जाती है। उक्त गीत के माध्यम से विवाहिता स्त्री के जीवन में सिंदूर के सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य को अभिव्यक्त किया गया है। श्रमिक जीवन में चल रहे आर्थिक तंगी के कारण कई बार उन्हें अपने जीवन की सबसे मूल्यवान वस्तु को भी खोना पड़ता है। इसके साथ ही कन्या के पिता द्वारा उपहार में 'धेनु' गाय देने के उल्लेख से इस बात का बोध हो जाता है कि चाय जनगोष्ठी में बेटी के विवाह के अवसर पर कई बार महँगी चीजों को देना पड़ता है। इससे कहीं न कहीं दहेज़ प्रथा के प्रचलन का संकेत मिलता है।

उद्धृत गीत का समाजभाषिक दृष्टि से विश्लेष्ण करने के क्रम में यह कहा जा सकता है कि इस गीत की आधार भाषा सादरी में बांग्ला तथा भोजपुरी के शब्दों का कमोबेश प्रयोग हुआ है। उदाहरण के तौर पर इन दोनों भाषाओं के कुछ शब्दों को देख सकते हैं- 'शाड़ी' बांग्ला भाषा में 'साड़ी' के लिए प्रयुक्त होता है तथा 'बरणेर' शब्द 'रंग' के अर्थ में व्यवहृत होता है। ध्यातव्य है कि 'बरण' शब्द संस्कृत के 'वर्ण' का बांग्ला प्रचलित रूप है। इसके अलावा 'जात' (गया), 'मरी' (मृत), 'हेराई' (गुम होना), 'खात' (खा जाना) तथा

'रहि' (रहना) आदि भोजपुरी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। इन भिन्न भाषाई शब्दों के प्रयोग से गीत की भाषा में कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति का बोध होता है। यह स्थिति भिन्न भाषाई समाज के लोगों के एक साथ संपर्क में आने के कारण उत्पन्न हुई है। इसके अतिरिक्त कई स्थानों पर भाषा के निम्न कोड का प्रयोग भी दृष्टव्य है जो प्रमुखतः ग्रामीण परिवेश और अशिक्षित समाज द्वारा भाषा प्रयोग के कारण हुआ है। गीत में प्रयुक्त कुछ निम्न कोड के शब्द हैं- 'कोने', 'सोनावा', 'सिंदूरा', 'जावत' आदि। इन शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'कौने/ कवने', 'सोनवा', 'सिंदूर' तथा 'जात' होगा। अतः ये सभी निम्न कोड के शब्द यहाँ भाषाद्वैत की विशेषता को दर्शाते हैं। इसी क्रम में प्रयुक्ति के स्तर पर देखा जाए तो गीत में किसी एक क्षेत्र विशेष के अनेक शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे- 'माये' (माता), 'बाबा' (पिता), 'शशुर' (ससुर), 'पुरुष' (पति) तथा 'बेटी' आदि सभी संबंधसूचक प्रयुक्तियाँ हैं। इसके साथ ही 'जुगे-जुगे', 'फाटि-चिटि' तथा 'बेचि-कुचि' आदि में पुनरुक्तियों की स्थिति सहज ही देखी जा सकती है। इसमें 'जुगे-जुगे' में लम्बे समय का बोध कराने के उद्देश्य से एक ही शब्द की दो बार आवृति हुई है। इससे पूर्ण पुनरुक्ति का पता चलता है। इसके साथ ही 'फाटि-चिटि' तथा 'बेचि-कुचि' इन दोनों में 'फाटि' तथा 'बेचि' का कोशगत अर्थ है 'फटना' और 'बेचना' किंतु इसके साथ प्रयुक्त अन्य शब्दों का कोई कोशगत अर्थ नहीं है। ये शब्द अतिरिक्त के संदर्भ में प्रयुक्त हुए हैं। अतः इन्हें आंशिक पुनरुक्ति के अंतर्गत रखा जाएगा। इसी तरह से गीत की लगभग सभी पंक्तियों में किसी विशेष शब्द पर ज़ोर देने के लिए उसे वाक्य-व्यवस्था के अंतर्गत उसके नियत से स्थानांतरित कर दिया गया है। यह भाषिक विशिष्टता टॉपिकीकरण की स्थिति को दर्शाती है। उदाहरण के रूप में हम गीत की सभी पंक्तियों में क्रमशः इस स्थिति को देख सकते हैं। इन सभी पंक्तियों में 'कोने तोर', 'बाबा तोर', माये तोर', 'फाटि-चिटि', 'बेचि-कुचि', 'जुगे-जुगे' आदि जैसे शब्दों तथा 'देलाई' क्रिया पर विशेष बल देने के लिए इन्हें वाक्य के प्रारंभ में *कर्ता* के स्थान पर लिखा गया है। इन पंक्तियों को सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना (कर्ता+कर्म+क्रिया) के अनुसार क्रमशः 'बेटी रे तोर झिलिमिलि शाड़ीया कोने देलाई', 'बेटी तोर धेनु बरणेर गाइ कोने देलाई', 'बेटी तोर दुई कानेरि सोनावा कोने देलाई', 'बेटी तोर सीता केरारे सिंदूरा कोने देलाई', 'बेटी रे तोर माये झिलिमिलि शाड़ीया देलाई', 'बेटी तोर बाबा धेनु बरणेर गाइ देलाई', 'बेटी शशुर जे दुई कानेरि सोनावा देलाई', 'बेटी पुरुष जे सीता केरारे सिंदूरा देलाई', 'बेटी रे झिलिमिलि शाड़ीया फाटि-चिटि जात', 'बेटी धेनु बरणेर गाइ मरी हेराई जावत', 'बेटी दुई कानेरि सोनावा बेचि-कुचि खात' तथा 'बेटी गो सीता केरारे सिंदूरा जुगे-जुगे रहि जात' के रूप में होना चाहिए।

* ***ऋतु संबंधी गीत***

ऋतु चक्र के प्रभाव से प्रकृति में परिवर्तन होता है। साल भर के बारहों महीने में हो रहे ऋतुओं के परिवर्तन कारण प्रकृति में निरंतर हो रहे बदलाव का सीधा प्रभाव मनुष्य के अंतर्मन पर पड़ता है। चाय जनगोष्ठी में प्रचलित लोकगीतों में ऋतु परिवर्तन के कारण मानव में हो रहे बदलावों को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। वस्तुतः प्रकृति और श्रम का सामंजस्य ही चाय जनगोष्ठी के जीवन का आधार स्तंभ है। चाय श्रमिकजन चाय बागानों के अलावा खेतों में भी श्रम करते हैं। अतः जाहिर-सी बात है कि प्रकृति के साहचर्य में अपना अधिकांशतः समय व्यतीत करने वाले चाय श्रमिकों के समाज में प्रकृति की छवि, पशु-पक्षी तथा मानव मन के राग-विराग आदि की विशेष अभिव्यक्ति मिलती है। ऐसे कुछ बारहमासा गीतों का विश्लेषण यहाँ प्रस्तुत है-

1. "चैत्र बैसाग मासे ऋण नाहि मिले
   हायरे दया भूखे पियासे आलि
   तबु नाहि थिर पंथे काँपते शरीर
   नून मरिचा लेइके धुक्लि बारीरे दिया
   काँचा कुंदरी खीरा खाइके साहस कुलाय।"[3]

उपर्युक्त पंक्तियों से आशय यह है कि चाय श्रमिकजन अपनी आर्थिक स्थिति को लेकर बेहद निराश व हताश रहते हैं। उनकी आर्थिक स्थिति इतनी सोचनीय होती है कि उन्हें कई बार ऋण लेने की आवश्यकता पड़ती है। इसीलिए गीत के माध्यम से चाय श्रमिक अपनी मनःस्थिति को अभिव्यक्त करते हुए कहते हैं कि चैत्र-बैशाख के महीने में तो ऋण भी नहीं मिलता। भूखे-प्यासे शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है। तमाम शारीरिक दुर्बलताओं के बरअक्स ये अपने पेट की क्षुधा को शांत करने के लिए नमक, मिर्च, कच्ची कुंदली तथा खीरे पर आश्रित रहते हैं। तात्पर्य यह है कि ये श्रमिक दरिद्रता की ऐसी चक्की में पिस रहे हैं जहाँ इन्हें दो वक्त की रोटी भी भर पेट नसीब नहीं होती है। कंद-मूल खाकर किसी तरह जीवन गुजारने के अलावा इनके पास कोई अन्य विकल्प नहीं है। दरअसल, चाय जनगोष्ठी में प्रचलित अनेक गीतों में श्रमिक जीवन की विवशता तथा दरिद्रता का उल्लेख मिलता है। घर के आस-पास लगायी गयी सब्जियों के अतिरिक्त अरबी, ढेकीया आदि जंगली वनस्पतियों को खाकर ये श्रमिकजन अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

समाजभाषिक दृष्टि से अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि उक्त गीत की आधार भाषा सादरी है किंतु इसमें संस्कृत, हिंदी, बांग्ला तथा भोजपुरी आदि भिन्न भाषाई शब्दों के प्रयोग को हम देख सकते हैं। जैसे- 'ऋण', 'दया', 'साहस' आदि संस्कृत के शब्द हैं तथा 'शरीर', 'काँपते', 'खीरा' आदि हिंदी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। इसी तरह से 'मासे' (महीने में), 'काँचा' (कच्चा), 'मरिचा' (मिर्च) आदि आमतौर पर बांग्ला भाषा में व्यवहृत शब्द हैं और 'नाहि' (नहीं), 'पियासे' (प्यास में), 'नून' (नमक) आदि भोजपुरी के शब्दों का यहाँ प्रयोग हुआ है। अतः इन सभी भिन्न भाषाई शब्दों के प्रयोग से गीत में कोड-मिश्रण के साथ-साथ बहुभाषिकता की स्थिति का बोध होता है। ग़ौरतलब है कि 'पियासे' शब्द को हिंदी भाषा के शब्द 'प्यासा' का निम्न कोड रूप कहा जा सकता है। इसी क्रम में कुछ अन्य शब्दों के निम्न कोड रूपों का भी यहाँ प्रयोग हुआ है। यथा- 'बैसाग', 'थिर', 'मरिचा', 'लेइके' तथा 'खाइके' आदि। इन शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'बैशाख', 'स्थिर', 'मरिच', 'लेके/ लेकर' तथा 'खाके/ खाकर' होगा। भाषा में निम्न कोड के शब्दों के प्रयोग से भाषाद्वैत की प्रवृत्ति का बोध होता है। यह स्थिति प्रमुख रूप से ग्रामीण परिवेश में अशिक्षित समाज द्वारा भाषा-प्रयोग के कारण उत्पन्न हुई है। इसके अलावा उक्त गीत की पंक्तियों में विभिन्न क्षेत्र की प्रयुक्तियों का भी प्रयोग हुआ है। उदाहरणतः 'चैत्र', 'बैसाग' आदि हिंदू वर्ष के अनुसार महीनों के नाम हैं तथा 'नून', 'मरिचा', 'कुंदरी' तथा 'खीरा' आदि को खाद्य विषयक प्रयुक्तियों में शामिल किया जा सकता है। इसी क्रम में वाक्य-स्तर पर देखा जाए तो गीत में कुछ शब्दों पर विशेष बल देने हेतु उन्हें वाक्य-संरचना के नियत स्थान से हटाकर वाक्य के प्रारंभ में कर्ता के स्थान पर अथवा कर्म के स्थान पर लिखा गया है। इससे टॉपिकीकरण की स्थिति उत्पन्न हुई है। जैसे- 'नून मरिचा लेइके धुक्लि बारीरे दया' पंक्ति में 'धुक्लि' क्रिया को सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना के अनुसार वाक्य के अंत में होना चाहिए लेकिन इसे कर्म के स्थान पर लिखा गया है। इसी तरह से 'बारीरे' शब्द को वाक्य के प्रारंभ में होना चाहिए। कुलमिलाकर इस वाक्य को सादरी की सामान्य वाक्य-संरचना 'कर्ता+कर्म+क्रिया' के अनुसार 'बारीरे दिया नून मरिचा लेइके धुक्लि' के रूप में लिखना उपयुक्त होगा।

2. "शिशिरे कि फूटे फूल बिना बरिषणे
   बचने कि माने मन बिना दरषणे।
   किबा हाड़ि किबा डोम पीड़िते मजिल मोन,
   मिशाई धोनी कोरिशो रोदन

भाबिले कि होइबो एखोन।

तुमि तोरु आमि लता

बांधिये राखबो एथा

जाउ देखि कोथा जाबे

आमाके छाड़ियेहे।

एक खिलि पान दिये आशा दिये राखले,

आवै बोली हे श्याम,

बृथा गो निशि, जाईग रहलि।"[4]

चाय जनगोष्ठी में ऋतु परिवर्तन पर आधारित बारहमासा के झुमुर गीत बड़े आकर्षक और मनमोहक ढंग से गाये जाते हैं। इन झुमुर गीतों में बारहों मास में ऋतु परिवर्तन के साथ ही पेड़-पौधे, जीव-जंतु और मानव मन में आये बदलावों को स्थान दिया गया है। प्रकृति की हरियाली सहज ही मानव-मन के साथ ही पक्षियों, जीवों को आकर्षित कर सभी में प्रेम, संवेदना और सकारात्मकता का संचार करती है। वहीं इसके विपरीत पतझड़ के मौसम में मन में कई बार विरक्ति का भाव जागृत होने लगता है। चाय जनगोष्ठी में बारहमासा झुमुर के अंतर्गत आषाढ़िया झुमुर, चैताली झुमुर, भादरिया झुमुर आदि प्रमुख हैं। उपर्युक्त गीत की पंक्तियाँ चाय जनगोष्ठी में 'आषाढ़िया झुमुर' के रूप में प्रचलित हैं जो प्रमुखतः आषाढ़ के महीने में गाया जाता है। इस गीत का भाव यह है कि वर्षा के समय मेघ के गरजने से प्रकृति के साथ ही मानव मन में भी असीम संभावनाएँ जन्म लेती हैं। हम देखते हैं कि वर्षा काल में पेड़-पौधे नयी कोमल पत्तियों और फूलों से आच्छादित रहते हैं। इस समय नदी-सरोवर सभी भरे-पूरे होते हैं। खेती हेतु उपयुक्त वातावरण मिलता है। वहीं शिशिर ऋतु के आगमन से प्रकृति में चारों तरफ सूखापन छा जाता है। वर्षा के अभाव में फूलों का खिलना बंद हो जाता है और पेड़ों की पत्तियाँ झड़ने लगती हैं। ऐसे में मनुष्य का अंतर्मन भी विचलित होने लगता है। अतः इन दोनों ही ऋतुओं के माध्यम से प्रेम के संयोग और वियोग पक्ष को चित्रित करने का प्रयास किया गया है। प्रेम, जाति-वर्ग का भेद नहीं मानता है। प्रेम सभी बंधनों को तोड़कर उन्मुक्त गगन में विचरण करता है किंतु जब प्रेमी अपनी प्रेमिका से दूर होता है तो वह वियोग की अवस्था प्रेमिका के लिए असह्य प्रतीत होती है। विरह की अग्नि में वह पूरी रात जगती रहती है। वह प्रेम में आजीवन साहचर्य के द्वारा अपने प्रेम की सार्थकता और पूर्णता को सिद्ध करना चाहती है। इसीलिए वह अपने प्रेमी को विशाल तरुवर कहती है और स्वयं को लता की भाँति समझती है। जिस

प्रकार लता आश्रय रूपी पाश में पेड़ को बाँधे रखती है तथा उस पेड़ से विच्छेद होने पर बिल्कुल कुम्हलाकर निर्जीव हो जाती है। उसी प्रकार प्रेमिका अपने प्रिय को प्रेम पाश में जकड़कर रखना चाहती है। इसी में वह अपने प्रेम की पूर्णता मानती है। अपने प्रिय से एक पल का विच्छेद भी उसके लिए असह्य है। कुलमिलाकर, गीत में प्रकृति के तत्वों के माध्यम से मानव रूप को रूपायित किया गया है। ध्यातव्य है कि चाय जनगोष्ठी में 'पान' की पत्ती को अत्यंत शुभ माना जाता है। यहाँ तक कि असम में किसी भी शुभ कार्य के आरंभ के साथ ही, आतिथ्य, निमंत्रण, पर्व-त्योहार आदि अनेक सांस्कृतिक अवसरों पर 'ताम्बुल-पान' अर्थात् कच्ची सुपारी और पान का पत्ता अतिथियों के समक्ष रखना अत्यंत आवश्यक होता है। इसीलिए गीत में भी 'पान' का उल्लेख सांस्कृतिक प्रतीक की अभिव्यक्ति के साथ ही प्रकृति की महत्ता को रेखांकित करता है।

समाजभाषिक पद्धति से उक्त गीत का विश्लेष्ण करने के पश्चात् यह सहज बोध हो जाता है कि इसमें कई भाषाओं के शब्दों का मिश्रण हुआ है। जैसे- 'बिना', 'माने', 'मन', 'फूल' आदि हिंदी के तथा 'लता', 'आशा' आदि संस्कृत के शब्द हैं। इसके अलावा बांग्ला तथा असमिया भाषा के भी शब्दों का प्रयोग हुआ है। यथा- 'बरिषणे' (बारिश में), 'बचने' (वचन से), 'मिशाई' (झूठा/ व्यर्थ) तथा 'एखोन' (अभी) आदि बांग्ला भाषा के शब्द हैं और 'किबा' (क्या) तथा 'भाबिले' (सोचा) ये असमिया भाषा के शब्द हैं। इसके साथ ही कुछ ऐसे शब्दों का भी प्रयोग देखा गया है जो बांग्ला के अतिरिक्त असमिया भाषा में भी समान रूप से व्यवहृत होते हैं। उदाहरणतः 'कि' (क्या), 'फूटे' (खिलना), 'कोरिशो' (कर रहे हो) आदि तथा 'रहलि' शब्द प्रमुख रूप से भोजपुरी का है जिसका अर्थ 'रही थी' है। इस तरह सादरी भाषा के गीत में संस्कृत, हिंदी, भोजपुरी, बांग्ला, असमिया आदि भाषाओं के शब्दों के प्रयोग से कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति का पता चलता है। इसी क्रम में गीत की भाषा पर ग़ौर करने पर यह भी देखने को मिलता है कि इसमें भाषा के निम्न कोड रूप वाले शब्द भी प्रयुक्त हुए हैं। यथा- 'दरषणे', 'पीड़िते', 'होईबो' तथा 'जाईग' आदि उल्लेखनीय हैं। इन शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'दर्शने', 'पिरिते', 'होबे' तथा 'जाग' है। भाषा में इस तरह के निम्न कोड के शब्दों का प्रयोग प्रमुख रूप से ग्रामीण परिवेश व शिक्षा की कमी के कारण होता है। अतः इससे भाषाद्वैत की विशेषता का बोध होता है। इसके साथ ही कुछ शब्दों में आंचलिकता के प्रभावस्वरूप भाषाई विकल्पन की स्थिति स्पष्टतः दिखाई देती है। जैसे- गीत में प्रयुक्त 'रोदन' शब्द का उच्चारण हिंदी में 'रूदन' किया जाता है किंतु लिखित रूप में इसमें असमिया की 'ঔ' (ओ) ध्वनि प्रयुक्त हुई है जिसका उच्चारण हिंदी की 'उ' ध्वनि की तरह होता है। इसी तरह से 'तोरु' शब्द वास्तव में संस्कृत की 'तरु' अर्थात् तरुवर का ही सादरी रूप है जो

प्रमुख रूप से एक ओकारांत भाषा है। इसके अतिरिक्त उक्त गीत में विभिन्न क्षेत्रों की प्रयुक्तियों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे- 'तोरु', 'लता' तथा 'पान' ये सभी वनस्पति विज्ञान विषयक तथा 'हाड़ि', 'डोम' आदि समाजशास्त्र से संबंधित जाति विषयक प्रयुक्तियाँ हैं। वाक्य के स्तर पर देखा जाए तो गीत की कुछ पंक्तियाँ बांग्ला की हैं जो कोड-अंतरण की विशेषता को दर्शाती हैं। यथा- 'बांधिये राखबो एथा' तथा 'जाउ देखि कोथा जाबे' ये दोनों ही पंक्तियाँ बांग्ला भाषा की हैं जो सादरी भाषा के गीत में प्रयुक्त हुई हैं। इसी तरह से कुछ पंक्तियों में कुछ विशेष शब्दों पर बल देने के उद्देश्य से सादरी भाषा की सामान्य वाक्य संरचना के नियत स्थान से उन्हें स्थानांतरित किया गया है जिससे टॉपिकीकरण की स्थिति उत्पन्न हुई है। उदाहरणतः कुछ वाक्यों को देख सकते हैं- 'शिशिरे कि फूटे फूल बिना बरिषणे', 'बचने कि माने मन बिना दरषणे', 'किबा हाड़ि किबा डोम पीड़िते मजिल मोन', 'मिशाई धोनी कोरिशो रोदन', 'भाबिले कि होइबो एखोन' तथा 'बांधिये राखबो एथा' आदि प्रमुख हैं। इनमें पहली पंक्ति में 'फूटे' क्रिया बल देने के लिए उसे कर्म के स्थान पर रखा गया है। इसी तरह से दूसरी पंक्ति में 'माने', तीसरी पंक्ति में 'मोजिल', चौथी पंक्ति में 'कोरिशो' क्रिया पर ज़ोर देने के लिए वाक्य में कर्म के स्थान पर रख दिया गया है। इसी क्रम में पाँचवी और छठी पंक्ति में क्रमशः 'भाबिले' और 'बांधिये' क्रिया पर बल देने के उद्देश्य से उसे वाक्य में कर्ता के स्थान पर रखा गया है। इन वाक्यों को सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना (कर्ता+कर्म+क्रिया) के अनुसार क्रमशः 'शिशिरे बिना बरिषणे कि फूल फूटे', 'बचने बिना दरषणे कि मन माने', 'किबा हाड़ि किबा डोम पीड़िते मोन मजिल', 'मिशाई धोनी रोदन कोरिशो', 'भाबिले एखोन कि होइबो' तथा 'एथा बांधिये राखबो' के रूप में लिखना उपयुक्त होगा।

* ***व्रत संबंधी गीत***

चाय जनगोष्ठी में प्रचलित विभिन्न व्रत-अनुष्ठानों के विधिवत आयोजन के दौरान अनेक गीत गाये जाते हैं। इन गीतों में देव-देवी के महात्म्य के वर्णन के साथ ही आराध्य की विशेष अनुकंपा और मंगलमय जीवन की कामना की जाती है। इसके अतिरिक्त इन व्रत गीतों में सामाजिक मान्यताओं तथा अन्य विविध प्रसंगों का भी उद्घाटन होता है। ऐसे ही कुछ गीतों को यहाँ उद्धृत किया जा रहा है-

1. "आखोड़ा बोंदोना कोरि सोरोसोती
   माई ग' बोली
   आखोड़ा बोंदोना ब्रज नारी

मदने झुमइर लागल भारी

मूरे लेलाई गामोछा

कांधे लेलाई मादोली

बहू-बेटी ग' सोबेई लेलाई घेरी

मदने झुमइर लागल भारी।

भादों का एकादशी

कोरोम गाड़ाइलो राति

गोपीन सोबे नाचन हाँसा जोड़ी

मदने झुमइर लागल भारी"[5]

उपर्युक्त पंक्तियाँ चाय जनगोष्ठी के जातीय पर्व 'करम' के दौरान झुमुर नृत्य के प्रारंभ में गायी जाती हैं। दरअसल, भाद्र महीने की एकादशी तिथि को आयोजित किये जाने वाले करम पर्व में करम देवता की कथा के समापन के पश्चात् इस समाज के सभी लोग झुमुर गीत गाते हुए पूरी रात नृत्य करते हैं। इस समाज में झुमुर अथवा झुमइर के आखड़ा (नृत्य का प्रांगण) के प्रारंभ में ढोल, मादल, नागरा (नगाड़ा), ताल आदि लोकवाद्यों को बजाते हुए देवी सरस्वती का नाम स्मरण किया जाता है। प्रस्तुत गीत की पंक्तियों में करम देवता के उपास्य सभी युवतियों को ब्रज की नारी अथवा गोपी कहा गया है। ये सभी करम व्रती माता सरस्वती का श्रद्धापूर्वक वंदन करते हुए झुमुर गीत प्रारंभ करती हैं और एकत्रित होकर नृत्य करती हैं। ग़ौरतलब है कि चाय जनगोष्ठी में बच्चों से लेकर बूढ़े, नौजवान आदि सभी एक साथ करम पूजा में भाग लेते हैं तथा झुमुर गीत गाते हुए नृत्य करते हैं। इसीलिए ऐसे सामूहिक आस्था और एकता के मनोरम दृश्य का उल्लेख करते हुए गीत में श्रीकृष्ण को 'मदन' कहकर संबोधित किया गया है साथ ही इतनी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के नृत्य प्रदर्शन के माध्यम से ईश्वरीय अनुकंपा की प्राप्ति की कामना की गयी है। नृत्य के दौरान कुछ पुरुष अपने सिर में गमछा बांधकर तथा कंधे पर मादल, ढोल आदि वाद्ययंत्रों को रखकर उन्हें पारंपरिक धुन पर बजाते हैं। और, विशेष रूप से व्रती महिलाएँ करम डाल को घेरकर नृत्य करती हैं। इसीलिए गीत की अंतिम पंक्तियों में व्रती महिलाओं द्वारा किये गये नृत्य को हंसों के जोड़े का नृत्य कहा गया है, जो सहज ही मन को आकर्षित कर लेता है। गीत की समस्त पंक्तियों के अवलोकन से चाय श्रमिकों के जीवन की तमाम कुंठाओं और दुखों के बावजूद ईश्वर के प्रति उनकी आस्था, जीवन के प्रति उत्साह, सकारात्मकता और जिजीविषा की प्रतीति होती है।

समाजभाषिक दृष्टि से अध्ययन करने पर उपर्युक्त गीत की पंक्तियों में अलग-अलग भाषाओं के शब्दों के प्रयोग कारण कोड-मिश्रण के साथ ही बहुभाषिकता की स्थिति का भी बोध होता है। उदाहरण के तौर पर देखें तो 'बोंदोना' शब्द असमिया तथा बांग्ला भाषा में प्रयुक्त होने वाला शब्द है। इसके लिए हिंदी में 'वंदना' शब्द प्रचलित है। इसके अलावा 'माई' (माँ), 'लागल' (लगा) ये दोनों ही शब्द भोजपुरी के हैं। 'नारी' संस्कृत शब्द है। 'भारी', 'जोड़ी' आदि हिंदी शब्द हैं। 'मूरे' (सर में), 'गामोछा' (गमछा), 'राति' (रात) आदि असमिया शब्द हैं। 'सोबेई' बांग्ला भाषा शब्द है। अतः सादरी भाषा के गीत की इन पंक्तियों में हिंदी, असमिया, बांग्ला तथा भोजपुरी के शब्दों के मिश्रण के कारण कोड-मिश्रण की स्थिति उत्पन्न हुई है। इसके साथ ही 'सोरोसोती', 'सोबे', 'हाँसा', 'लेलाई' आदि शब्दों का निम्न कोड के रूप में प्रयोग हुआ है। इन शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'सरस्वती', 'सोबाई' (बांग्ला), 'हंस' (हिंदी)/ हांस (बांग्ला), 'लेलई' होगा। अतः यहाँ भाषाद्वैत की प्रवृति है। 'कोरोम' शब्द मूल रूप से 'करम' है किंतु असमिया के प्रभावस्वरूप इसका उच्चारण 'कोरोम' किया जाता है। यह असमिया सादरी की एक प्रमुख विशिष्टता है जिसे भाषा विकल्पन कहा जा सकता है। इसके अलावा गीत की पंक्तियों में विभिन्न क्षेत्र की प्रयुक्तियों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे- 'मूर' (सिर), 'कांध' (कंधा) ये शरीर रचना विज्ञान संबंधी प्रयुक्तियाँ हैं। इसी तरह से 'बहू', 'बेटी' रिश्ते-नाते की संबंधसूचक प्रयुक्तियाँ हैं तथा 'मदन', 'गोपीन', 'ब्रज', 'सोरोसोती' ये सभी हिंदू धर्म विषयक प्रयुक्तियाँ हैं। 'आखोड़ा', 'बोंदोना', 'कोरोम' को चाय जनगोष्ठी की सांस्कृतिक शब्दावली से संबंधित प्रयुक्तियाँ कहना उपयुक्त होगा। गीत में वाक्य के किसी एक शब्द पर विशेष बल देने के लिए उसे सामान्य वाक्य-संरचना के नियत स्थान से हटाकर वाक्य के प्रारंभ में लिखा गया है जो मूलतः टॉपिकीकरण की प्रवृत्ति को दर्शाता है। उदाहरणतः 'मदने झुमइर लागल भारी', 'मूरे लेलाई गामोछा', 'कांधे लेलाई मादोली', 'बहू-बेटी ग' सोबेई लेलाई घेरी', 'कोरोम गाड़ाइलो राति' तथा 'गोपीन सोबे नाचन हाँसा जोड़ी' आदि पंक्तियों को देख सकते हैं। पहले वाक्य में 'लागल' क्रिया को स्थानांतरित कर वाक्य में कर्म के स्थान पर रखा गया है जबकि उसे वाक्य के अंत में होना चाहिए। इसी तरह से अन्य वाक्यों में 'लेलाई', 'गाड़ाइलो', 'नाचन' क्रिया को वाक्य के अंत में रखकर कर्म के स्थान पर रखा गया है। इन्हें असमिया सादरी की सामान्य वाक्य-व्यवस्था के अनुसार क्रमशः 'मदने भारी झुमइर लागल', 'मूरे गामोछा लेलाई', 'कांधे मादोली लेलाई', 'बहू-बेटी ग' सोबेई घेरी लेलाई', 'राति कोरोम गाड़ाइलो' तथा 'सोबे गोपीन हाँसा जोड़ी नाचन' के रूप में होना चाहिए।

2. “ काशी झिंगा फूटि गेल

ओगो आशा मोर लागि गेल

दिन पहर देखलि डहर

हाईरे ननदि मोर

मोर भाया आतय लेनिहार...

भाया मोर आवतय

संदेशा आनतय

चूड़ी, शाखा नयने काजर

हाईरे ननदि मोर

ठुमकी चलबय नइहर।

शुन राधा बिनंदिया

ओगो केइसे बांधब हिया

चूड़ी, शाखा नयने काजर

हाईरे ननदि मोर

ठुमकी चलबय नइहर।

किया काशी फूटि गेल

ओगो आशा मोर टूटी गेल

दिन पहर देखली डहर

हाईरे ननदि मोर

मोर भाया नाई आलय घर।”[6]

चाय जनगोष्ठी में करम पर्व के दौरान केवल आध्यात्मिक गीतों को ही नहीं गाया जाता है अपितु जीवन के विविध प्रसंगों से संबंधित अनेक झुमुर गीत गाये जाते हैं। उपर्युक्त गीत भी इसी तरह का करम गीत है जिसमें जीवन की विसंगतियों को चित्रित करने का प्रयास किया गया है। दरअसल, चाय श्रमिक समाज में लड़कियाँ जैसे ही थोड़ी बड़ी होती हैं तो उन्हें किसी दूसरे घर में छोटे बच्चों को सँभालने अथवा घर की साफ-सफाई के लिए भेज दिया जाता है ताकि दो पैसे की आमदनी हो सके। इसके बाद जैसे ही वे बागानों में श्रम

करने योग्य हो जाती हैं तो चाय उद्योग से जुड़कर पत्ती तोड़ने के कार्य में संलग्न हो जाती हैं। ऐसे में देखा जाए तो इन लड़कियों का जीवन अत्यंत विषम परिस्थितियों से घिरा रहता है जिसमें बचपन के खेल-कूद और लड़कपन को स्थान ही नहीं मिलता और चाय श्रमिकों की ये बालिकाएँ असमय ही बड़ी हो जाती हैं। उपर्युक्त गीत की पंक्तियों में चाय श्रमिक समाज की युवतियों के विवाहोपरांत के जीवन का उल्लेख किया गया है। चाय जनगोष्ठी में करम पर्व के समय दूर देश में काम कर रहे सभी लोग अपने घर आते हैं। उस समय विवाहित बेटी भी ससुराल से मायके जाती है। प्रस्तुत गीत में विवाहित बेटी के बहुत दिनों के अन्तराल पर अपने माता-पिता तथा अन्य परिजनों से मिलने को लेकर उत्साह को दर्शाया गया है। विवाहिता युवती के मन में काशी और झींगा के फूलों को खिलता देखकर जैसे आशा और उत्साह की लहरें उठने लगी हैं। वह अपनी ननद से कहती है कि दिन के हर प्रहर में अपने भाई के आने की राह देख रही हूँ। वह मेरे माता-पिता का संदेश लेकर यहाँ आएगा और मुझे सप्रेम नईहर (मायके) ले जाएगा। इसीलिए मैं चूड़ी, शाखा (शंख की चूड़ी) पहनकर, आँखों में काजल लगाकर और तमाम श्रृंगार करके ख़ुशी से इतराते व ठुमकते हुए अपने घर जाऊँगी। लेकिन जब आर्थिक तंगी से मजबूर उसका भाई चाहकर भी विदा कराने के लिए ससुराल नहीं आता है तो उसकी सभी आशाएँ निराशा में तब्दील हो जाती हैं और सारे उत्साह एक पल में टूटकर बिखर जाते हैं। यह स्थिति उसके लिए अत्यंत हृदय-विदारक होती है। वह करुण स्वर में अपनी ननद से कहती है कि उसने पूरा दिन अपने भाई की राह देखने में बिता दिया किंतु उसका भाई घर लेने के लिए नहीं आया।

उपर्युक्त गीत की पंक्तियों का समाजभाषिक दृष्टि से विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि सादरी भाषा में प्रचलित इस गीत में हिंदी, भोजपुरी, बांग्ला आदि भाषाओं के सामान्य शब्दों के साथ ही कुछ निम्न कोड के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। इससे गीत की भाषा में कोड-मिश्रण के साथ-साथ भाषाद्वैत और बहुभाषिकता की प्रवृत्ति का स्पष्टतः बोध होता है। उदाहरण के तौर पर 'आशा', 'संदेशा', 'नयन' जैसे संस्कृतनिष्ठ हिंदी के मानक शब्द हैं। इसके अलावा 'फूटि' (खिलना), 'शुन' (सुनो), 'शाखा' (शंख की चूड़ी) ये सभी शब्द बांग्ला भाषा में प्रयुक्त होते हैं। ध्यातव्य है कि 'फूटि' शब्द का प्रचलन असमिया भाषा में भी 'फूलों के खिलने' के अर्थ में होता है तथा 'हिया' मूलतः असमिया भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है 'हृदय'। इसके अलावा 'देखली' (देखा), 'बाँधब' (बांधूंगी) ये दोनों भोजपुरी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं जो आधार भाषा सादरी के वाक्यों के अंतर्गत प्रयुक्त होकर कोड-मिश्रण की स्थिति को दर्शाते हैं। इन शब्दों के अतिरिक्त 'गेल', 'पहर', 'केइसे', 'काजर', 'भाया' जैसे शब्द गीत में निम्न कोड के रूप में प्रयुक्त हुए हैं।

दरअसल, यह भाषिक स्थिति मिश्रित समाज, ग्रामीण परिवेश और अल्प-शिक्षित व अशिक्षित समाज के कारण उत्पन्न हुई है। इन शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'गईल' (भोजपुरी) अथवा 'गेलो' (बांग्ला) तथा 'प्रहर', 'कईसे', 'काजल' और 'भईया' होना चाहिए। गीत में विभिन्न क्षेत्रों की प्रयुक्तियों का भी प्रयोग हुआ है। यथा- 'काशी', 'झींगा' प्रकृति विषयक, 'ननदी' (ननद), 'भाया' (भईया) आदि संबंधसूचक तथा 'चूड़ी-शाखा' और 'काजर' को सौंदर्य प्रसाधनों से संबंधित प्रयुक्तियों के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है। गीत के विभिन्न वाक्यों में कुछ विशेष शब्दों पर बल देने के लिए उन शब्दों को भाषिक संरचना के सामान्य नियमों के अनुरूप न रखकर उनके नियत स्थान से आगे अथवा पीछे लिखा गया है। अर्थात् वाक्य की सामान्य संरचना में अवयवों का क्रमभंग किया गया है। जैसे- 'दिन पहर देखलि डहर', 'मोर भाया आतय लेनिहार', 'भाया मोर आवतय', 'ठुमकी चलबय नइहर' तथा 'ओगो केइसे बांधब हिया' आदि पंक्तियों को देखा जा सकता है। इनमें पहली पंक्ति में 'देखलि' तथा दूसरी पंक्ति में 'आतय' क्रिया को वाक्यांत में न रखकर कर्म के स्थान पर रखा गया है। इसी तरह से तीसरी पंक्ति में 'मोर' कर्ता वक्यारंभ में होना चाहिए जबकि इसे कर्म के स्थान पर रखा गया है। चौथी और पाँचवी पंक्ति में 'चलबय' तथा 'बांधब' क्रिया को कर्म के स्थान पर रख दिया गया है। इन्हें सादरी भाषा की सामान्य भाषिक व्यवस्था के अनुरूप क्रमशः'दिन पहर डहर देखलि', 'मोर भाया लेनिहार आतय', 'मोर भाया आवतय', 'नइहर ठुमकी चलबय' तथा 'ओगो केइसे हिया बांधब' के रूप में होना चाहिए।

3. "गौ बाटे गौ बाटे जाबो
   कोन बाटे जे लोग पाबो
   ओई छोड़ीकेर मुसकी हासी
   हृदय में बासाई लेबो
   गौ बाटे गौ बाटे जाबो
   कोन बाटे जे लोग पाबो
   ओई छोड़ाकेर मुसकी हासी
   उरमाले बांधे लेबो
   एक सौ टाका, दुई सौ टाका
   तीन सौ टाकार शाड़ीटा
   ओई शाड़ीटा फाटे गेले

जातय छोड़ीके इस्टाइल टा

एक सौ टाका, दुई सौ टाका

तीन सौ टाकार घड़ीटा

ओई घड़ीटा भांगे गेले

जातय छोड़ाके इस्टाइल टा

ओगो माघ-फागुने

छोड़ी पड़ाइ होइलो आगुने माघ-फागुने

ओगो टाका सेरे

बेगुन बिकेलो बाजारे टाका सेरे

आरे ढोल लेबो मान्दरा लेबो

लेबो आरो बाजना

जोन छोड़ीरा देखते आसबेक

ताले-ताले नाचाबो

गान गावा तोर जेमोन-तेमोन

ढोल बाजा तोर सोभे ना

हामरा जोदि घुराई बोलबो

तोदर मुराद राइखब ना

आरे छि छि छि साभेना

चेपा नाके लुलुक पिंधा कालो छोड़ीर साभेना

आरे छि छि छि साभेना

होरु डाड़ाइ लोंगपेंट पिंधा कालो छोड़ार साभेना"[7]

प्रस्तुत गीत को टूचु पर्व के दौरान गाया जाता है। एक ओर इस पर्व में प्रचलित गीतों में टूचु देवी की आराधना, सतीत्व और त्याग का वर्णन मिलता है तो दूसरी ओर युवक-युवतियों से संबंधित हास-परिहास के गीतों का भी खूब प्रचलन है। उपर्युक्त गीत टूचु पर्व में विशेषकर युवा वर्ग के बीच प्रचलित है। इस गीत में युवक-युवतियाँ आपस में हंसी-ठिठोली करते हुए एक-दूसरे के प्रति प्रेम भाव को व्यक्त करते हैं। उक्त गीत में

ग्रामीण परिवेश का चित्र प्रस्तुत किया गया है तथा संवाद शैली में इसे रचा गया है। इस गीत में युवक कहता है कि 'गौ- बाट' अर्थात् गायों के चलने की पतली राह से गुजरते हुए अपनी प्रेमिका से मिलकर उसकी सुंदर मुस्कान को अपने हृदय में सहेजना चाहता है। ठीक इसी तरह से युवती के मन में भी अपने प्रेमी से मिलकर उसके हर्ष और मुस्कराहट को अपने अंतर्मन में समेट लेने की इच्छा जागृत होती है। गीत में आगे की पंक्तियों में युवक अपनी प्रेमिका के वस्त्र के संदर्भ में परिहास करते हुए कहता है कि दो-तीन सौ की यह साड़ी यदि फट गयी तो उसकी सारी साज-सज्जा ख़राब हो जाएगी। इसीलिए प्रत्युत्तर में युवती भी उस युवक के घड़ी की ओर संकेत करते हुए कहती है कि यदि उसकी सौ-दो सौ की घड़ी टूट जाए तो उसके सौंदर्य (स्टाइल) में भी कमी आएगी। इसी तरह से आगे लोकवाद्यों को बजाने तथा लंबे पजामे (वस्त्र) को लेकर भी युवती परिहास करती है। प्रत्युत्तर में युवक पूरे उत्साह से कहता है कि ढोल, मंदरा आदि को बजाते हुए वह युवती को नचाएगा। बार-बार व्यंग्यात्मक जवाब पाकर युवक खीझ जाता है और कहता है कि काली वर्ण की लड़की की चिपटी नाक में पहना गया आभूषण तनिक भी शोभाकारक प्रतीत नहीं होता। इसी तरह एक-दूसरे की खिंचाई करने की शैली में यह पूरा गीत रचा गया है। कुलमिलाकर, इस गीत में चाय जनगोष्ठी समाज के सामान्य जीवन-शैली के साथ ही ग्रामीण परिवेश के सहज वातावरण का उल्लेख मिलता है। हास-परिहास में उल्लिखित विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से दैनिक जीवन की प्राथमिकताओं का बोध होता है। गीत में काले रंग को लेकर एक-दूसरे पर व्यंग्य करना दरअसल समाज में व्याप्त रंगभेद को दर्शाता है।

समाजभाषिक दृष्टि से विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि उक्त गीत में भिन्न भाषाई शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे- 'गौ', 'हृदय' आदि संस्कृतनिष्ठ हिंदी के तथा 'स्टाइल', 'लोंगपेंट' आदि अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त 'हासी' (हंसी), 'बांधे' (बाँधकर), 'टाका' (पैसा), 'शाड़ी' (साड़ी), 'फाटे' (फटा), 'भांगे' (टूटा), 'आगुन' (आग), 'बेगुन' (बैंगन), 'बाजारे' (बाजार में), 'कालो' (काला) आदि प्रमुख रूप से बांग्ला भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं तथा 'लोग' (मिलना), 'हरु' (छोटा), 'पिंधा' (पहना) आदि असमिया भाषा के शब्द हैं। ध्यातव्य है कि 'बाजारे' शब्द मूलतः फारसी शब्द 'बाज़ार' का ही बांग्ला रूप है। गीत में कुछ ऐसे भी शब्दों का प्रयोग हुआ है जो असमिया के साथ-साथ बांग्ला भाषा में भी प्रचलित हैं। यथा- 'जाबो' (जाऊँगा), 'पाबो' (मिलूँगा), 'जोदि' (यदि) आदि। इसके अलावा 'मुसकी' और 'मुराद' क्रमशः भोजपुरी तथा अरबी भाषा के शब्द भी गीत में प्रयुक्त हुए हैं। 'बाटे' शब्द असमिया, बांग्ला तथा भोजपुरी आदि भाषाओं में 'रास्ते' के अर्थ में प्रयुक्त होने वाला शब्द है। कुलमिलाकर, सादरी भाषा में प्रचलित

इस गीत में असमिया, बांग्ला, भोजपुरी, हिंदी, अंग्रेजी तथा अरबी-फारसी के शब्दों के प्रयोग से कोड-मिश्रण के साथ ही बहुभाषिकता की प्रवृत्ति भी स्पष्टतः दृष्टव्य है। इसके अतिरिक्त यथास्थान भाषा के निम्न तथा उच्च कोड के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। उदाहरणतः 'बोलबो' बांग्ला भाषा में उच्च कोड का शब्द है। ग्रामीण अथवा चलित बांग्ला में इस शब्द के लिए 'कोइबो' का भी प्रयोग होता है। इसी क्रम में 'कोन', 'बासाई', 'राइखब' तथा 'साभेना' आदि निम्न कोड के शब्द हैं। इन शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'कौन', 'बसाई', 'राखब' (भोजपुरी) अथवा 'राखबो' (बांग्ला) तथा 'शोभेना' होगा। अतः भाषा के ये दोनों उच्च और निम्न कोड के शब्द एक साथ प्रयुक्त होकर भाषाद्वैत की स्थिति को दर्शाते हैं। इसके साथ ही 'गान गावा तोर जेमोन-तेमोन' यह संपूर्ण पंक्ति बांग्ला भाषा की है जो आधार भाषा सादरी के वाक्यों के साथ प्रयुक्त होकर कोड-अंतरण की प्रवृत्ति का बोध कराती है। गीत में कई स्थानों पर पुनरुक्तियों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे- 'ताले-ताले', 'छि छि छि' तथा 'जेमोन-तेमोन' आदि में क्रमशः पूर्ण और आंशिक पुनरुक्ति है। प्रोक्ति के स्तर पर देखा जाए तो युवक और युवती के बीच हुए संवाद शैली के इस गीत में गत्यात्मक संलाप की स्थिति है। इसी क्रम में इस गीत में विभिन्न क्षेत्र की प्रयुक्तियों का भी प्रयोग दृष्टव्य है। उदाहरणतः 'सौ', 'दो सौ', 'तीन सौ' ये संख्यासूचक प्रयुक्तियाँ हैं। इसके अलावा 'माघ', 'फागुन' हिंदू धर्म के अनुसार महीने के नाम से संबंधित प्रयुक्तियाँ हैं तथा 'ढोल', 'मांदरा' आदि लोकवाद्य विषयक प्रयुक्तियाँ हैं। उक्त गीत की भाषा पर ग़ौर किया जाए तो इसकी कई पंक्तियों में किसी विशेष शब्द पर बल देने के उद्देश्य से उसे सामान्य वाक्य-संरचना के नियत स्थान से स्थानांतरित कर दिया गया है जो मूलतः टॉपिकीकरण की स्थिति को दर्शाता है। जैसे- 'जातय छोड़ीके इस्टाइल टा', 'जातय छोड़ाके इस्टाइल टा', 'छोड़ी पड़ाइ होइलो आगुने माघ-फागुने', 'बेगुन बिकेलो बाजारे टाका सेरे', 'लेबो आरो बाजना', 'गान गावा तोर जेमोन-तेमोन', 'चेपा नाके लुलुक पिंधा कालो छोड़ीर साभेना' तथा 'होरु डाड़ाइ लोंगपेंट पिंधा कालो छोड़ार साभेना' आदि पंक्तियों में टॉपिकीकरण की स्थिति सहज ही दृष्टव्य है। इन पंक्तियों में क्रमशः 'जातय', 'माघ-फागुने', 'बिकेलो', 'लेबो', 'तोर', 'कालो छोड़ीर' तथा 'कालो छोड़ार' आदि शब्दों को इनके नियत स्थान से स्थानांतरित कर दिया गया है। इन्हें सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-व्यवस्था के अनुसार क्रमशः 'छोड़ीके इस्टाइल टा जातय', 'छोड़ाके इस्टाइल टा जातय', 'छोड़ी माघ-फागुने आगुने पड़ाइ होइलो', 'बाजारे बेगुन टाका सेरे बिकेलो', 'आरो बाजना लेबो', 'तोर गान गावा जेमोन-तेमोन', 'कालो छोड़ीर चेपा नाके लुलुक पिंधा साभेना' तथा 'कालो छोड़ार होरु डाड़ाइ लोंगपेंट पिंधा साभेना' के रूप में होना चाहिए।

4. “भाला अहीरे...

काहाँ जे गरजलाई बाघ-बाघिनी रे अहीरा रे

काहाँ जे गरजलाई षाड़ रे

काहाँ जे गरजलाई राजाकेर बेटा हो

थर-थर काँपत नगर

अहीरा थर-थर काँपत नगर

भाला अहीरा...

बने-बने गरजलाई बाघ-बाघिनी रे अहीरा

नाला दहे गरजलाई षाड़ रे

दरबारे गरजलाई राजाकेर बेटा हो

थर-थर काँपत नगर

अहीरा थर-थर काँपत नगर

भाला अहीरा...

किया लागिन गरजलाई बाघ-बाघिनी रे अहीरा

किया लागिन गरजलाई षाड़ रे

किया लागिन गरजलाई राजाकेर बेटा हो

थर-थर काँपत नगर अहीरा...

शिकार लागिन गरजलाई बाघ-बाघिनी रे अहीरा

घाँस लागिन गरजलाई षाड़ रे

खाजना लागिन गरजलाई राजाकेर बेटा हो

थर-थर काँपत नगर”[8]

चाय जनगोष्ठी में प्रचलित प्रस्तुत गीत साँहराई पर्व के दौरान गाया जाता है। इसे गरया पूजा भी कहा जाता है। कार्तिक महीने की अमावस्या के दिन गौ-पूजन करने की रीति है। इसी दिन गाय-बैलों से संबंधित अनेक लोकगीत गाये जाते हैं। इन गीतों को जाहली गीत कहा जाता है। इस गीत में अहीर जाति का उल्लेख किया गया है जो प्रमुख रूप से गाय-बैलों के रख-रखाव तथा दूध के व्यापार से संबद्ध होते हैं। ग़ौरतलब है कि

चाय जनगोष्ठी में प्रचलित अधिकांशतः जाहली गीतों में अहीर जाति का उल्लेख मिलता है। बहरहाल, उपर्युक्त गीत में बाघ-बाघिन, साँड तथा राजकुमार तीनों के माध्यम से अलग-अलग रुचि तथा आवश्यताओं की ओर संकेत किया गया है। बाघ-बाघिन वन में रहकर गरजते हैं तथा अरण्य के अन्य प्राणियों का शिकार कर अपना जीवन निर्वाह करते हैं लेकिन साँड घास-पत्तियों पर आश्रित रहकर मानव जीवन के कर्म में सहायक होता है। इसी तरह से राजा का पुत्र अर्थात् राजकुमार अत्यंत समृद्ध परिवार में रहकर भी उसकी रुचि धन के प्रति ही रहती है। कुलमिलाकर देखा जाए तो गाय, बैल, साँड आदि जीव घास-फूस खाकर ही तृप्त हो जाते हैं तथा हर क्षण मानव हित के लिए तत्पर रहते हैं। इसीलिए हिंदू धर्म में गाय-बैलों की पूजा-अर्चना का विधान है।

समाजभाषिक दृष्टि से इस गीत का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि इस गीत में प्रयुक्त 'गरजलाई' शब्द मूल रूप से हिंदी के 'गरजना' शब्द का ही सादरी रूप है। इसके अलावा 'नाला', 'नगर', 'थर-थर' आदि हिंदी के ही मानक शब्द हैं। हिंदी के अतिरिक्त भोजपुरी, असमिया तथा बांग्ला आदि भाषाओं के शब्दों का भी प्रयोग इस गीत में दृष्टव्य है। यथा- 'बाघ-बाघिनी' तथा 'षाड़' ये दोनों ही शब्द असमिया और बांग्ला में क्रमशः 'बाघ-बाघिन' तथा 'साँड' के अर्थ में प्रचलित हैं। 'षाड़' को बांग्ला में 'षाड़ गोरु' भी कहते हैं। इसके अलावा 'काँपत' भोजपुरी भाषा में प्रयुक्त होने वाला शब्द है तथा 'शिकार', 'दरबार' मूल रूप से फारसी और 'खजाना' अरबी शब्द हैं। इस तरह गीत में भिन्न भाषाई शब्दों के प्रयोग से कोड-मिश्रण के साथ ही बहुभाषिकता की विशेषता का बोध होता है। इसी क्रम में गीत में कुछ निम्न कोड के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है जो प्रमुख रूप से ग्रामीण परिवेश के प्रभावस्वरूप प्रयुक्त हुए हैं। जैसे- 'काँहा', 'किया', 'घाँस', 'खाजना' आदि शब्द निम्न कोड के हैं जिनके लिए क्रमशः 'कहाँ', 'क्या', 'घास' तथा 'खजाना' शब्द मानक रूप में प्रचलित हैं। पुनरुक्तियों के स्तर पर देखा जाए तो 'थर-थर' तथा 'बने-बने' में एक ही शब्द की दो आवृत्ति हुई है। अतः यहाँ पूर्ण पुनरुक्ति की स्थिति है जिनका प्रयोग क्रमशः 'अधिकता' और 'प्रत्येक' के अर्थ में हुआ है। इसके साथ ही इस गीत की अधिकांश पंक्तियों में कुछ शब्दों पर अतिरिक्त ज़ोर देने के लिए उनको वाक्य में उनके सामान्य नियत स्थान से स्थानांतरित कर दिया गया है जो टॉपिकीकरण की विशेषता को दर्शाता है। उदाहरणतः 'काहाँ जे गरजलाई बाघ-बाघिनी रे अहीरा रे', 'काहाँ जे गरजलाई षाड़ रे', 'काहाँ जे गरजलाई राजाकेर बेटा हो', 'थर-थर काँपत नगर', 'बने-बने गरजलाई बाघ-बाघिनी रे अहीरा', 'नाला दहे गरजलाई षाड़ रे', 'दरबारे गरजलाई राजाकेर बेटा हो, 'किया लागिन गरजलाई बाघ-बाघिनी रे अहीरा', 'किया लागिन गरजलाई षाड़ रे', 'किया लागिन गरजलाई राजाकेर बेटा हो', 'शिकार लागिन गरजलाई बाघ-बाघिनी रे

अहीरा', 'घाँस लागिन गरजलाई षाड़ रे', तथा 'खाजना लागिन गरजलाई राजाकेर बेटा हो' आदि पंक्तियों को देख सकते हैं। इन सभी पंक्तियों में 'गरजलाई' क्रिया को वाक्यांत में होना चाहिए। सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना 'कर्ता+कर्म+क्रिया' के अनुसार क्रमशः 'अहीरा रे बाघ-बाघिनी रे काहाँ जे गरजलाई', 'षाड़ रे काहाँ जे गरजलाई', 'राजाकेर बेटा हो काहाँ जे गरजलाई', 'नगर थर-थर काँपत', 'अहीरा रे बाघ-बाघिनी बने-बने गरजलाई', 'षाड़ रे नाला दहे जे गरजलाई', 'राजाकेर बेटा हो दरबारे गरजलाई', 'अहीरा रे बाघ-बाघिनी रे किया लागिन गरजलाई', 'षाड़ रे किया लागिन गरजलाई', 'राजाकेर बेटा हो किया लागिन गरजलाई', 'अहीरा रे बाघ-बाघिनी रे शिकार लागिन गरजलाई', 'षाड़ रे घाँस लागिन गरजलाई', 'राजाकेर बेटा हो खाजना लागिन गरजलाई' के रूप में होना चाहिए।

* ***जाति संबंधी गीत***

इस श्रेणी में चाय जनगोष्ठी के उन लोकगीतों को शामिल किया गया है जो विशेष रूप से किसी एक ही जाति में प्रचलित हैं। इन गीतों में जाति विशेष की मान्यताओं, मूल्यों और जीवन शैली का उल्लेख मिलता है। ऐसे कुछ जातिगत गीत दृष्टव्य हैं-

1. "राम बिना सीता बिना सूना
   भइगे अयोध्या राम बिना
   कोशिला माता रोवत हउवे राम बिना
   दशरथ राजा तलफत हउवे राम बिना
   परजा मने सब रोउत हउवे राम बिना
   सबझन मिलके छेंकत हउवे राम बिना
   राम बिना, सीता बिना सूना
   भइगे रे सारा संसार"[9]

उपर्युक्त गीत की पंक्तियाँ छत्तीसगढ़ से असम आये चाय श्रमिक समाज में अधिक प्रचलित हैं। ये पंक्तियाँ रामायण के उस प्रसंग से संबंधित हैं जब श्री राम, लक्ष्मण और देवी सीता अयोध्या से वन गमन हेतु प्रस्थान करते हैं। उस दौरान समस्त अयोध्यावासी हताश हो जाते हैं। राम आज भी भारतीय समाज में एक आदर्श व्यक्ति, राजा, पुत्र, पति, भाई आदि विभिन्न रूपों में अनुकरणीय हैं। उनके युग में न केवल अयोध्यावासी

अपितु संसार के सभी प्राणी उनके प्रति श्रद्धा और भक्ति का भाव रखते थे। इसीलिए राम और सीता के वनवास चले जाने पर समूची अयोध्या सूनी हो जाती है। माता कौशल्या दिन-रात विलाप करती हैं और पिता दशरथ के मन में प्रति क्षण पश्चाताप और ग्लानि का भाव भर जाता है और अपने प्रिय पुत्र के विरह में तड़पते हुए उनका स्वर्गवास हो जाता है। राम के वनवास की खबर सुनकर अयोध्या की पूरी प्रजा विलाप करने लगती है। सभी मिलकर राम और सीता को अनुनय-विनय कर रोकने का प्रयास करते हैं परन्तु राम अपने पिता के वचन का मान रखने के लिए चौदह वर्ष तक सारी राजसी सुख-सुविधाओं को त्यागकर वनवासी का जीवन व्यतीत करते हैं। दरअसल, गीत की उपर्युक्त पंक्तियों के माध्यम से एक ओर मानवीय भावनाओं और कमजोरियों को दर्शाया गया है तो दूसरी ओर जीवन में कर्तव्य-बोध की प्राथमिकता को प्रस्तुत किया गया है।

गीत की पंक्तियों पर प्रमुखतः भोजपुरी भाषा का प्रभाव अधिक है। इसमें 'माता', 'बिना', 'सब', 'संसार' जैसे संस्कृतनिष्ठ हिंदी के शब्दों का व्यवहार हुआ है। इसके अलावा 'कोशिला', 'तलफत', 'परजा' आदि शब्द निम्न कोड के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। इन शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'कौशल्या', 'तड़पत' तथा 'प्रजा' प्रचलित है। लोकगीत का प्रचलन ग्रामीण परिवेश के अशिक्षित अवाम में होने के कारण इस तरह के निम्न कोड के शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक है। अतः भिन्न भाषा के शब्दों के साथ ही भाषा के निम्न कोड के प्रयोग से गीत में कोड-मिश्रण, बहुभाषिकता तथा भाषाद्वैत की प्रवृत्ति का बोध होता है। इस गीत की प्रथम पंक्ति पर ग़ौर किया जाए तो यह पूरी पंक्ति ही हिंदी भाषा की है, यथा- 'राम बिना सीता बिना सूना'; जो सादरी भाषा के वाक्यों के साथ प्रयुक्त हुई है। इससे कोड-अंतरण की प्रवृत्ति स्पष्टतः दिखाई देती है। प्रयुक्तियों के स्तर पर देखें तो 'राम', 'सीता, 'कोशिला', 'दशरथ' तथा 'अयोध्या' आदि शब्द रामायण के हैं। अतः इन्हें हिंदू धर्म संबंधी प्रयुक्तियों में शामिल किया जा सकता है। इसके अलावा गीत की पंक्तियों में कुछ शब्दों पर विशेष बल देने के उद्देश्य से उन्हें वाक्य में उनके नियत स्थान से स्थानांतरित कर दिया गया है जिससे टॉपिकीकरण की स्थिति उत्पन्न हुई है। उदाहरणतः 'भइगे अयोध्या राम बिना', 'कोशिला माता रोवत हउवे राम बिना', 'दशरथ राजा तलफत हउवे राम बिना', 'परजा मने सब रोउत हउवे राम बिना' तथा 'सबझन मिलके छेंकत हउवे राम बिना' आदि पंक्तियों को देख सकते हैं। इन पंक्तियों को भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना (कर्ता+कर्म+क्रिया) के अनुसार क्रमशः 'राम बिना अयोध्या भइगे', 'कोशिला माता राम बिना रोवत हउवे', 'दशरथ राजा राम बिना तलफत हउवे', 'परजा मने सब राम बिना रोउत हउवे' तथा 'सबझन मिलके राम बिना छेंकत हउवे' के रूप में होना चाहिए। पहले वाक्य में 'भइगे' शब्द को स्थानांतरित कर वाक्य के आरंभ में रखा

गया है जबकि उसे क्रिया के रूप में वाक्य के अंत में होना चाहिए। इसी तरह से अन्य वाक्यों में 'हउवे' क्रिया को वाक्य में अंत में रखकर कर्म के स्थान पर रखा गया है।

2. "जोने-जोने बाघमुड़ा तोने आहे लोहार बुड़ा
   आमि एकि जाति के लोहार
   काँधे कोइला के भार
   लसकी चललेई गलवार
   जाति के कर्मकार जाति लोहा-लंकर पीटोती
   हामि एकि जाति के कर्मकार
   काँधे कोइला के भार
   पीछो दिगे थाकबो तलवार
   लोहा के लोहा धोरि
   लोहा के लोहा ए पिटी
   एहो देख गो साम लोहरा के काम
   नाके चुवे गो लोरे-झोरे घाम
   सोनारीकेर सौ जाला
   लोहरा के एकेई गाला
   लोहा देखि गो बोले बाप-बाप
   लोहा हाई रे हाई कार पालाए पोड़ेछि गो आज
   दांया हाते हातुड़ी बांया हाते कुटासी
   कामार बूढ़ा चिपे-चाप वार
   कामारिन बेचे हासुवार"[10]

यह गीत चाय जनगोष्ठी के कर्मकार समुदाय का पारंपरिक गीत है। दरअसल, कर्मकार जाति को 'लोहार' अथवा 'कमार या कामार' कहकर भी संबोधित किया जाता है। यह समुदाय कई उप-जातियों में विभक्त है। ध्यातव्य है कि प्राकृतिक संसाधनों से लोहे का आविष्कार करने वाले समूह को लोहार कहा जाता है। उसी लोहे को गलाने की प्रक्रिया से जुड़े लोगों को गलवार तथा गले हुए लोहे को ठोक-पीट कर उससे

अस्त्र-शस्त्र बनाने वाले समूह को कामार नाम से अभिहित किया गया। उपर्युक्त गीत में इन तीनों ही समूहों का उल्लेख मिलता है जिसके आधार पर यह बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि चाय जनगोष्ठी में केवल जातीय स्तर पर कर्म का विभाजन नहीं है बल्कि किसी एक जाति विशेष के अंतर्गत भी समाज स्तरीकृत है। इस गीत के प्रारंभ में ही रांची के 'बाघमुंडा' अंचल का जिक्र किया गया है। असल में चाय जनगोष्ठी के लोहार जाति के लोग पश्चिम बंगाल और झारखंड से आव्रजित हैं। इसीलिए गीत में बाघमुंडा से आये लोगों का उल्लेख करते हुए उन्हें लोहार कहा गया है। उस अंचल से आये सभी चाय श्रमिक लोहार जाति के हैं तथा इसी समुदाय का एक समूह अपने कंधे पर कोयले के भार को ढोकर ले जाता है और फिर उसी में लोहे को गलाकर नाना उपकरणों का निर्माण करते हैं। लोहे से लोहे को पीट-पीटकर नये औजारों के निर्माण में ये दिन-रात श्रमरत रहते हैं। इनके प्रहार से लोहा जैसा सबसे कठोर धातु भी परास्त होकर इनके मनोनुकूल आकार में परिवर्तित हो जाता है। इस दौरान इनका पूरा शरीर पसीने के भींग जाता है और नाक से पसीने की धार बहने लगती है। इसी समाज में जो कमार समुदाय के लोग हैं उनकी कार्य दक्षता का विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि ये दाएं हाथ में हथौड़ा और बाएं हाथ में कूटने का उपकरण लेकर कौशलपूर्वक हंसुआ, चिमटा, दाव आदि औजारों को बनाते हैं तथा उनकी पत्नी अर्थात् 'कमारिन' उन औजारों को बाजार ले जाकर बिक्री करती है। यही उनके जीविका का साधन है। कुलमिलाकर, इस गीत के जरिये कर्मकार जाति के लोगों के कठिन परिश्रम और जिजीविषा का सटीक चित्रण प्रस्तुत हुआ है। असम के चाय बागानों की हरियाली ऐसे ही तमाम श्रमिकों की कार्यकुशलता और अथक परिश्रम का परिणाम है।

उपर्युक्त गीत का समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन के उपरांत यह कहा जा सकता है कि उक्त गीत की पंक्तियों में यथास्थान भिन्न भाषाई शब्दों का प्रयोग हुआ है। उदाहरणतः 'भार', 'काम', 'बोले', 'आज', 'दांया', 'बांया', 'वार' आदि सभी हिंदी भाषा के मानक शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसके साथ ही 'दिगे' (तरफ), 'नाके' (नाक में), 'हाते' (हाथ में) ये सभी शब्द बांग्ला के हैं। 'काँधे' (कंधे में), 'घाम' (पसीना), 'कार' (किसका) ये सभी असमिया तथा बांग्ला दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। 'चुवे' (टपकना) मूल रूप से भोजपुरी भाषा में प्रयुक्त होने वाला शब्द है। ऐसे भिन्न भाषाई शब्दों के प्रयोग से कोड-मिश्रण के साथ ही बहुभाषिकता की प्रवृत्ति का बोध होता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों पर भाषा के उच्च तथा निम्न कोड के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे- 'पोड़ेछि' बांग्ला भाषा में उच्च कोड अर्थात् मानक शब्द है जिसका अर्थ 'पड़ना' है। इसी क्रम में 'जोने', 'तोने', 'बुड़ा', 'कोइला', 'पालाए' आदि सभी शब्द निम्न कोड

के हैं। इनका मानक रूप क्रमशः 'जवने', 'तवने', 'बूढ़ा', 'कोयला' तथा 'पाल्लाए' है। अतः इससे भाषाद्वैत की स्थिति का बोध होता है। असमिया के प्रभाव स्वरूप 'लसकी', 'लोरो' तथा 'पीटोती' शब्दों के उच्चारण में परिवर्तन हुआ है। इसके लिए 'लचकी', 'लोर' (आँसू) तथा 'पिटती' शब्द उपयुक्त होगा। इसे भाषाई विकल्पन की प्रवृति कहा जा सकता है। प्रयुक्तियों के स्तर पर देखा जाए तो इस गीत में अलग-अलग क्षेत्र की प्रयुक्तियों का प्रयोग हुआ है। यथा- 'हातुड़ी'(हथौड़ा), 'कुटासी' (कूटने का औजार), 'तलवार', 'हसुवार' (हसुवा) आदि औजार विषयक प्रयुक्तियाँ हैं। इसके अलावा 'कांध', 'हात', 'नाक' आदि शरीर रचना विज्ञान से संबंधित, 'लोहा', 'कोइला' आदि प्राकृतिक संसाधन विषयक और 'लोहार', 'सोनारी', 'कर्मकार' तथा 'कमार' आदि जाति विषयक प्रयुक्तियों का प्रयोग हुआ है। गीत में कई स्थानों पर पुनरुक्तियों का भी प्रयोग हुआ है। उदाहरणतः 'जोने-जोने', 'बाप-बाप' तथा 'लोरो-झोरो' आदि। इनमें प्रमुख रूप से 'जोने-जोने', 'बाप-बाप' में एक ही शब्द की दो बार आवृति हुई है जिससे पूर्ण पुनरुक्ति का बोध होता है तो वहीं 'लोरो-झोरो' में आंशिक पुनरुक्ति है क्योंकि इसमें 'लोरो' का अर्थ है 'आँसू' जो भोजपुरी भाषा का शब्द है किंतु 'झोर' शब्द का कोई अर्थ नहीं है। इसके साथ ही गीत की कुछ पंक्तियों में कुछ शब्दों के नियत स्थानों में परिवर्तन किया गया है। ऐसा किसी एक विशेष शब्द पर बल देने के लिए किया गया है। जैसे- 'पीछो दिगे थाकबो तलवार', 'नाके चुवे गो लोरे-झोरे घाम', 'लोहा देखि गो बोले बाप-बाप', 'लोहा हाई रे हाई कार पालाए पोड़ेछि गो आज' तथा 'कामारिन बेचे हासुवार' आदि में पंक्तियों पर यदि ग़ौर किया जाए तो यह सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना (कर्ता+कर्म+क्रिया) के अनुरूप व्यवस्थित नहीं है। इन पंक्तियों की सामान्य संरचना क्रमशः 'पीछो दिगे तलवार थाकबो', 'लोरे-झोरे घाम गो नाके चुवे', 'लोहा देखि गो बाप-बाप बोले', 'लोहा हाई रे हाई आज कार पालाए पोड़ेछि गो' तथा 'कामारिन हासुवार बेचे' होगी। पहले वाक्य में 'थाकबो' शब्द को स्थानांतरित कर वाक्य में कर्म के स्थान पर रखा गया है जबकि उसे क्रिया के रूप में वाक्य के अंत में होना चाहिए। इसी तरह से अन्य वाक्यों में क्रमशः 'चुवे', 'बोले', 'पोड़ेछि गो' तथा 'बेचे' आदि क्रिया के रूप का स्थान परिवर्तन किया गया है। इन सभी क्रिया-रूपों को वाक्य के अंत होना चाहिए। 'सोनारीकेर सौ जाला/ लोहरा के एकेई गाला' गीत की ये पंक्तियाँ हिंदी की लोकोक्ति 'सौ सुनार का एक लोहार का' का सादरी भाषा में प्रचलित रूप है।

* ***श्रमगीत***

चाय जनगोष्ठी में प्रचलित अनेक ऐसे गीत हैं जो खेत अथवा बागान में श्रम करने के दौरान श्रमिकों द्वारा गाये जाते हैं। विशेष रूप से चाय जनगोष्ठी के झुमुर गीतों में श्रमिक जीवन के अत्यंत कठोर परिश्रम की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है। इन गीतों में कृषि जीवन की विसगतियों के साथ-साथ दैनिक जीवन-शैली की चुनौतियों का भी उल्लेख मिलता है। ऐसे कुछ श्रमगीतों की पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं-

1. "आषाढ़-सावन मासे
   घरे-घरे रोपाभे
   अइसन भादोर कइसन रोपाई
   सभे सजनी लोग
   सावन-भादोर आसि गेलो
   भला अइसन भादोर कइसन रोपाई"[11]

उपर्युक्त पंक्तियाँ रोपनी से संबंधित हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि आषाढ़ और सावन का महीना धान की बुवाई के लिए अनुकूल समय होता है। लेकिन वहीं भाद्र के महीने में अत्यधिक वर्षा होती है तो ऐसे में कृषि का काम अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो जाता है। वर्षा का जल खेतों में इतना भर जाता है कि उस दौरान नये बीजों की रोपाई करना कृषक के लिए अधिक श्रमसाध्य होता है। कई बार तो लगातार बारिश के चलते फसल पूरी तरह से बर्बाद हो जाती है। इसीलिए कृषक मौसम के बदलते तेवर और फसलों के बचाव को लेकर चिंताग्रस्त रहते हैं।

गीत की इन पंक्तियों का समाजभाषिक दृष्टि से विश्लेषण करने के उपरांत यह ज्ञात होता है कि इसमें बांग्ला, भोजपुरी तथा हिंदी भाषा के कुछ शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे- 'मासे' (महीने में), 'भादोर' (भाद्र का), 'आसि' (आना), 'गेलो' (गया) आदि बांग्ला के शब्द हैं तथा 'अइसन' (ऐसा), 'कइसन' (कैसा) ये दोनों ही भोजपुरी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। इसी तरह से 'रोपाई', 'लोग', 'भला' जैसे शब्द प्रमुख रूप से हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं। अतः आधार भाषा सादरी में प्रचलित इस गीत में भिन्न भाषाई शब्दों के प्रयोग से कोड-मिश्रण के साथ ही बहुभाषिकता की स्थिति भी सहज दृष्टव्य है। इसी क्रम में देखा जाए तो 'सभे' शब्द भाषा के निम्न कोड का सूचक है। यह मूल रूप से हिंदी के 'सभी' शब्द का परिवर्तित अथवा ग्रामीण रूप कह

सकते हैं। यह भाषाद्वैत की विशेषता को दर्शाता है। उक्त गीत में 'घरे-घरे' का प्रयोग प्रत्येक घर के संदर्भ में हुआ है। इसीलिए 'घर' शब्द को दो बार आवृति हुई है। इससे पूर्ण पुनरुक्ति का बोध होता है। प्रयुक्ति के स्तर पर देखा जाए तो 'आषाढ़', 'सावन' तथा 'भादो' ये तीनों ही हिंदू मान्यता के अनुसार महीने के नाम से संबंधित प्रयुक्तियाँ हैं।

2. "कि बोलिबो ब्रिटिशेर कोथा
   बोलिले जे गो लागे बेथा
   मोजदूर चालान कोरिलो आसामे
   रेलगाड़ी गो चोले घने-घने
   देश छाड़े आइलि आसाम
   भूलोलि गो देशेर नाम
   आसाम देशे खुलोलि बागान
   बानाई देलि हामरा सोनार आसाम
   जंगल-झाड़ काटोलि
   ढुटू मुढ़ा गाढ़ोली
   गाढ़ा गिला कोरोली सोमान
   बानाई देलि हामरा सोनार आसाम"[12]

चाय जनगोष्ठी में प्रचलित प्रस्तुत पंक्तियाँ असम की पृष्ठभूमि से संबंधित हैं। इन पंक्तियों में चाय मजदूरों को असम लाये जाने के पश्चात् उनके साथ हुए शोषण व अमानवीय व्यवहार का उल्लेख किया गया है। दरअसल, चाय श्रमिकों के सामने असम की एक ऐसी छवि प्रस्तुत की गयी कि खुशहाल जीवन जीने की आशा में ये असम आ गये तथा इनमें भी जो मजदूर नहीं आना चाहते थे उन्हें विवश करके बागानों में काम करने के लिए लाया गया। इस गीत में श्रमिकों के लाये जाने की स्थिति को बखूबी उद्घाटित किया गया है कि किस प्रकार समय-समय पर रेलगाड़ी से इनका चालान किया गया। असम आने के पश्चात् ये मजदूर अपनी मूल जन्मभूमि को भूल गये तथा असम की मिट्टी को अपनी जननी मानकर इस राज्य के प्रति आजीवन समर्पित हो गये। तमाम विपरीत परिस्थितियों में असम आकर असम के जंगलों को काटकर उसे चाय उत्पादन हेतु अनुकूल

बनाया तथा दिन-रात की मजदूरी करके असम में वृहत् स्तर पर चाय उद्योग की स्थापना की। वास्तव में असम की हरियाली इन्हीं मजदूरों के परिश्रम और निष्ठा का परिणाम है।

उक्त गीत की आधार भाषा सादरी है किंतु इसमें भिन्न भाषाई शब्दों के प्रयोग के कारण कोड-मिश्रण के साथ ही बहुभाषिकता की स्थिति भी सहज ही दिखायी देती है। उदाहरणतः 'बेथा' (दर्द), 'छाड़े' (छोड़कर), 'बानाई' (बनाया), 'गाढ़ा' (गड्ढा), 'चोले' (चलना) आदि सभी शब्द बांग्ला भाषा में प्रयुक्त होते हैं। इसके अलावा 'चालान', 'देश', 'जंगल', 'झाड़' आदि सभी हिंदी के मानक शब्दों का यहाँ प्रयोग हुआ है। इसी क्रम में 'ब्रिटिशेर' (ब्रिटिश की) तथा 'मोजदूर' (मजदूर) मूलतः अंग्रेजी और अरबी शब्द हैं किंतु इन दोनों ही शब्दों के सादरी भाषा में परिवर्तित रूप का प्रयोग यहाँ हुआ है जो प्रमुख रूप से भाषाई विकल्पन की विशेषता का सूचक है। इसी तरह से इस गीत में कुछ ऐसे भी शब्दों का प्रयोग हुआ है जो असमिया तथा बांग्ला दोनों ही भाषाओं में व्यवहृत होते हैं। जैसे- 'कि' (क्या), 'कोथा' (बात), 'लागे' (लगना) आदि। इसके साथ ही बांग्ला के कुछ शब्दों का निम्न कोड रूप इस गीत में प्रयुक्त हुआ है। यथा- 'बोलिले' (बोला), 'बोलिबो' (कहेगा) आदि। बांग्ला में इन शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'बोलले/ बोललो', 'बोलबो' आदि है किंतु बांग्ला में ही प्रयुक्त होने वाला 'सोमान' शब्द असल में हिंदी के 'सामान' शब्द का परिवर्तित रूप है। ठीक ऐसे ही 'भूलोलि' शब्द मुख्य रूप से हिंदी के 'भूलना' शब्द का सादरी में परिवर्तित रूप है। अतः ये सभी शब्द भाषाद्वैत की प्रवृत्ति का बोध कराते हैं। उक्त गीत में 'मोजदूर', 'बागान' आदि चाय प्रबंधन क्षेत्र की प्रयुक्तियों का प्रयोग हुआ है। अधिकता के अर्थ-संदर्भ में 'घने' शब्द की दो बार आवृति होने से पूर्ण पुनरुक्ति की स्थिति उत्पन्न हुई है। इसके अतिरिक्त वाक्य के स्तर पर विभिन्न शब्दों पर विशेष बल देने के लिए तथा गीत की लयात्मकता को बनाये रखने के उद्देश्य से वाक्य व्यवस्था के अंतर्गत शब्दों को उनके नियत स्थान से स्थानांतरित कर दिया गया है। उदाहरण के तौर पर 'कि बोलिबो ब्रिटिशेर कोथा', 'मोजदूर चालान कोरिलो आसामे', 'रेलगाड़ी गो चोले घने-घने', 'देश छाड़े आइलि आसाम', 'भूलोलि गो देशेर नाम', 'आसाम देशे खुलोलि बागान', 'बानाई देलि हामरा सोनार' आसाम' तथा 'गाढ़ा गिला कोरोली सोमान' आदि पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं। यहाँ पहली पंक्ति में 'बोलिबो' क्रिया पर बल देने के लिए उसे वाक्यांत में न रखकर, वक्यारंभ में रखा गया है। इसी तरह 'कोरिलो', 'चोले', 'आइलि', भूलोलि', 'खुलोलि', 'देलि', 'कोरोलि' क्रिया को वाक्य-व्यवस्था के नियमानुसार उनके नियत स्थान को परिवर्तित किया गया है जबकि इन्हें वाक्य के अंत में रखा जाना चाहिए। अतः इन सभी पंक्तियों को आधार भाषा सादरी की सामान्य वाक्य-संरचना के अनुसार क्रमशः 'ब्रिटिशेर कोथा कि बोलिबो', 'आसामे

मोजदूर चालान कोरिलो', 'रेलगाड़ी गो घने-घने चोले', 'देश छाड़े आसाम आइलि', 'देशेर नाम भूलोलि गो', 'आसाम देशे बागान खुलोलि', 'हामरा सोनार आसाम बानाई देलि' तथा 'गाढ़ा गिला सोमान कोरोली' के रूप में होना चाहिए।

3. "पाका खाताए लेखालि नाम
   रे लम्पटीया श्याम
   फाँकि दिये चोलालि आसाम।
   डिपूघरे मोरि तोरि
   उठाइले तेरेने कोरि
   हुगली शहरे देखली आकाश
   मोने कोरि आसाम जाबो
   जोड़ा पांखा टानाबो
   साहेब दिलो कोदालेर काम।
   दीना उदया भणे आकाले पेटेर टाने
   टिपिक-टिपिक पड़े घाम।"[13]

उपर्युक्त गीत उस समय से संबंधित है जब भारत के विभिन्न प्रदेशों से श्रमिकों को असम लाया गया था। उन दिनों श्रमिकों को बहला-फुसलाकर असम लाने के पश्चात् तरह-तरह के शर्तों व अनुबंधों पर उनकी स्वीकृति ले ली जाती थी। विडंबना तो यह थी कि उन श्रमिकों को पशु की तरह रेलगाड़ी में ठूंस-ठूंसकर असम लाया जा रहा था। उस दौरान सफर में न ही अन्न का एक दाना दिया जा रहा था और न ही एक बूँद जल। इतना ही नहीं उनके साथ मार-पीट व तमाम शारीरिक और मानसिक शोषण किया जाता था। कितने ही ऐसे श्रमिक थे जो खुली हवा, रौशनी और जल के अभाव तथा अत्याचार से सफर में ही अपना दम तोड़ देते थे। ट्रेन में जिस तरह से श्रमिकों को कैद करके लाया जा रहा था उसके पीछे एक ही वजह थी कि उन्हें मार्ग और स्थान का बोध न हो। इस गीत में हुगली शहर अर्थात् कलकत्ता का उल्लेख किया गया है जहाँ लाकर उन श्रमिकों का विवरण दर्ज किया जाता था। कई बार ये श्रमिक अपने भाग्य तथा नियति को दोष देते हुए कहते हैं कि आरामदायक काम और समृद्ध जीवन पाने की प्रत्याशा में ये श्रमिक असम आने को राजी हुए किंतु असम लाकर उनसे जंगल की ऊंची-नीची जमीन को समतल करने जैसा अत्यंत दुष्कर कार्य करने हेतु विवश किया

गया। ऐसे में शर्ताधीन होकर खाली पेट श्रम करने और खून-पसीने के बदले अत्याचार सहना ही जैसे चाय श्रमिकों की नियति बन गयी थी।

समाजभाषिक दृष्टि से गीत की पंक्तियों का विश्लेष्ण करने के पश्चात् यह सहज ज्ञात हो जाता है कि गीत की आधार भाषा सादरी में अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों का मिश्रण हुआ है। जैसे- 'पाका' (संदर्भगत अर्थ- पक्का), 'खाताए' (खाते में), 'दिये' (देकर), 'कोदालेर' (कुदाल का), 'दिलो' (दिया), 'पेटेर' (पेट का) आदि बांग्ला भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है। यहाँ 'खाताए' मूलतः संस्कृत के 'खाता' शब्द में 'ए' प्रत्यय जोड़े जाने के कारण इसे बांग्ला शब्द कहा जाएगा। इसके अतिरिक्त 'फाँकि' (धोखा) असमिया शब्द है। गीत के अंश में कुछ ऐसे शब्दों का भी प्रयोग हुआ है जो असमिया के साथ-साथ बांग्ला भाषा में प्रयुक्त होते हैं। उदाहरणतः 'टाने' (कष्ट में), 'घाम' अर्थात् 'पसीना' आदि। इसी क्रम में भोजपुरी तथा संस्कृतनिष्ठ हिंदी के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। यथा- 'देखली' अर्थात् 'देखा' भोजपुरी भाषा में व्यवहृत शब्द है तथा 'आकाश', 'जोड़ा' आदि मूलतः हिंदी के मानक शब्द के रूप में व्यवहार किये जाते हैं। ध्यातव्य है कि 'लम्पटीया' शब्द संस्कृत के 'लम्पट' शब्द में 'इया' प्रत्यय लगाने से बना है। इसी तरह से 'शहरे' फारसी शब्द 'शहर' का सादरी रूप है। अतः ये सभी भिन्न भाषाई शब्द यहाँ एक साथ प्रयुक्त होकर कोड-मिश्रण के साथ-साथ बहुभाषिकता की विशेषता को दर्शाते हैं। इसके अलावा गीत में कई स्थानों पर भाषा के निम्न कोड के शब्दों का भी प्रयोग देखा जा सकता है। जैसे- 'डिपूघरे', 'तेरेने', 'साहेब', 'पांखा' तथा 'आकाले' आदि। इन सभी शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'डिपूगढ़े' (झारखंड के हजारीबाग में स्थित छोटा-सा अंचल), 'ट्रेने' (ट्रेन में), 'साहब', 'पंखा' तथा 'अकाले' है। भाषा में ऐसे निम्न कोड के शब्दों का प्रयोग प्रमुख रूप से अशिक्षित समाज व ग्रामीण परिवेश के कारण होता है। यह भाषाई विशिष्टता भाषाद्वैत की स्थिति को दर्शाती है। इतना ही नहीं प्रयुक्तियों के स्तर पर भी क्षेत्र विशेष की शब्दावली का प्रयोग उक्त गीत में हुआ है। जैसे- 'डीपूघरे' (डीपूगढ़े), 'हुगली शहरे' (कलकत्ता) तथा 'आसाम' ये सभी स्थानसूचक प्रयुक्तियाँ हैं। गीत की अंतिम पंक्ति में 'टिपिक-टिपिक घाम' अर्थात् 'पसीने का टपकना' जैसे वाक्यांश का प्रयोग हुआ है। इसमें प्रयुक्त 'टिपिक' शब्द को अधिकता के संदर्भ में प्रस्तुत करने हेतु इसका दो बार प्रयोग किया गया है। यह पूर्ण पुनरुक्ति की विशिष्टता का बोध कराता है। इसी क्रम में वाक्य के स्तर पर गीत की कुछ पंक्तियों में कुछ विशेष शब्दों पर बल देने के उद्देश्य से उसे वाक्य-संरचना के नियत स्थान से स्थानांतरित कर दिया गया है जिससे टॉपिकीकरण की स्थिति उत्पन्न हुई है। उदाहरणतः कुछ वाक्य दृष्टव्य हैं- 'पाका खाताए लेखालि नाम', 'फाँकि दिये चोलालि आसाम',

‘उठाइले तेरेने कोरि’, ‘हुगली शहरे देखली आकाश’ तथा ‘साहेब दिलो कोदालेर काम’ आदि। यहाँ पहली पंक्ति में ‘लेखालि’ क्रिया पर बल देने के लिए उसे वाक्यांत में न रखकर कर्म के स्थान पर रखा गया है। इसी तरह ‘चोलालि’, ‘उठाइले’, ‘देखलि’ तथा ‘दिलो’ क्रिया को वाक्य-व्यवस्था के नियमानुसार उनके नियत स्थान को परिवर्तित किया गया है जबकि इन्हें वाक्य के अंत में रखा जाना चाहिए। इन पंक्तियों को सादरी भाषा की सामान्य वाक्य संरचना (कर्ता+कर्म+क्रिया) के अनुसार क्रमशः ‘पाका खाताए नाम लेखालि’, ‘आसाम फाँकि दिये चोलालि’, ‘तेरेने कोरि उठाइले’, ‘हुगली शहरे आकाश देखली’ तथा ‘साहेब कोदालेर काम दिलो’ के रूप में होना चाहिए।

* ***विविध गीत***

इस श्रेणी के अंतर्गत चाय जनगोष्ठी में प्रचलित ऐसे गीतों को शामिल किया गया है जिनमें प्रेम, हास-परिहास, जीवन के विभिन्न प्रसंगों आदि की अभिव्यक्ति हो। ऐसे विविध विषयक गीतों में विशेषकर असम की पृष्ठभूमि को लेकर प्रचलित गीतों के साथ ही स्थान और समय से संबंधित झुमुर गीतों जैसे- ददरिया झुमुर, भिनसरिया झुमुर, झींगाफुलिया झुमुर, टांईर झुमुर आदि को भी शामिल किया जा सकता है। समाजभाषिक दृष्टि से कुछ विविध विषयक गीतों का विश्लेषण यहाँ दृष्टव्य है-

1. “राँची से आलाई गाड़ी
   चइड़ गेलाई ताड़ा ताड़ीरे
   रहि गेलाई छोड़ा-छोड़ी
   एखोन भेलाई बूढ़ा-बूढ़ीरे।
   चोलते-चोलते जीवन भेलाई भारी
   किमोते आसाम हामि छाड़ि।
   आसामके काँचा सोणा
   पाता भेलाई कलि कलि रे
   लोभे लोहा बोहि मारि हायरे हाय
   मोने उठे मनस्ताप
   दिबो नेकि जोले झाप

झाप दिये डूबिये मोरिबो

हाईरे, मोर श्यामके काँहा देखा पाबो।"[14]

चाय श्रमिकों के असम आने बाद पुनः अपनी मातृभूमि को लौटने में अक्षम होने पर उनके मन में खिन्नता का भाव जागृत हुआ। उद्धृत गीत में चाय श्रमिकों की ऐसे ही मनःस्थितियों का उल्लेख मिलता है। इस गीत में रांची से जबरन असम लाये गये श्रमिकों के मन की पीड़ा का वर्णन किया गया है कि किस प्रकार इन नौजवान श्रमिकों को अपने बच्चों को छोड़कर असम राज्य आना पड़ा। असम लाये जाने बाद इनसे दिन-रात मजदूरी करवायी जाती थी। इन मजदूरों को अपने परिजनों से मिलने अपने देश जाने की भी इजाज़त नहीं थी। असम की लोहे जैसी जमीन को चाय उत्पादन हेतु अनुकूल बनाने के लिए उन्हें ब्रिटिशों के शर्ताधीन होकर मजदूरी करनी पड़ी। इससे इनका जीवन बोझिल-सा प्रतीत होने लगा तथा ये स्वयं को निःसहाय समझने लगे। अपने बच्चों से मिलने की आशा में ये श्रमिक बूढ़े हो गये। ऐसी स्थिति में कई बार इन चाय श्रमिकों के मन में आत्महत्या का ख्याल आता है किंतु पानी में डूबकर आत्महत्या कर लेने से इनका जीवन ही समाप्त हो जाएगा और आत्मीय जनों से मिलने की इच्छा और संभावना भी इनकी मृत्यु के साथ दम तोड़ देगी। कुलमिलाकर, गीत के उद्धृत अंश में श्रमिक जीवन की आशा, आकांक्षा, कुंठा, पीड़ा आदि मनोभावों को स्पष्टता से चित्रित किया गया है।

गीत की प्रस्तुत पंक्तियों को समाजभाषिक दृष्टि से विश्लेषित करने पर यह पता चलता है कि इसमें हिंदी, बांग्ला, भोजपुरी, असमिया तथा संस्कृत के कुछ शब्द प्रयुक्त हुए हैं। उदाहरणतः 'गाड़ी', 'भारी' जैसे शब्द मूलतः हिंदी में प्रयुक्त होते हैं। इसके अलावा 'एखोन' (अभी), 'छाड़ि' (छोड़कर), 'काँचा' (कच्चा), 'पाता' (पत्ता), 'लोभे' (लोभ में), 'मारि' (मारना), 'देखा' (दिखाई) आदि बांग्ला भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। इसी क्रम में 'रहि' (छूटना) तथा 'जीवन' क्रमशः भोजपुरी और संस्कृत शब्द हैं साथ ही 'बोहि' शब्द का असमिया भाषा में 'बैठने' के संदर्भ में प्रयोग होता है। अतः ये सभी भिन्न भाषाई शब्द सादरी भाषा के वाक्यों में प्रयुक्त होकर कोड-मिश्रण के साथ ही बहुभाषिकता की प्रवृत्ति को दर्शाते हैं। इसके साथ ही गीत में कुछ निम्न कोड के शब्दों का भी प्रयोग दृष्टव्य है, यथा- 'चैड़', 'सोणा', 'काँहा' आदि। इन सभी शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'चढ़', 'सोना' तथा 'कहाँ' है। ग्रामीण परिवेश में सामान्य जनमानस द्वारा निम्न कोड के शब्दों के प्रयोग से भाषाद्वैत की स्थिति का बोध होता है। गीत के कुछ शब्दों में उच्चारण के स्तर पर भेद होने के कारण भाषाई विकल्पन की स्थिति का पता चलता है। जैसे- 'गेलाई', 'भेलाई' जैसे शब्दों को भोजपुरी से

प्रभावित सादरी के शब्द कह सकते हैं क्योंकि ये शब्द विशेषकर बिहार के मुजफ्फरपुर, मोतिहारी आदि अंचलों में प्रचलित भोजपुरी भाषा के शब्द क्रमशः 'गेलई' (गया), 'भेलई' (हुआ) के लिए व्यवहृत होते हैं। इसी तरह से गीत में पुनरुक्तियों का भी प्रयोग हुआ है। उदाहरणतः 'चोलते-चोलते', 'कलि-कलि' आदि युग्म शब्दों को देख सकते हैं। इनमें एक ही शब्द की दो बार आवृति हुई है जो क्रमशः 'अधिकता' तथा 'प्रत्येक' के संदर्भ में प्रयुक्त हुए हैं। अतः यहाँ पूर्ण पुनरुक्ति की स्थिति है। ठीक इसी प्रकार से प्रयुक्ति के स्तर पर देखा जाए तो इस गीत में विभिन्न क्षेत्र की शब्दावलियों का प्रयोग हुआ है। जैसे- 'राँची', 'आसाम' आदि स्थानसूचक तथा 'पाता', 'कलि' आदि वनस्पति विज्ञान विषयक प्रयुक्तियाँ हैं। ध्यातव्य है कि गीत की आधार भाषा सादरी है किंतु इसमें बांग्ला भाषा के वाक्यों का भी प्रयोग हुआ है। उदाहरणतः गीत की 'मोने उठे मनस्ताप', 'दिबो नेकि जोले झाप' तथा 'झाप दिये डूबिये मोरिबो' आदि पंक्तियों को देख सकते हैं। अतः इस भाषिक प्रवृत्ति से कोड-अंतरण का बोध होता है। इसके अतिरिक्त कुछ वाक्यों में विशेष शब्दों पर ज़ोर देने हेतु उसे वाक्य-व्यवस्था के अंतर्गत नियत स्थान से स्थानांतरित कर दिया जाता है। इससे भाषा में टॉपिकीकरण की स्थिति उत्पन्न होती है। जैसे- 'राँची से आलाई गाड़ी', 'चइड़ गेलाई ताड़ा ताड़ीरे', 'रहि गेलाई छोड़ा-छोड़ी', 'एखोन भेलाई बूढ़ा-बूढ़ीरे', 'चोलते-चोलते जीवन भेलाई भारी', 'किमोते आसाम हामि छाड़ि', 'पाता भेलाई कलि कलि रे', 'मोने उठे मनस्ताप' तथा 'दिबो नेकि जोले झाप' आदि पंक्तियों को देखा जा सकता हैं। इन पंक्तियों को सादरी की सामान्य वाक्य-संरचना (कर्ता+कर्म+क्रिया) के अनुरूप क्रमशः 'राँची से गाड़ी आलाई', 'ताड़ा ताड़ीरे चइड़ गेलाई', 'छोड़ा-छोड़ी रहि गेलाई', 'एखोन बूढ़ा-बूढ़ीरे भेलाई', 'जीवन चोलते-चोलते भारी भेलाई', 'हामि किमोते आसाम छाड़ि', 'कलि कलि रे पाता भेलाई', 'मोने मनस्ताप उठे' तथा 'जोले झाप दिबो नेकि' के रूप में लिखना उपयुक्त होगा। यहाँ पहली पंक्ति में 'आलाई' क्रिया पर बल देने के लिए उसे कर्म के स्थान पर रखा गया है। इसी तरह 'गेलाई', 'भेलाई', 'हामि', 'उठे', 'नेकि' आदि शब्दों को वाक्य-व्यवस्था के नियमानुसार उनके नियत स्थान को परिवर्तित किया गया है जबकि इनमें से 'गेलाई', 'भेलाई', 'उठे', 'नेकि' क्रिया के रूपों को वाक्य के अंत में रखा जाना चाहिए तथा 'हामि' प्रथम पुरुष कर्ता को वाक्य के आरंभ में होना चाहिए।

2. "माये बापे जनम दिलो
   नाबालोके बिबाह दिलो
   श्वसुर घोरे खाटिते नापारि

घूरिये आसलि लोहार खाड़ू

लोहार खाड़ू सेंसिये भांगिली

हाईरे हाईरे श्याम

बिधिर लिखोन कोहिते नापारि,

लोहार खाड़ू सेंसिये भांगिली

हाईरे हाईरे हाय...

नाकोहिले मान जाय,

नाकोहिले लुकेर लाजेते,

हाईरे धनि कि कहिबो तोके,

श्वसुर घोरे खाटिते नापारि

लोहार खाड़ू सेंसिये भांगिली।"[15]

चाय जनगोष्ठी में प्रचलित कुछ गीतों में विभिन्न सामाजिक समस्याओं को भी अभिव्यक्ति मिली है। उपर्युक्त गीत की पंक्तियों में स्त्री-जीवन की विडंबना को बेहद साफगोई से रेखांकित किया गया है। आमतौर पर चाय जनगोष्ठी में अत्यंत कम आयु में ही विवाह कर दिया जाता है। जीवन के जिस पड़ाव में खेल-कूद और अल्हड़पन से उत्साह और उमंग बरक़रार रहता है उस समय इन लड़कियों को विवाह सूत्र में बांधकर पारिवारिक जिम्मेदारियों में उलझा दिया जाता है। ऐसी स्थिति में ये सांसारिक जीवन के मापदंडों को समझने हेतु उतनी परिपक्व नहीं होती हैं। इसीलिए कई बार विवाह-विच्छेद की स्थिति भी सामने आती है। ससुराल से निकाले जाने के बाद इन लड़कियों के लिए पुनः अपने मायके लौटना निराशाजनक होता है। ग़ौरतलब है कि आज भी समाज में विवाह-विच्छेद को अच्छा नहीं माना जाता है। लोग आज भी संबंधों में खटास तथा कुंठा, घुटन भरी जिंदगी जीना विवाह-विच्छेद से बेहतर मानते हैं। ऐसी स्थिति में यदि किसी का संबंध टूट जाए तो इसके लिए सर्वप्रथम समाज स्त्री पर ही लांछन लगाता है। उसके चरित्र को ही प्रश्नों के घेरे में रखकर संबंधों के विघटन की समूची जिम्मेदारी उस स्त्री पर थोप दी जाती है। इसी लोक-लाज के भय को गीत में चित्रित किया गया है। उक्त गीत में 'लोहार खाड़ू' अर्थात् लोहे की चूड़ी का उल्लेख कई बार किया गया है। दरअसल, चाय जनगोष्ठी में लोहे की चूड़ी का विशेष सांस्कृतिक महत्व है। यह चूड़ी सुहाग की प्रतीक है जो विवाह के अवसर पर वर पक्ष द्वारा उपहार में दी जाती है। ऐसी मान्यता है कि यह चूड़ी पति की रक्षा हेतु विवाहिता स्त्री आजीवन धारण करती

है। पति की मृत्यु के उपरान्त ही इसे तोड़ने अथवा खोलने का रिवाज है। इसीलिए इस गीत में कमसीन बालिका द्वारा पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन में कमी होने पर उससे लोहे की चूड़ी वापस ले ली जाती है और परिणय-सूत्र को तोड़कर उसे वापस पिता के घर भेज दिया जाता है।

समाजभाषिक दृष्टि से देखने पर यह ज्ञात होता है कि उद्धृत गीत की आधार भाषा सादरी है किंतु इसमें भिन्न भाषाई शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे- 'मान' संस्कृत का शब्द है तथा 'खाड़ू' (चूड़ी), 'भांगिली' (तोड़ दिया) ये दोनों ही शब्द असमिया भाषा में प्रयुक्त होते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ बांग्ला भाषा के शब्द भी गीत में प्रयुक्त हुए हैं। जैसे- 'दिलो' (दिया), 'घूरिये' (लौटकर), 'आसलि' (आयी/ आया), तथा 'लुकेर' (दूसरे का) आदि। इस गीत में कुछ ऐसे भी शब्द प्रयुक्त हुए हैं जो असमिया तथा बांग्ला भाषा में समान रूप से व्यवहृत होते हैं। यथा- 'बिबाह', 'बिधिर', 'लोहार' आदि। ध्यातव्य है कि ये मूलतः संस्कृतनिष्ठ शब्द हैं जिनका असमिया, बांग्ला जैसे अन्य भारतीय भाषाओं में परिवर्तित रूपों में प्रयोग होता है। इसी तरह से 'घोरे' शब्द वैसे तो बांग्ला तथा सादरी दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त होता है किंतु यह शब्द वास्तव में हिंदी के 'घर' शब्द का परिवर्तित रूप है। चूंकि ये भाषाएँ ओराकरांत हैं अतः इनके उच्चारण में भेद होता है। ये सभी भिन्न भाषाई शब्द सादरी भाषा में प्रयुक्त होकर कोड-मिश्रण के साथ ही बहुभाषिकता तथा भाषिक विकल्पन की स्थिति का बोध कराते हैं। इसके अलावा 'जनम' शब्द पर ग़ौर किया जाए तो यह भाषा का निम्न कोड है। मानक भाषा में इसके लिए 'जन्म' का प्रयोग किया जाता है। इसीलिए यह भाषिक स्थिति भाषाद्वैत की प्रवृत्ति को दर्शाती है। इसी क्रम में प्रयुक्ति के स्तर पर देखने से गीत में विभिन्न क्षेत्रों की प्रचलित शब्दावलियों का प्रयोग देखने को मिलता है। यथा- 'माये', 'बापे', 'श्वसुर' आदि संबंधसूचक प्रयुक्तियाँ हैं तथा 'जनम', 'बिबाह' आदि को संस्कार विषयक प्रयुक्तियों के अंतर्गत शामिल किया जाएगा। इसके अतिरिक्त गीत के वाक्यों पर ग़ौर किया जाए तो यहाँ कुछ विशेष शब्दों पर बल देने के उद्देश्य से उसे भाषिक संरचना के सामान्य नियमों से इतर वाक्य के प्रारंभ में कर्ता तथा कर्म के स्थान पर रखा गया है। इससे गीत की भाषा में टॉपिकीकरण की विशेषता का पता चलता है। उदाहरणतः गीत के 'घूरिये आसलि लोहार खाड़ू', 'हाईरे धनि कि कहिबो तोके' आदि पंक्तियों को देख सकते हैं। इसमें पहली पंक्ति में 'घूरिये' तथा 'आसलि' शब्द पर विशेष बल देने हेतु इन्हें क्रमशः कर्ता और कर्म के स्थान पर रखा गया है। इसी तरह से दूसरी पंक्ति में 'कहिबो' क्रिया पर ज़ोर देने के लिए उसे कर्म के स्थान पर रखा गया है जबकि सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-व्यवस्था के अंतर्गत इन्हें क्रमशः 'लोहार खाड़ू घूरिये आसलि' तथा 'हाईरे धनि तोके कि कहिबो' के रूप में लिखना अधिक तर्कसंगत होगा।

उपर्युक्त सभी विवेचनों के आधार पर सारतः यह कहा जा सकता है कि चाय जनगोष्ठी में प्रचलित विभिन्न गीत इस समाज की सांस्कृतिक विशिष्टता को बखूबी दर्शाते हैं। समूचे भारत के नाना प्रांतीय समुदायों के बीच सांस्कृतिक विविधता के बावजूद असम आकर इन श्रमिकों ने सांस्कृतिक और भाषिक स्तर पर आपसी संयोजन स्थापित किया। विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों से इस समाज में चिरकाल से प्रचलित लोक मान्यताओं और विश्वासों का आभास मिलता है। विभिन्न व्रत-त्योहारों तथा संस्कारगत अनुष्ठानों में गाये जाने वाले इन गीतों के माध्यम से इन श्रमिकों ने असम की पृष्ठभूमि तथा उनके साथ हुए छल-छद्म और शोषण को भी अभिव्यक्ति दी है। इन गीतों से इनकी सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्थिति का स्पष्ट बोध होता है। समाजभाषिक दृष्टि से चाय जनगोष्ठी के लोकगीतों का अवलोकन करने पर यह पता चलता है कि चाय श्रमिक समाज में अलग-अलग प्रांतीय भाषाओं और बोलियों के शब्दों के मिश्रण से इन गीतों में कोड-मिश्रण के साथ ही भाषाई विकल्पन और बहुभाषिकता की स्थिति दिखायी देती है। दरअसल, इन चाय श्रमिकों के छलरहित व्यवहार, दरिद्रता और अज्ञानता का अनुचित लाभ उठाकर इन्हें असम लाया गया है। अतः इनकी भाषिक अभिव्यक्ति में भी इसकी झलक मिलती है। जैसे ग्रामीण बोली और अशिक्षा के प्रभावस्वरूप गीत की भाषा में निम्न कोड के शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग दिखता है जिससे भाषाद्वैत की प्रवृत्ति का बोध होता है। इसके साथ ही विभिन्न क्षेत्रों की प्रयुक्तियों का इतनी अधिक मात्र में प्रयोग होना चाय श्रमिकों के सामान्य ज्ञान की समृद्धि का सूचक है। गीत की भाषा को और अधिक विशिष्ट तथा लयात्मक बनाने हेतु अलग-अलग भाषाओं की पुनरुक्तियों, यथा- पूर्ण पुनरुक्ति तथा आंशिक पुनरुक्ति का गीत में खूब प्रयोग हुआ है। इसके अलावा गीत की आधार भाषा में वाक्य के स्तर पर खासकर बांग्ला भाषा की पंक्तियों का प्रयोग कोड-अंतरण की विशेषता को उजागर करता है। इसी तरह से कुछ वाक्यों में विशेष शब्दों पर बल देने के उद्देश्य से उसे वाक्य के प्रारंभ में कर्ता के स्थान पर रखा गया है अथवा यूँ कहा जा सकता है कि इन शब्दों को आधार भाषा की सामान्य वाक्य-व्यवस्था में निर्धारित स्थान से हटा दिया गया है। इससे टॉपिकीकरण की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई है। कुलमिलाकर यह कहा जा सकता है कि चाय जनगोष्ठी के लोक प्रचलित गीत सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से उच्च कोटि के कलात्मक सृजन के प्रमाण हैं। इन गीतों में चाय जनगोष्ठी की भाषा, समाज और संस्कृति की पारस्परिकता की स्पष्ट झलक दिखाई देती है।

संदर्भ सूची-

1. तथ्यदाता: श्री मकर सिंह भूमिज, लेसेंकार बंगाली गाँव, तिनसुकिया (दिनांक: 28.11.2022)
2. तथ्यदाता: श्रीमती मूलेश्वरी कुर्मी, हिलिखागुड़ी गाँव, तिनसुकिया (दिनांक: 08.01.2020)
3. तथ्यदाता: श्री भद्र राजोवार, नाजिरा, शिवसागर (दिनांक: 22.12.2021)
4. तथ्यदाता: श्री मकर सिंह भूमिज, लेसेंकार बंगाली गाँव, तिनसुकिया (दिनांक: 29.11.2022)
5. तथ्यदाता: श्री हरि चंद्र कुर्मी, चाँदमारी गाँव, तिनसुकिया (दिनांक: 17.10.2022)
6. तथ्यदाता: श्री भद्र राजोवार, नाजिरा, शिवसागर (दिनांक: 22.12.2021)
7. तथ्यदाता: श्रीमती साबिता राजोवार, नाजिरा, शिवसागर (दिनांक: 24.12.2021)
8. तथ्यदाता: श्री मकर सिंह भूमिज, लेसेंकार बंगाली गाँव, तिनसुकिया (दिनांक: 28.11.2022)
9. तथ्यदाता: श्री त्रिलोक कपूर सिंह, कच्चूजान, तिनसुकिया (दिनांक: 27.10.2022)
10. तथ्यदाता: श्री निरेश कर्मकार, मोराणहाट, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 12.01.2020)
11. तथ्यदाता: श्री भद्र राजोवार, नाजिरा, शिवसागर (दिनांक: 22.12.2021)
12. तथ्यदाता: श्री दुलाल मानकी, दुमदुमा, तिनसुकिया (दिनांक: 04.07.2019)
13. (सं) बसंत राजोवर, चाह जनगोष्ठीर चिंता-चेतना, पृष्ठ संख्या. 116
14. तथ्यदाता: श्री तिलेश्वर कुर्मी, जेराई नोलोनीहोला गाँव, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 17.12.2019)
15. तथ्यदाता: श्रीमती कुसुम कुर्मी, उषा नगर, तेजपुर (दिनांक: 19.08.2022)

5.2 लोक सुभाषित

लोक सुभाषित में लोक का वाक्-चातुर्य स्पष्टतः उद्घाटित होता है। यह अत्यंत कम शब्दों में की गयी विशिष्ट अभिव्यक्ति है जिसे अभिधार्थ और लक्ष्यार्थ दोनों ही दृष्टि से समझना आवश्यक है। चाय जनगोष्ठी में लोकोक्तियों, मुहावरों तथा पहेलियों की भरमार है। बच्चों के पालने-खेलने के गीत से लेकर विविध विषयों से संबंधित उक्तियाँ इस श्रमिक समाज के व्यावाहरिक ज्ञान के विस्तृत क्षेत्र को दर्शाते हैं। उपदेशात्मक, नीतिपरक, व्यंग्यात्मक, सामाजिक-सांस्कृतिक, मनोरंजक आदि सभी संदर्भों से संबंधित इन उक्तियों से चाय जनगोष्ठी के लोकमानस की वाकपटुता का बोध होता है। अतः इस उप-अध्याय में चाय जनगोष्ठी के प्रकीर्ण साहित्य की विविध विधाओं के अंतर्गत कुछ कहावतों, मुहावरों, पहेलियों तथा बालगीत का समाजभाषिक दृष्टि से विश्लेषण किया जाएगा।

* ***लोकोक्ति/कहावत***

- 'अधिक पीरिति अधिक ज्वाला/ अल्प पीरिति गोलार माला'[1]

संतुलन प्रकृति का नियम है। मानव जीवन में जब-जब परिस्थितियाँ असंतुलित होती हैं उस दौरान कई जटिल समस्याओं का जन्म होता है। इससे जीवन में सकारात्मकता और शांति भंग होने लगती है। यही स्थिति प्रेम संबंधों की भी है। प्रेम भावनात्मक जुड़ाव को दर्शाता है। चूंकि प्रेम किसी भी बंधन में नहीं बंधता है। इसीलिए ऐसे संबंधों में दोनों पक्ष से संतुलन बहुत मायने रखता है। अन्यथा संबंधों में कटुता तथा विघटन की स्थिति उत्पन्न होने लगती है। इसीलिए यह उक्ति लोक-प्रसिद्ध है कि अधिक प्रेम से मोह उत्पन्न होने लगता है जो पीड़ादायी होता है तथा संतुलित प्रेम में ही जीवन का सार है। चाय जनगोष्ठी में प्रचलित इस उक्ति में 'अधिक', 'ज्वाला' और 'माला' शब्द हिंदी सहित असमिया और बांग्ला में भी प्रयुक्त होते हैं तथा 'अल्प' शब्द हिंदी, संस्कृत, बांग्ला आदि भाषाओं में व्यवहृत शब्द हैं। यहाँ प्रयुक्त 'ज्वाला' शब्द असमिया और बांग्ला भाषा में भी व्यवहृत होता है जिसका अर्थ है 'कष्टदायी' तथा 'गोलार' (गले का) शब्द मूल रूप से बांग्ला का है। भिन्न भाषाओं के इन शब्दों के आधार भाषा सादरी के वाक्य में प्रयोग के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति है तथा बहुभाषिकता की स्थिति का भी बोध होता है। इसके अलावा 'पीरिति' शब्द 'प्रीति' का निम्न कोड है जो भाषाद्वैत की स्थिति को दर्शाता है।

- ‘कामे न काजे बुड़ी/ लाउ काटते दौड़ा-दौड़ी’[2]

यह कहावत व्यंग्यात्मक शैली में ऐसे व्यक्ति के संदर्भ में कही गयी है जो कुछ न जानते हुए भी स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। अर्थात् किसी काम को करने में असमर्थ होने के बावजूद प्रत्येक स्थान पर अगुवाई करने वाला व्यक्ति। इस कहावत में हम प्रमुख रूप से बांग्ला भाषा का प्रभाव देख सकते हैं। यहाँ ‘काम’ और ‘काज’ शब्द हिंदी, बांग्ला, भोजपुरी आदि भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं। ‘बुड़ी’ (बूढ़ी) तथा ‘काटते’ (काटना) ये दोनों शब्द बांग्ला के हैं। इसी तरह से ‘लाउ’ शब्द असमिया के साथ-साथ बांग्ला भाषा में भी ‘लौकी’ के लिए प्रयुक्त होता है। कुलमिलाकर ये सभी शब्द आधार भाषा सादरी के वाक्य में प्रयुक्त होकर कोड-मिश्रण की स्थिति को दर्शाते हैं। इसी तरह ‘कामे न काजे’ में आधिक्यबोधक पुनरुक्ति है क्योंकि इन दोनों का अर्थ एक है लेकिन ये दोनों शब्द दो अलग-अलग भाषाओं के हैं। ‘काम’ हिंदी का शब्द है तो ‘काज’ ब्रजभाषा का।

- ‘धन जौवन आढ़ाई दिन/ चाम चोखे मानुष चिन’[3]

इस कहावत में अत्यंत ही मार्मिक ढंग से लोक में यह उपदेश दिया गया है कि धन और यौवन स्थायी नहीं होता है। समय के साथ यह धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है। इसीलिए धन-यौवन अथवा रूप-रंग को लेकर कभी भी अभिमान नहीं करना चाहिए। मनुष्य की असली पहचान उसका उच्च विचार, निर्मल चरित्र तथा छलरहित व्यवहार है। मनुष्य की सत्यता का प्रमाण उसके चक्षुओं में दिखायी देता है। अतः किसी व्यक्ति की पहचान उसके विचारों तथा आत्मा की निर्मलता से करनी चाहिए, धन-संपति अथवा रूप-सौंदर्य से नहीं। उक्त कहावत में ‘धन’ और ‘दिन’ हिंदी सहित कई अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। ‘चोखे’ तथा ‘मानुष’ शब्द बांग्ला भाषा के हैं जिसका अर्थ क्रमशः ‘आँख’ और ‘मनुष्य’ है। आधार भाषा सादरी के वाक्य में विविध भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति है। साथ ही बहुभाषिकता की स्थिति का भी बोध होता है। ‘जौवन’ (यौवन), ‘आढ़ाई’ (ढाई), ‘चाम’ (चमड़ी) तथा ‘चिन’ (चिह्न) शब्द निम्न कोड के रूप प्रयुक्त हुए हैं। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति है। भोजपुरी भाषा ग्रामीण परिवेश में भी इन शब्दों का प्रयोग देखा जाता है। ‘चाम’, ‘चोख’ को शरीर विज्ञान से संबंधित प्रयुक्तियाँ कह सकते हैं।

- ‘बापेर नाम शागपात/ बेटार नाम रबिदास’[4]

प्रस्तुत लोकोक्ति से चाय जनगोष्ठी की सामाजिक व्यवस्था का पता चलता है। अन्य हिंदू समाज-व्यवस्था की तरह इस श्रमिक समाज में भी रबिदास शूद्र अर्थात् निम्न वर्ण के माने जाते हैं। स्वतंत्रता पूर्व भारतीय समाज

में वर्ण-व्यवस्था पुरजोर थी। निचली जाति के लोगों को अस्पृश्य माना जाता था। हालाँकि आज इस स्थिति में काफी सुधार आया है किंतु जाति-भेद पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है। ध्यातव्य है कि इस लोकोक्ति में 'रविदास' से तात्पर्य संत रविदास हैं जिनकी जाति 'चमार' थी किन्तु उनकी बौद्धिक चेतना और ज्ञान के कारण उन्हें श्रेष्ठ संत कवियों में शामिल किया गया है। अर्थात् व्यक्ति के मूल्यांकन का आधार उसकी जाति कभी नहीं हो सकती है वरन् व्यक्ति के विचार तथा ज्ञान ही उसे महानता की राह पर आगे ले जाते हैं। इस लोकोक्ति में 'बापेर' और'बेटार' शब्द में करक चिह्न को शब्द के साथ जोड़कर लिखा गया है, जो असमिया सादरी की एक प्रमुख विशेषता है। ये दोनों ही शब्द पीढ़ियों के अंतराल को दर्शाते हैं। 'बापेर' तथा'बेटार' ये दोनों शब्द चाय जनगोष्ठी के रिश्ते-नाते की शब्दवाली से संबंधित प्रयुक्तियाँ हैं। 'रबिदास' और 'शागपात' में भाषाद्वैत की स्थिति दृष्टव्य है। यह 'रविदास' तथा भोजपुरी में साग-सब्जियों के लिए प्रयुक्त शब्द 'सागपात' का निम्न कोड है।

- 'समय, दशा आरु कुल देइखके सबेई करेहे सन्मान/ लेकिन गरीब अनाथके के आहे, बिन भगवान'[5]

वास्तव में वर्ग और वर्ण भेद के आधार पर किसी भी व्यक्ति को सामाजिक पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। उपर्युक्त लोकोक्ति में इसी ओर संकेत करते हुए यह कहा गया है कि समय, आर्थिक स्थिति तथा कुल के आधार पर व्यक्ति सामाजिक प्रतिष्ठा व आदर-सम्मान पाता है किन्तु जिनके पास धन नहीं होता उन्हें यश-प्रतिष्ठा की प्राप्ति नहीं होती। उन्हें समाज हाशिये पर धकेल देता है। इसीलिए कहा गया है कि गरीबों का ईश्वर के अलावा कोई अन्य सहारा नहीं होता। यहाँ 'समय', 'दशा', 'कुल', 'लेकिन', 'गरीब', 'अनाथ' और 'भगवान' ये सभी शब्द प्रमुखतः हिंदी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। 'आरु' तथा 'सन्मान' शब्द असमिया भाषा के हैं जिसके लिए हिंदी में 'और' तथा 'सम्मान' शब्द का व्यवहार होता है। आधार भाषा सादरी के वाक्य में इन शब्दों का प्रयोग होने के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति है। 'बिन', 'देइखके' तथा 'सबेई' इन तीनों शब्दों में हम भाषाद्वैत की स्थिति को देख सकते हैं। ये शब्द क्रमशः 'बिना', 'देखकर' तथा बांग्ला भाषा के शब्द 'सबाई' (सभी) के निम्न कोड हैं। 'समय, दशा आरु कुल देइखके सबेई करेहे सन्मान' पंक्ति में टॉपिकीकरण की स्थिति भी दृष्टव्य है क्योंकि सामान्य वाक्य-संरचना के अनुसार इस वाक्य का रूप 'सबेई समय, दशा आरु कुल देइखके सन्मान करेहे' होना चाहिए लेकिन 'समय', 'दशा' तथा 'कुल' पर बल देने के लिए उन्हें वाक्य के आरंभ में कर्ता के स्थान पर रखा गया है।

- ‘प्रेमके सूता खूब नरम, टाईनके छिटाबे नाई/ छिटाले, गाँईठ देईके जोड़ाले लाभ नाई’[6]

हिंदी में इसके समानांतर प्रचलित है- ‘रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय, टूटे से फिर न जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाए’। अर्थात् प्रेम अथवा आत्मीय संबंधों को सहेजने की जरूरत होती है। ये संबंध किसी कच्चे धागे की तरह कोमल होते हैं, खींच-तान करने पर टूट जाते हैं। यानी संबंधों में कटुता आ जाती है। फिर ऐसे संबंध यदि जुड़ भी जाएँ तो पुनः उसमें पहले की तरह खानगी नहीं आ पाती है। मन में पड़ी यह गाँठ धीरे-धीरे स्थायी रूप से अपनी जगह बना लेती है। रहीम की यह मर्मस्पर्शी उक्ति लोक में अत्यंत प्रचलित है। उनके भावों को लेकर लोक अपने शब्दों में इसे अभिव्यक्त करता है। चाय श्रमिक समाज की भाषा में इसी भाव से संपृक्त उपर्युक्त पंक्ति का विश्लेषण करने पर हम यह देखते हैं कि इसमें ‘प्रेम’, ‘खूब’, ‘लाभ’ शब्द हिंदी के हैं। इनमें से ‘प्रेम’ और ‘लाभ’ शब्द का बांग्ला तथा असमिया भाषा में भी प्रयोग किया जाता है। ‘सूता’ शब्द बांग्ला तथा असमिया में ‘सूत’ अथवा ‘धागे’ के लिए प्रयुक्त होता है। ‘नरम’ हिंदी के ‘नर्म’ विशेषण का निम्न कोड है तथा ‘टाईनके’ (खींचकर) शब्द असमिया तथा बांग्ला क्रिया ‘टान’ का निम्न कोड है। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति है। इसी क्रम में ‘छिटाबे’, ‘गाँइठ’, ‘देईके’, जोड़ाले’ शब्दों में भी हम भाषाद्वैत की स्थिति देख सकते हैं। ये शब्द क्रमशः बांग्ला के ‘छिड़ा/ छेड़े/ छिड़े’, हिंदी शब्द ‘गाँठ’, ‘देकर’, ‘जोड़ना’ के निम्न कोड हैं। अर्थात् इस लोकोक्ति में आधार भाषा सादरी के वाक्य में इन शब्दों का प्रयोग होने के कारण यहाँ कोड-मिश्रण, भाषाद्वैत, बहुभाषिकता तथा भाषाई विकल्पन की स्थिति सहज दृष्टव्य है।

- ‘हरदी चूना मिलाले दोनों छाड़े आपन रंग/ ओहे प्रेम धन्य, आत्मा मिले परमात्माके संग’[7]

वैसे तो हल्दी और चूना दोनों ही अलग-अलग रंग के होते हैं किन्तु दोनों को मिलाने पर एक अलग ही रंग (लाल) बनता है। ठीक उसी प्रकार आत्मा और परमात्मा का मिलन ही सच्चा प्रेम है। ऐसे अप्रतिम मिलन से अलग किस्म की ऊर्जा का संचार होता है जिससे व्यक्ति ‘मैं’ से ऊपर उठ जाता है। इस कहावत में ‘चूना’, ‘दोनों’, ‘रंग’, ‘प्रेम’, ‘धन्य’, ‘संग’, ‘आत्मा’, ‘परमात्मा’ ये सभी शब्द हिंदी में प्रयुक्त होते हैं। ‘हरदी’ भोजपुरी का शब्द है। इसके अतिरिक्त ‘प्रेम’, ‘धन्य’, ‘आत्मा’, और ‘परमात्मा’ शब्द असमिया भाषा में भी प्रयुक्त होते हैं। आधार भाषा सादरी के वाक्य में इन शब्दों का प्रयोग होने के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति है। ‘हरदी’, ‘छाड़े’ तथा ‘आपन’ ये सभी शब्द असमिया सादरी में निम्न कोड के रूप में प्रयुक्त होते हैं। हिंदी में इनके लिए मानक रूप ‘हल्दी’, ‘छोड़ता/ निकलता’ तथा ‘अपना’ प्रचलित है। ‘हरदी’ और ‘चूना’ को

घरेलू उपयोग की वस्तुओं संबंधी प्रयुक्तियों के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है। यह भी ध्यातव्य है कि चाय जनगोष्ठी की मिश्रित भाषा होने के कारण उसकी क्रियाओं पर भी विभिन्न भाषाओं का प्रभाव है। जैसे- 'मिलाले' क्रिया रूप असमिया का है तो 'मिले' हिंदी का।

- 'शीत, गरमी, बर्षा हरदम सहेहे धरती/ ओहे रकम सुख-दुःख सहेक लागे मानुषभी'[8]

परिवर्तन संसार का नियम है। साल भर में जैसे ऋतु परिवर्तन के साथ प्रकृति में भी सतत परिवर्तन होता रहता है ठीक वैसे ही मानव जीवन का कोई भी क्षण अथवा कोई भी स्थिति चिर स्थायी नहीं है। सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, चिंता आदि का जीवन में आना-जाना लगा रहता है। उपर्युक्त कहावत इसी भाव से संपृक्त है। इसमें शीत, वर्षा, गर्मी आदि भिन्न परिस्थितियों का प्रभाव जैसे पृथ्वी पर पड़ता है। ठीक वैसे ही मानव जीवन भी सुख-दुःख के प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता। प्रस्तुत लोकोक्ति में 'शीत', 'गरमी', 'बर्षा', 'धरती', 'सुख-दुःख', 'भी' ये सभी शब्द हिंदी के हैं। 'मानुष' शब्द प्रमुख रूप से बांग्ला भाषा में 'मनुष्य' के लिए प्रयुक्त होता है। इन शब्दों का असमिया सादरी में कोड-मिश्रण हुआ है। 'बर्षा' और 'हरदम' में भाषाद्वैत है। ये दोनों शब्द क्रमशः 'वर्षा' और 'हमेशा' के निम्न कोड हैं। 'सुख-दुःख' हिंदी के सहचर शब्द हैं। 'शीत', 'गरमी', 'बर्षा' ये तीनों ऋतु संबंधी प्रयुक्तियाँ हैं। इस लोकोक्ति में हम टॉपिकीकरण की स्थिति भी देखते हैं क्योंकि इसकी सामान्य वाक्य-संरचना कुछ इस प्रकार होगी 'धरती शीत, गरमी, वर्षा हरदम सहेहे'। यहाँ ऋतुओं पर विशेष बल देने के लिए उन्हें वाक्यारंभ में कर्ता के स्थान पर लाया गया है। इसी तरह दूसरे वाक्य की सामान्य वाक्य-संरचना 'ओहे रकम मानुषभी सुख-दुःख सहेक लागे' होगी लेकिन 'सुख-दुःख' पर बल ज़ोर देने के लिए उसे कर्ता के स्थान पर लाया गया है।

- 'उथल-पुथल नाच आज/ उथल-पुथल नाच/ करम धरमेर पूजा आज/ दिल खुले हाँस'[9]

उक्त लोकोक्ति से आशय यह है कि 'करम पर्व' चाय जनगोष्ठी का जातीय पर्व है। इसमें कर्म और धर्म के सामंजस्य से जीवन में सफलता की प्राप्ति की ओर संकेत किया गया है। चाय जनगोष्ठी के बड़े-बुजुर्गों से लेकर बच्चों तक इस उत्सव में सहर्ष भाग लेते हैं। इस उत्सव के दिन चाय श्रमिकों के आनंद की कोई सीमा नहीं होती है। ये अपने जीवन की पीड़ा, दुःख-तकलीफ आदि सभी को भूलकर ईश्वर के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए दिल खोलकर झुमुर नृत्य करते हैं। प्रस्तुत उक्ति में चाय जनगोष्ठी की सांस्कृतिक विशिष्टता का आभास मिलता है। इस लोकोक्ति में भाषाई विकल्पन सहज दृष्टव्य है। इसमें 'नाच', 'आज', 'पूजा', 'दिल' शब्द हिंदी

के हैं। 'खुले' (खोलकर) और 'हाँस' (हँस) प्रमुखतः बांग्ला भाषा के शब्द हैं। अतः आधार भाषा सादरी के वाक्य में हिंदी और बांग्ला भाषा के शब्दों का मिश्रण होने के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति है। वैसे तो 'करम', 'धरम' दोनों ही शब्द चाय जनगोष्ठी की सांस्कृतिक शब्दवली हैं अतः इन्हें प्रयुक्ति कहा जा सकता है। किन्तु इन दोनों शब्दों में भाषाद्वैत की प्रवृत्ति को देखा जा सकता है क्योंकि ये दोनों ही भाषा के निम्न कोड हैं इनका उच्च कोड अथवा मानक रूप 'कर्म' और 'धर्म' है। यहाँ 'उथल-पुथल' में आंशिक पुनरुक्ति है। इसके साथ ही लोकोक्ति की पंक्तियों में टॉपिकीकरण की स्थिति भी मौजूद है। जैसे- 'उथल-पुथल नाच आज', 'करम धरमेर पूजा आज' तथा 'दिल खुले हाँस' पंक्तियों में 'आज' तथा 'हाँस' इन दोनों शब्दों को वाक्य-संरचना के नियत साथ से स्थानांतरित किया गया है। सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना के अनुसार इन पक्तियों को क्रमशः 'आज उथल-पुथल नाच', 'आज करम धरमेर पूजा' तथा 'हाँस दिल खुले' के रूप में होना चाहिए।

- 'उत्तरे पाक घर, दक्षिणे गोहाल/ पश्चिमे शोवाघर, पूबे भाँड़ाल'[10]

प्रस्तुत लोकोक्ति से यह स्पष्ट हो जाता है कि चाय जनगोष्ठी में भी वास्तुशास्त्र संबंधी नीतियों का अनुसरण किया जाता है। इसमें वास्तु के नियमों के आधार पर घर की आतंरिक संरचना विषयक निर्देश दिए गए हैं कि घर के उत्तर दिशा में रसोई, दक्षिण में गौशाला, पश्चिम की ओर शौचालय तथा पूर्व में धन-धान्य व अनाज रखा जाना चाहिए। ऐसा जनविश्वास है कि वास्तुशास्त्र के नियमों के अनुसार गृह-निर्माण करने से किसी भी तरह की विपदा एवं नकारात्मक शक्तियों के प्रभाव से बचा जा सकता है तथा परिवार में सदैव खुशहाली तथा बरकत बनी रहती है। उक्त लोकोक्ति में 'उत्तरे', 'दक्षिणे', 'पश्चिमे', तथा 'पूबे' ये चारों दिशाएँ हैं और 'पाक घर' (रसोई), 'गोहाल' (गौशाला), 'शोवाघर' (शौचालय), 'भाँड़ाल' (अनाज रखने का) किसी भी घर की आतंरिक संरचना के आधार-कक्ष हैं। ध्यातव्य है कि ये स्थापत्य से संबद्ध प्रयुक्तियाँ हैं। इसके अलावा 'पूब', 'पाक घर', 'शोवाघर' असमिया भाषा की शब्दावली है। 'पूब' तथा 'भाँड़ाल' भाषा के निम्न कोड हैं। इनके लिए मानक रूप या उच्च कोड 'पूर्व' तथा 'भँराल' असमिया शब्द प्रचलित हैं। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति है। इसी तरह से इस लोकोक्ति में आधार भाषा सादरी के वाक्य में असमिया एवं अन्य भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की विशेषता भी दृष्टव्य है। इस भाषिक स्थिति का मुख्य कारण असमिया और बांग्ला भाषा तथा संस्कृति का चाय जनगोष्ठी समाज पर व्यापक प्रभाव है। इस लोकोक्ति में हम टॉपिकीकरण की स्थिति भी देखते हैं। जैसे- 'उत्तरे पाक घर, दक्षिणे गोहाल' तथा 'पश्चिमे शोवाघर, पूबे भाँड़ाल' इन दोनों ही पंक्तियों में चारों दिशाओं पर विशेष ज़ोर देने के लिए वाक्य में उनके नियत स्थान से स्थानांतरित

कर दिया गया है। सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना के अनुसार इन्हें 'पाक घर उत्तरे, गोहाल दक्षिणे' तथा 'शोवाघर पश्चिमे, भाँड़ाल पूबे' के रूप में होने चाहिए।

- 'ऊँचा-ऊँचा बोले सबाई/ ऊँचा होल हिमालय/ सोबार उपरे आश्मान/ जाहार लेखा-जोखा नाई'[11]

आशय यह है कि लोग ऊँचाई के लिए हिमालय की उपमा देते हैं। उसकी ऊँचाइयों को प्राप्त करने की महत्वाकांक्षा रखते हैं किन्तु इन सबसे ऊपर तो विस्तृत नभ है जिसके कोने-कोने का हिसाब लगा पान असंभव है। अर्थात् मानव जीवन का ध्येय हिमालय की तरह अडिग, अचल न होकर गगन की तरह विस्तृत और अहंकार शून्य होना चाहिए। उपर्युक्त लोकोक्ति में 'बोले', 'ऊँचा', 'आश्मान' (आसमान), 'लेखा-जोखा' ये सभी हिंदी भाषा के शब्द हैं। 'सबाई' (सभी), 'सोबार' (सबका) बांग्ला शब्द हैं तथा 'नाई' (नहीं) शब्द बांग्ला और असमिया दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होने वाला शब्द है। आधार भाषा सादरी के वाक्य में इन विविध भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति है। 'आश्मान' और 'जाहार' भाषा के निम्न कोड वाले शब्द रूप हैं इनके लिए मानक भाषा में उच्च कोड के रूप में 'आसमान' तथा 'जहाँर' (जहाँ का) शब्द प्रचलित हैं। 'ऊँचा-ऊँचा' में पूर्ण पुनरुक्ति है जो विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है तथा 'लेखा-जोखा' सहचर शब्द हैं। इसके अलावा इस लोकोक्ति में हम टॉपिकीकरण की स्थिति भी देखते हैं। यथा- 'ऊँचा-ऊँचा बोले सबाई', 'ऊँचा होल हिमालय' तथा 'सोबार उपरे आश्मान'। इन वाक्यों में 'बोले', 'होल' तथा 'उपरे' शब्द पर विशेष बल देने के लिए उसे वाक्य-व्यवस्था के नियत स्थान से स्थानांतरित कर दिया गया है। सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना के अनुसार इन्हें क्रमशः 'सोबाई ऊँचा-ऊँचा बोले', 'हिमालय ऊँचा होल' और 'आश्मान सोबार उपरे' के रूप में होना चाहिए।

- 'अखन् रहे आघन, खात रहे घन्-घन्/ एखन लागे कार्तिक, दाबाबे आपन मन'[12]

इस लोकोक्ति में किसानों के जीवन की विडंबना को चित्रित किया गया है। अगहन के महीने में सभी फसलों की कटाई हो जाती है तथा घर धन-धान्य से परिपूर्ण रहता है। खाने-पीने की कोई कमी नहीं रहती है लेकिन वहीं कार्तिक महीने में फसल खेत-खलिहानों में रहती है। फसलों की सुरक्षा के लिए सभी किसान ईश्वर से विनती करते हैं ताकि मौसम अनुकूल रहे तथा अच्छी पैदावार हो। इस समय किसानों के घर में अनाज की कमी रहती है। पूर्व संचित अनाजों से ही वे अपने परिवार का किसी तरह भरण-पोषण करते हैं। ग़ौरतलब है कि असम में अगहन के महीने में फसलों के घर लाये जाने के बाद भोग-उल्लास का पर्व 'भोगाली बिहू अथवा

माघ बिहू' मनाया जाता है। और, इसके विपरीत कार्तिक महीने में अच्छी पैदावार के लिए तुलसी की पूजा-आराधना की जाती है, नित-दिन दीप जलाया जाता है। इसीलिए कार्तिक महीने में मनाया जाने वाला बिहू 'कंगाली बिहू' नाम से प्रसिद्ध है। प्रस्तुत लोकोक्ति में प्रयुक्त 'अखन्', 'दाबाबे' शब्द बांग्ला भाषा के हैं जिनका अर्थ क्रमशः 'अभी' तथा 'दबाना' है। इसके अलावा 'खात' (खाना) तथा 'आपन' (अपना) शब्द भोजपुरी भाषा के हैं। आधार भाषा सादरी के वाक्य में इन विभिन्न भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति है। 'आघन' शब्द 'अगहन' का निम्न कोड है। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति भी है। 'घन्-घन्' में पूर्ण पुनरुक्ति है जो क्रिया-विशेषण के रूप में यहाँ प्रयुक्त हुआ है। 'आघन' (अगहन) और 'कार्तिक' महीनों के नाम संबंधी प्रयुक्तियाँ हैं। कुलमिलाकर, इस लोकोक्ति में कोड मिश्रण, भाषाद्वैत, पुनरुक्ति, प्रयुक्ति तथा भाषाई विकल्पन की स्थिति दिखायी देती है। इसके अलावा इस लोकोक्ति में हम टॉपिकीकरण की स्थिति भी देखते हैं। यथा- 'अखन् रहे आघन, खात रहे घन्-घन्' तथा 'एखन लागे कार्तिक, दाबाबे आपन मन'। इन वाक्यों में 'आघन' महीने तथा 'खात', 'लागे', 'दाबाबे' क्रिया रूपों पर विशेष बल देने के लिए उसे वाक्य-व्यवस्था के नियत स्थान से स्थानांतरित कर दिया गया है। सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना के अनुसार इन्हें क्रमशः 'अखन् आघन रहे, घन्-घन् खात रहे' तथा 'एखन कार्तिक लागे, आपन मन दाबाबे' के रूप में होना चाहिए।

* ***मुहावरे***

- 'थान पूजार परसादे कोल आर् बातासाइ बेसि'[13]

चाय जनगोष्ठी में प्रचलित यह मुहावरा सामाजिक-सांस्कृतिक रीति-नीति से संबद्ध है जिसका अभिधार्थ है घर में आयोजित पूजा के प्रसाद में केला और बताशा भी अधिक या पर्याप्त होता है। अर्थात् इस मुहावरे का लक्ष्यार्थ हमें इस संदर्भ में समझना चाहिए कि जब बात घरेलू स्तर पर किसी कार्यक्रम अथवा अनुष्ठान को आयोजित करने की होती है तो उसमें कम खर्च और मेहनत किया जाता है। वहीं जब आयोजन बड़े स्तर पर करना हो तो कई बार अनावश्यक चीजों को प्राथमिकता दिया जाने लगता है। आज का समाज बाहरी दिखावे (शो ऑफ) पर अधिक जोर देता है। धार्मिक कर्मकांडों और बाह्याचारों को प्राथमिकता देते हुए उसके मूल में जो दर्शन और विचार हैं उन्हें दरकिनार कर दिया जाता है। इस मुहावरे में 'थान' शब्द सादरी भाषा में घर में बनाये गये देवस्थान के लिए प्रयुक्त हुआ है। इस 'थान' शब्द को हिंदी के 'स्थान' शब्द का निम्न कोड कहना अनुचित नहीं होगा। इसी तरह 'परसाद' शब्द 'प्रसाद' का निम्न कोड है। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति

है। 'कोल' असमिया और बांग्ला भाषा में 'केले' के लिए प्रयुक्त होता है। 'बेसि' शब्द अधिकता का सूचक है जो बांग्ला, असमिया और भोजपुरी तीनों में प्रचलित है। आधार भाषा सादरी के वाक्य में प्रयुक्त ये शब्द यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति को उत्पन्न करते हैं। इसके अतिरिक्त पूजा, प्रसाद, स्थान, केला और बतासा ये सभी शब्द हिंदू धर्म की पूजा पद्धति से जुड़े हुए हैं। कुलमिलाकर इस मुहावरे में बहुभाषिकता और हिंदू धर्म की पूजा-पद्धति से संबंधित प्रयुक्तियों प्रयोग के आधार पर भाषाई विकल्पन की स्थिति सहज ही दिखायी देती है।

- 'केंचुवा खान्दते साँप निक्ला'[14]

यह मुहावरा असमिया लोकमानस में भी खूब प्रचलित है कि 'केंसू खांदुते साप उलुवा' (केंचुवे के लिए खुदाई करते हुए साँप का निकलना)। इस मुहावरे का तात्पर्य है अप्रत्याशित फल की प्राप्ति होना। अर्थात् किसी छोटी चीज के लिए परिश्रम करते हुए किसी बड़ी सफलता की प्राप्ति होना। इस मुहावरे में 'केंचुवा', 'साँप' और 'निक्ला' (निकला) ये तीनों ही शब्द हिंदी के हैं तथा 'खान्दते' बांग्ला भाषा की क्रिया है। अतः यहाँ आधार भाषा सादरी के वाक्य में हिंदी, असमिया तथा बांग्ला के शब्दों के प्रयोग के कारण कोड-मिश्रण की स्थिति है। यह भाषाई मिश्रण चाय जनगोष्ठी में विभिन्न भाषा-भाषियों के आपसी साहचर्य का प्रमाण है। 'निक्ला' शब्द हिंदी की क्रिया 'निकला' का निम्न कोड है जो भाषाद्वैत की स्थिति को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त साँप, केंचुवा ये दोनों जमीन पर रेंगने वाले या सरीसृप वर्ग के प्राणी हैं। ये शब्द प्राणी विज्ञान से संबंधित प्रयुक्तियाँ हैं।

- 'काण खाड़ा कोरा'[15]

यह हिंदी के 'कान खड़े होना' मुहावरा का ही सादरी में अनूदित रूप है। इस मुहावरे का निहितार्थ है चौकन्ना रहना। चाय जनगोष्ठी में प्रचलित यह मुहावरा शारीरिक अंग से संबंधित किन्तु उपदेश-प्रधान है। इसमें परिस्थिति के अनुकूल स्वयं को सचेत रखने की सलाह दी गयी है। इस मुहावरे में 'काण' शब्द वैसे तो हिंदी के 'कान' का ही पर्याय है किन्तु यह शब्द वास्तव में असमिया व बांग्ला का माना जाएगा। इन दोनों ही भाषाओं में कान शब्द में 'न' ध्वनि के स्थान पर 'ण' का प्रयोग होता है। इसके अलावा 'कोरा(करना)' असमिया और बांग्ला क्रिया है। इस प्रकार सादरी भाषा के इस मुहावरे में असमिया और बांग्ला शब्दों के प्रयोग के कारण एक तो कोड-मिश्रण का संकेत मिलता दूसरे चाय जनगोष्ठी की बहुभाषी स्थिति का भी बोध होता है। इसमें 'खाड़ा' शब्द का प्रयोग हुआ है जो कि हिंदी शब्द 'खड़ा' का निम्न कोड है। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति है। भाषाद्वैत

की यह स्थिति चाय जनगोष्ठी समाज की निम्न शैक्षिक अवस्था का बोध कराती है। ध्यातव्य है कि इस मुहावरे को मूलतः बांग्ला भाषा से प्रभावित मुहावरा कहा जा सकता है।

- 'घाटे-घाटे पानी खुवा'[16]

'घाट-घाट का पानी पीना' इस मुहावरे का लक्ष्यार्थ अनुभवी होने को दर्शाता है। आमतौर पर किसी भी अनुभवी व्यक्ति के लिए लोक में इस तरह के वाक्यांशों का प्रचलन होता आया है। हालाँकि आजकल समाज में बहुनिष्ठ व्यक्तियों के लिए भी इस मुहावरे का प्रयोग किया जाता है। उक्त मुहावरे में 'घाटे-घाटे' (घाट-घाट) का प्रयोग अधिकता के अर्थ को प्रकट करने के संदर्भ में हुआ है। घाट शब्द की दो बार आवृति पूर्ण पुनरुक्ति की स्थिति का सूचक है। ध्यातव्य है कि 'पानी' हिंदी का शब्द है तथा 'खुवा' असमिया क्रिया है। सादरी भाषा के इस मिहवारे में असमिया और हिंदी के शब्दों के प्रयोग के कारण यहाँ कोड मिश्रण की स्थिति उत्पन्न हुई है।

- 'चोख घुसाई आना'[17]

चाय श्रमिक समाज में प्रचलित इस मुहावरे का संकेतार्थ है अनदेखा करना। इस मुहावरे में 'चोख' शब्द बांग्ला का है जिसका अर्थ है 'आँख'। इसके अतिरिक्त 'घुसाई' शब्द हिंदी तथा भोजपुरी की क्रिया 'घुसाना' में 'ई' प्रत्यय के योग से बना है तथा 'आना' हिंदी की क्रिया है। इस दृष्टि से उक्त मुहावरे में बांग्ला, हिंदी तथा भोजपुरी के शब्दों के प्रयोग के कारण कोड-मिश्रण के अतिरिक्त बहुभाषिकता की स्थिति का पता चलता है।

- 'चट लगन चट बिहा'[18]

बागानिया भाषा में प्रचलित उक्त मुहावरे के लिए हिंदी मुहावरा 'चट मंगनी पट ब्याह' प्रचलित है। इस मुहावरे का अर्थ है अत्यंत शीघ्रता से किसी कार्य को सम्पन्न करना। 'लगन-ब्याह' जैसे शब्द लोक में प्रचलित संस्कारगत रीतियों के सूचक हैं। इसमें 'चट' शब्द हिंदी का क्रिया-विशेषण है जिसका अर्थ है तुरंत किसी काम को अंजाम देना। 'लगन' और 'बिहा' ये दोनों ही शब्द क्रमशः हिंदी शब्द 'लग्न' तथा 'ब्याह' के निम्न कोड के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। 'बिहा' शब्द को भोजपुरी के 'बियाह' शब्द का निम्न कोडवत् प्रयोग कहा जा सकता है। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति स्पष्टतः दिखायी देती है। भाषा के निम्न कोड के प्रयोग का प्रमुख कारण चाय

जनगोष्ठी समाज में शिक्षा का अभाव है। 'लगन', 'बिहा' शब्द सांस्कृतिक क्षेत्र की प्रयुक्तियाँ हैं तथा ये शब्द भाषिक विकल्पन को भी दर्शाते हैं।

- 'तेलीर तेल पुड़ा, माशालेर कि?'[19]

इस मुहावरे का अर्थ है तेली के तेल जलने से मशाल को कोई फर्क नहीं पड़ता। अर्थात् जिस पर बीतती है वही जानता है। इस मुहावरे के भावसाम्य के तौर पर हिंदी की 'जाके पैर न फटी बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई' लोकोक्ति को देख सकते हैं। इस मुहावरे में समाज में जाति के आधार पर पेशे के विभाजन की व्यवस्था की ओर संकेत किया गया है। चाय जनगोष्ठी में भी यह विभाजन देखा जाता है। चाय श्रमिक होते हुए भी इस समाज में बुनकर, चर्मकार, ब्राह्मण, तेली, कुम्हार आदि जातिगत भेद स्पष्टतः हैं। ये विभिन्न जातियों के लोग अलग-अलग कार्यों में दक्ष होते हैं। ठीक इसी तरह 'नावा देख्ले नोख बाढ़ा' अर्थात् हज्जाम को देखकर नाख़ून बढ़ना आदि अनेक मुहावरे चाय जनगोष्ठी के लोगमानस में प्रचलित हैं जो सामाजिक स्तरभेद को रेखांकित करते हैं।

समाजभाषिक दृष्टि से इस मुहावरे में भाषिक विकल्पन के साथ ही कोड-मिश्रण की स्थिति स्पष्टतः देख सकते हैं। इसमें प्रयुक्त'पुड़ा' असमिया और बांग्ला दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त शब्द है जिसका अर्थ है 'जलना' तथा 'मशाल' मूलतः अरबी शब्द है जो कई भारतीय भाषाओं की शब्दावली में प्रयुक्त होता है। ये दोनों ही शब्द कोड-मिश्रण की स्थिति के सूचक हैं। भारतीय भाषाओं में 'मशाल' शब्द का सहज प्रयोग कोड-बॉरोइंग की स्थिति को भी द्योतित करता है।

- 'दिम बोल्ले आश्रा थाका'[20]

अर्थात् किसी व्यक्ति की कही हुई बात को लेकर आशान्वित होना। इस मुहावरे पर ग़ौर किया जाए तो इसमें 'दिम' शब्द असमिया का है जिसका अर्थ है 'देना'। 'थाका' असमिया और बांग्ला में प्रचलित शब्द है जो हिंदी के 'रहना' शब्द के अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'आश्रा' शब्द भोजपुरी के 'आसरा' (आशा) शब्द का निम्न कोडवत् प्रयोग है तथा 'बोल्ले' (बोलना/ कहना) शब्द मूलतः बांग्ला भाषा का उच्च कोड है। बांग्ला भाषा की ग्रामीण (चलंत) भाषा में 'बोल्ले' के स्थान पर 'कोइसे' शब्द भी प्रयुक्त होता है। ये शब्द भाषाद्वैत की स्थिति के सूचक हैं। इस मुहावरे में असमिया, भोजपुरी और बांग्ला भाषा के शब्दों का प्रयोग बहुभाषिकता के साथ-साथ कोड-मिश्रण की स्थिति को प्रकट करता है।

- 'दुधिया गाईयेर लाइथ खाईतेलेउ मोजा'[21]

उक्त मुहावरे का शाब्दिक अर्थ है- दुधारू गाय की लात भी भली। आशय यह है कि जिस व्यक्ति से कुछ काम अथवा लाभ लेना हो तो लोग चापलूसी करते नहीं थकते हैं। इतना ही नहीं उनके गलत व्यवहार अथवा अनपेक्षित शब्दों को भी सहन कर लेते हैं। इसीलिए लोक में इस तरह के सुभाषितों का प्रचलन है। यहाँ 'दुधिया गाई' से तात्पर्य ऐसे लोगों से है जिनसे लाभ लिया जा सके। इस मुहावरे में 'दुधिया' हिंदी विशेषण है जो सफेदी को दर्शाता है किन्तु बागानिया भाषा में प्रचलित इस मुहावरे में 'दुधिया' विशेषण का प्रयोग गाय के संदर्भ में किया गया है। यहाँ दुधारू गाय न कहकर 'दुधिया गाई' कहा गया है। 'लाइथ' शब्द भोजपुरी के 'लात' (पैर) का निम्न कोड है तथा 'खाईते' शब्द बांग्ला के 'खेते' (खाना) का निम्न कोड रूप है। इसी तरह 'मोजा' शब्द असमिया और बांग्ला दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त होने वाला शब्द है जिसका अर्थ मजा या अच्छे के संदर्भ में लिया जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि उक्त मुहावरे में आधार भाषा सादरी के वाक्य में बांग्ला, असमिया तथा भोजपुरी के शब्दों के प्रयोग के कारण कोड-मिश्रण, भाषाद्वैत तथा एक साथ एकाधिक भाषाओं के प्रयोग के कारण बहुभाषिकता की स्थिति है।

- नामसे गुण डांगोर'[22]

अर्थात् नाम से गुण बड़ा होता है। 'व्यवहार ही परिचय है', 'व्यक्ति का गुण ही उसे आगे ले जाता है' जैसी भावसाम्य पंक्तियाँ इस मुहावरे के अर्थ को स्पष्टतः व्याख्यायित करती हैं। इस मुहावरे में 'नाम' शब्द तो कई भारतीय भाषाओं जैसे भोजपुरी, असमिया, हिंदी, बांग्ला, सादरी, उड़िया आदि में एक ही तरह से लिखा जाता है किन्तु यहाँ 'से' विभक्ति का प्रयोग मूल शब्द के साथ ही हुआ है- 'नामसे'। यह असमिया सादरी की एक प्रमुख विशिष्टता है। इसके अतिरिक्त 'डांगोर' शब्द असमिया का है जिसका अर्थ है- बड़ा। इस प्रकार यहाँ सादरी भाषा के मुहावरे में असमिया तथा अन्य भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का प्रयोग होने के कारण कोड-मिश्रण की स्थिति है।

- 'भूख थाकले निमख-झलेइ तरकारी'[23]

उपर्युक्त मुहावरे का अर्थ है भूखे व्यक्ति के लिए नमक और मिर्ची ही सब्जी के समान है। आशय यह है कि समय और परिस्थिति के अनुकूल मनुष्य को थोड़े में भी गुजारा करना पड़ता है। उसके लिए कमतर चीजें भी पर्याप्त होती हैं तथा वह उसी में संतुष्ट होना सीख लेता है। जैसे: प्यासे व्यक्ति के लिए एक घूँट जल तृप्ति देती

है। डूबते हुए को तिनके का सहारा भी काफी होता है। उसी तरह से भूखा व्यक्ति नमक-मिर्च अर्थात् कम से कम चीजों से भी अपनी क्षुधा को शांत कर लेता है। इस मुहावरे के माध्यम से चाय जनगोष्ठी की आर्थिक स्थिति का संकेत मिलता है। बागान के श्रमिकों का दैनिक पारिश्रमिक इतना पर्याप्त नहीं होता है कि वे अपनी मूलभूत आवश्यकतों यहाँ तक कि संतुलित भोजन की सहज आपूर्ति करने में सक्षम हो सकें। इस मुहावरे में 'भूख' शब्द हिंदी का है तथा'थाकले' शब्द बांग्ला भाषा की क्रिया है जिसका अर्थ 'रहना' है। इसी तरह से 'निमख' (नमक) असमिया और बांग्ला दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त होता है और 'तरकारी' शब्द बांग्ला और भोजपुरी में 'सब्जी' के लिए प्रयुक्त होता है। बागानिया भाषा में 'झल' यानी 'झलकिया' (मिर्च) के संदर्भ में प्रयुक्त होता है। 'झलकिया' असमिया शब्द है। इस मुहावरे में बांग्ला, असमिया, हिंदी, भोजपुरी आदि भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति है। साथ ही लोक साहित्य में विभिन्न भाषाओं की उपस्थिति चाय जनगोष्ठी समाज की बहुभाषी स्थिति को भी प्रकट करता है। ध्यातव्य है कि 'निमख', 'झल' और 'तरकारी' शब्द खाद्य-क्षेत्र की प्रयुक्तियाँ हैं। इस तरह यहाँ प्रयुक्ति की भी स्थिति है।

- 'दुधेर धार घिंये माखा'[24]

असमिया सादरी में प्रचलित यह मुहावरा बांग्ला भाषा से अधिक प्रभावित है। इसका अभिधार्थ है- दूध का कर्ज घी से चुकाना। तात्पर्य यह है कि कर्ज का कई गुना अधिक लगान देना। यह मुहावरा चाय श्रमिकों के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है। आर्थिक तंगी से जूझते इन चाय श्रमिकों को अक्सर कर्ज लेना पड़ता है। अशिक्षा के कारण ये बैंक से ऋण न लेकर साहूकार के पास जाते हैं। इनकी अज्ञानता का अनुचित लाभ उठाते हुए साहूकार महंगे दरों पर कर्ज देते हैं। इसी कारण ये लंबे समय तक ऋणमुक्त नहीं हो पाते हैं। इस मुहावरे में प्रयुक्त 'दूध' शब्द हिंदी, बांग्ला आदि भाषाओं में प्रचलित है किन्तु यह शब्द 'र' प्रत्यय से युक्त होने के कारण इसे बांग्ला भाषा का मानना उचित होगा। 'धार' असमिया और बांग्ला भाषा का शब्द है जिसका अर्थ 'कर्ज अथवा ऋण' है। यह हिंदी के 'उधार' शब्द का लोक में प्रचलित निम्न कोड है। अतः इस मुहावरे में भाषाद्वैत की स्थिति है। 'घिंये' तथा 'माखा' ये दोनों ही शब्द बांग्ला भाषा के हैं। जिनका अर्थ क्रमशः 'घी' और 'लगाना' (क्रिया) है। ये सभी शब्द आधार भाषा सादरी के वाक्य में प्रयुक्त होकर कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति को प्रदर्शित कर रहे हैं। 'घी' और 'दूध' दोनों खाद्य-सामग्री से संबंधित प्रयुक्तियाँ हैं।

* ***पहेलियाँ***

- 'बोगा पाथारे काला धान/ ओहे राखे सबके मान': उत्तर- किताप/ किताब[25]

चाय श्रमिक समाज में अशिक्षित और अर्द्धशिक्षित लोगों की संख्या अधिक है। इस पहेली के माध्यम से समाज में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। चूंकि चाय जनगोष्ठी के लोग कृषि कार्य से अधिक जुड़े होते हैं। इसीलिए कृषि से संबंधित उपमानों के जरिये उन्हें शिक्षा की ओर उन्मुख करने का प्रयास किया गया है। इस पहेली का शाब्दिक अर्थ है कि सफेद खेत में काले धान की खेती होती है। वही धान सभी का मान बढ़ाता है। यहाँ बोगा पाथार अर्थात् सफेद खेत से तात्पर्य किताब से है जिसके पन्ने सफेद रंग के होते हैं और उसमें काले धान यानी काले अक्षर रूपी फसल (ज्ञान) की खेती होती है। कठिन परिश्रम द्वारा इस ज्ञान की प्राप्ति से ही जीवन में किसी भी लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान से ही सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

उक्त पहेली में 'बोगा' असमिया शब्द है। 'पथार' शब्द असमिया और बांग्ला दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होता है। किन्तु यहाँ इस शब्द पर मूलतः बांग्ला भाषा का प्रभाव है इसीलिए पथारे कहा गया है। अन्यथा असमिया भाषा होने पर यह पथारत होता। इसी तरह 'काला' और 'सब' ये दोनों हिंदी के शब्द हैं। ये सभी शब्द सादरी भाषा के वाक्य में प्रयुक्त होकर यहाँ कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति को दर्शा रहे हैं। धान, मान जैसे शब्द हिंदी, असमिया, बांग्ला आदि भाषाओं में समान रूप से ही प्रयुक्त हुए हैं। यद्यपि असमिया सादरी एक योगात्मक भाषा है अतः इसमें कारक चिह्न शब्द के साथ ही प्रयुक्त हुआ है। यथा: पथारे, सबके। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि पथार और धान शब्द कृषि क्षेत्र की प्रयुक्तियाँ हैं। 'ओहे राखे सबके मान' इस वाक्य में टॉपिकीकरण की स्थिति स्पष्टतः दिखायी देती है। असमिया सादरी की सामान्य वाक्य-संरचना के अनुरूप यह वाक्य 'सबके मान ओहे राखे' होना चाहिए। 'ओहे राखे' पर विशेष बल देने के लिए उसे वाक्यारंभ में रखा गया है।

- 'खस-खस कोरे चोले/ काला पानी गिरे/ दुनिया सालाम कोरे': उत्तर- कलम[26]

वो कहते हैं न 'The pen is mightier than the sword' अर्थात् कलम किसी तलवार से कहीं अधिक शक्तिशाली होती है। उपर्युक्त पहेली चाय जनगोष्ठी में कलम की ताकत और महत्ता को रेखांकित करने वाली है। इसका आशय यह है कि कलम एक ऐसा धारदार औजार है जो अपनी काली स्याही से पूरी दुनिया

को एक नयी दिशा देने में सक्षम है। और, इसे चलाने वाले को पूरी दुनिया सलाम करती है। इस पहेली में खस-खस शब्द में पूर्ण पुनरुक्ति है जिसका प्रयोग क्रिया-विशेषण के रूप में हुआ है। कोरे और चोले शब्द बांग्ला भाषा के हैं तथा गिरे शब्द भोजपुरी का है जो 'गिरना' क्रिया का सूचक है। दुनिया और सलाम ये दोनों ही शब्द अरबी भाषा के हैं तथा कोरे असमिया की 'करना' क्रिया का रूप है। अर्थात् उक्त पहेली में बांग्ला, भोजपुरी, अरबी, असमिया भाषा की शब्दावली के प्रयोग से कोड-मिश्रण की स्थिति उत्पन्न हुई है। ध्यातव्य है कि 'दुनिया' और 'सलाम' भले ही अरबी भाषा के शब्द हैं लेकिन इनका प्रयोग आज विभिन्न भारतीय भाषाओं में इतनी सहजता से किया जाता है कि इन शब्दों के प्रयोग के संदर्भ में कोड बॉरोइंग की स्थिति का स्पष्ट संकेत मिलता है। इन भाषिक प्रवृत्तियों से चाय जनगोष्ठी समाज के बहुभाषी होने का भी बोध होता है।

- 'लक्-लक् डान्टि/ चक्-चक् पात/ खाईते मधुर/ बिगे कपास': उत्तर- कुँहियार/ ईख[27]

वनस्पति संबंधी इस पहेली में गन्ने के बाह्य रूपाकार तथा उसके स्वाद को शब्दों के माध्यम से अभिव्यंजित किया गया है। इस पहेली में बड़े ही कौतुहलपूर्ण ढंग से उत्तर की अपेक्षा करते हुए गन्ने के लंबे-लंबे तने, चमकीले पत्ते का चित्रण किया गया है। इसका स्वाद अत्यंत मधुर और तृप्तिदायक होता है। उक्त पहेली में लक्-लक् और चक्-चक् में पूर्ण पुनरुक्ति है जो विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है। 'डान्टि', 'पात', 'बिगे' तीनों ही शब्द भोजपुरी भाषा के हैं जिनका अर्थ क्रमशः शाखा, पत्ता और फेंकना (क्रिया) है। ध्यातव्य है कि पात शब्द असमिया भाषा में भी पत्ते के लिए प्रयुक्त होता है। यद्यपि 'डान्टि' शब्द भोजपुरी का है किन्तु इसका असमिया सादरी में निम्न कोडवत् प्रयोग हुआ है। इसी तरह 'खाईते' बांग्ला की क्रिया है जो चलंत भाषा (निम्न कोड) में प्रयुक्त होता है। साधु भाषा (उच्च कोड) में यही 'खेते' उच्चरित होगा। अतः इन दोनों ही स्थानों पर भाषाद्वैत की स्थिति को हम देख सकते हैं। 'मधुर' और 'कपास' शब्द हिंदी के हैं। 'डान्टि' और 'पात' प्रयुक्तियाँ हैं। इस पहेली में सादरी भाषा के वाक्य में बांग्ला, हिंदी, भोजपुरी तथा असमिया भाषा के शब्दों के प्रयोग के कारण कोड-मिश्रण, भाषा के निम्न कोड के प्रयोग के कारण भाषाद्वैत तथा विभिन्न भाषाओं के समावेश के कारण बहुभाषिकता की स्थिति मौजूद है।

- 'एकटा बुढ़ा बोसे थाके/ हेंडसेक दिलेइ बोमि कोरे': उत्तर- टिबेल/ चापाकल[28]

उक्त पहेली में चापाकल को सांकेतिक अर्थ में प्रस्तुत किया गया है। इसका अभिधार्थ है कि एक वृद्ध व्यक्ति बैठा हुआ है जिससे हाथ मिलाने पर तुरंत ही उल्टी करने लगता है। इसमें 'एकटा बुढ़ा बोसे थाके' यह

पूरी पंक्ति बांग्ला भाषा में है जो सादरी भाषा के वाक्य के साथ प्रयुक्त होकर यहाँ कोड-अंतरण की स्थिति उत्पन्न कर रही है। इसके अलावा 'हेंडसेक' शब्द अंग्रेजी का है तथा 'दिलेइ-बोमि-कोरे' ये तीनों शब्द असमिया भाषा के हैं जो कोड-मिश्रण को दर्शाते हैं। 'उल्टी' के लिए बांग्ला भाषा में भी 'बोमि' शब्द का प्रयोग होता है। यह शब्द मूलतः अंग्रेजी के 'vomitting' शब्द का संक्षिप्त रूप है। 'बोसे थाके', 'बोमि कोरे' संयुक्त क्रियाएँ हैं। लगभग सभी भारतीय भाषाओं में संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग एक औसत विशेषता है।

- 'लाईट रोकोम झापाक-झुपुक ज्वले/ पोखी नोहोय पाखि आसे/ दिने लुकाई थाके राते इंजोर कोरे': उत्तर- भग्जोग्नी/ जुगनू[29]

प्रस्तुत पहेली का अभिधार्थ है: वह एक ऐसा जीव है जो पक्षी नहीं है किन्तु उसके पंख हैं। प्रकाश (लाईट) की तरह जगमगाता है। दिन में कहीं छिपकर रहता है परंतु रात्रि के समय उजाला करता है। इस पहेली के माध्यम से अँधेरे में जुगनुओं के टिमटिमाना तथा मानव मन का सहसा उसकी ओर आकर्षित हो जाने का संकेत मिलता है। इस पहेली में 'लाईट' (प्रकाश) शब्द अंग्रेजी, 'ज्वले' (जलना क्रिया), 'लुकाई' (छिपना), 'थाके' (रहना) और 'कोरे' (करना) शब्द असमिया, 'राते' (रात में), 'लुकाई' (छिपना) और 'इंजोर' (उजाला) शब्द भोजपुरी के हैं। ये सभी कोड-मिश्रण की स्थिति को दर्शाते हैं। 'पोखी नोहोय पाखि आसे' यह पूरी पंक्ति असमिया भाषा की है जो सादरी भाषा के वाक्यों के साथ उपस्थित होकर कोड-अंतरण की स्थिति को उत्पन्न करती है। झापाक-झुपुक में आंशिक पुनरुक्ति है। कुलमिलाकर यहाँ कोड-मिश्रण, कोड-अंतरण, पुनरुक्ति के अलावा बहुभाषिकता की स्थिति मौजूद है।

- 'आलि-आलि जाते रहि/ आलि में पाइलि/ नाई चाबोलि नाई गिललि/ सिधाई सिधाई खाइलि': उत्तर- ठेंस/ ठेस[30]

अक्सर बड़े-बुजुर्ग यह कहते हैं कि 'ठोकर खाकर अक्ल आती है'। अर्थात् व्यक्ति जीवन में अपनी गलतियों से प्राप्त अनुभव से अधिक सीखता है। प्रस्तुत पहेली में इसी बात की ओर संकेत किया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ यह है कि रास्ते में जाते हुए एक ऐसी वस्तु मिली जिसे न ही चबाया गया न निगला गया। सीधे-सीधे खाया गया। इस पहेली में 'आलि-आलि' और 'सिधाई-सिधाई' में पूर्ण पुनरुक्ति है जिसका प्रयोग क्रमशः प्रत्येक और क्रिया विशेषण के संदर्भ में हुआ है। 'जाते' (जाना), 'रहि' (रहना), 'पाइलि' (पाना) तथा 'खाइलि' (खाना) शब्दों में भोजपुरी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है। इन शब्दों को भोजपुरी का निम्न कोड कहा जा

सकता है। 'सिधाई-सिधाई' (सीधे-सीधे) तथा 'चाबोलि' (चबाना) में हिंदी का निम्न कोड दृष्टव्य है। 'गिललि' असमिया- क्रिया रूप है जिसका अर्थ 'निगलना' है। बागानिया भाषा में इस शब्द का निम्न कोड प्रयोग हुआ है। ग़ौरतलब है कि इस पहेली में जाना, रहना, पाना, चबाना, निगलना, खाना आदि सभी क्रिया रूपों का प्रयोग हुआ है अतः इन्हें क्रियात्मक प्रयुक्तियों के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है। कुलमिलाकर यहाँ आधार भाषा सादरी के वाक्यों में हिंदी, असमिया, भोजपुरी, आदि भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के कारण कोड-मिश्रण, भाषा के निम्न कोडों के प्रयोग के कारण भाषाद्वैत के साथ ही इसमें प्रयुक्ति और पुनरुक्ति की स्थिति भी है।

- 'बोगा साहाबेर काला टोपी/ राग उठलेई घूसा मारे ज्वले निजेई': उत्तर- शालाई काठि/ माचिस की तिली[31]

प्रस्तुत पहेली में माचिस की छोटी-सी तिली का बड़े ही वैचित्र्यपूर्ण ढंग से वर्णन किया गया है। यह कहा गया है कि गोरे साहब की काली टोपी है/ जो क्रोधावेश में मुक्का मारकर स्वयं ही जलने लगती है। उक्त पहेली में 'बोगा' (सफेद/ गोरा) शब्द असमिया भाषा का, 'टोपी' हिंदी भाषा का शब्द है। 'राग उठलेई' (क्रोधित होना) बांग्ला शब्द हैं। 'ज्वले' (जलना) और 'निजेई' (स्वयं) ये शब्द असमिया और बांग्ला दोनों ही भाषाओं में व्यवहृत होने वाले शब्द हैं। 'घूसा' शब्द का असमिया, बांग्ला, भोजपुरी आदि भाषाओं में प्रयोग होता है जिसका अर्थ है 'मुक्का'। इस तरह ये सभी शब्द कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति के कारक हैं। 'राग उठलेई घूसा मारे ज्वले निजेई' इस पंक्ति में टॉपिकीकरण की स्थिति है। वाक्य की सामान्य संरचना के अनुसार यह पंक्ति 'राग उठलेई घूसा मारे निजेई ज्वले' के रूप में होनी चाहिए। यहाँ 'ज्वले' क्रिया पर बल देने के लिए उसे वाक्य के अंत में न रखकर 'निजेई' से पहले रखा गया है।

- 'हातीर दाँत लांबा पात/ जे बुझते नाई पारे कुकुरेर जात': उत्तर- मूला[32]

कृषि क्षेत्र से संबंधित इस पहेली का अभिधार्थ है: उसके हाथी के तरह दाँत हैं और लंबे-लंबे पत्ते हैं। जो इसे नहीं पहचान पाएगा वह कुत्ते की जात है। आशय यह है कि मूली का सेवन सेहत के लिए फायदेमंद होता है। इसीलिए लगभग सभी लोग इसे खाते हैं। अतः संकेत देने भर से इसके बारे में अंदाजा लगा लेने की अपेक्षा की गयी है। प्रस्तुत पहेली में 'हाती' तथा 'कुकुर' असमिया और बांग्ला में प्रयुक्त शब्द है जिसके लिए हिंदी में 'हाथी' और 'कुत्ता' शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। 'पात' (पत्ता) असमिया और भोजपुरी का शब्द है तथा 'बुझते' (समझना) बांग्ला भाषा की क्रिया है। ये सभी कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति के

सूचक हैं। इसमें 'लांबा' और 'जात' ये दोनों शब्द लंबा तथा जाति शब्द के निम्न कोड हैं। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति है।

- 'बारो फुटेर दीघोल गाछ/ बिना कुमार के कलस/ बिना बरषा के पानी': उत्तर- नारिकल/ नारियल[33]

इस पहेली का अर्थ है बारह फूट के लंबे पेड़ में कलश/घड़े में पानी टंगा हुआ है किन्तु वह घड़ा किसी कुम्हार द्वारा निर्मित नहीं है और न ही उसमें वर्षा का जल संचित है। अर्थात् यहाँ सांकेतिक तरीके से नारियल की ओर इंगित किया गया है। ध्यातव्य है कि चाय जनगोष्ठी में भी कुम्हार/ कुमार/ कुंभकार जाति के लोग मिट्टी के शिल्प-निर्माण से जुड़े होते हैं। इस पहेली में चाय जनगोष्ठी में सामाजिक स्तर-भेद को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। उपर्युक्त पहेली में 'दीघोल' (लंबा) शब्द असमिया का, 'गाछ' (पेड़) शब्द भोजपुरी का तथा 'बिना' हिंदी का शब्द है। इसके अलावा 'कुमार' शब्द बागानिया भाषा में 'कुम्हार' के लिए प्रयुक्त होता है। 'कलस' (कलश) और 'बरषा' (वर्षा) में भाषा विकल्पन और भाषाद्वैत की स्थिति दृष्टव्य है। 'कलस' में 'श' के स्थान पर 'स' का प्रयोग हुआ है तथा 'वर्षा' के स्थान पर 'बरषा' का प्रयोग भाषा के निम्न कोड के प्रयोग को द्योतित करता है। अर्थात् यहाँ कोड-मिश्रण, भाषाद्वैत, भाषाई विकल्पन तथा बहुभाषिकता की स्थिति को हम देख सकते हैं।

- 'छागोल नोहोय लांबा दाड़ि/ माइकी नोहोय मेख्ला पिंधे': उत्तर- मुसलमान/ मुस्लिम[34]

उक्त पहेली में असम की संस्कृति के साथ ही धार्मिक विषमता का आभास मिलता है। मुस्लिम समुदाय के पुरुषों की वेश-भूषा का उल्लेख करते हुए यह कहा गया है कि इस समाज के पुरुष लंबी दाढ़ी रखते हैं तथा लुंगी पहनते हैं। इसमें दाढ़ी लिए संकेत के तौर पर बकरे की दाढ़ी तथा लुंगी के लिए असमिया समाज की महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले जातीय वस्त्र मेखेला का उल्लेख किया गया है। प्रस्तुत पहेली में प्रयुक्त शब्दों में 'छागोल' (बकरा) शब्द बांग्ला का है तथा 'नोहोय' (नहीं) शब्द असमिया का है। 'दाड़ि' (दाढ़ी) असमिया और बांग्ला दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त होने वाला शब्द है। सादरी भाषा के वाक्य में प्रयुक्त ये सभी भिन्न भाषा के शब्द कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता को दर्शाते हैं। 'माइकी नोहोय मेख्ला पिंधे' यह असमिया वाक्य है जिसमें टॉपिकीकरण के साथ-साथ कोड-अंतरण को भी देख सकते हैं। इस वाक्य की सामान्य संरचना कुछ

इस प्रकार होगी- 'मेख्ला पिंधे माइकी नोहोय'। इसके अतिरिक्त 'लांबा' और 'मेख्ला' शब्द क्रमशः 'लंबा' तथा 'मेखेला' के निम्न कोड रूप हैं। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति है।

- 'दुर्बल पहरा सबल चोर/ ऐ पहरार हात नाई गोड़/ राजा बोले सर्वनाश होल्यो / चोर किन्तु भितरे नाई गेलो': उत्तर- सीता हरण[35]

प्रस्तुत पहेली रामायण के प्रसंग से संबंधित है। इसमें सीता-हरण की परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए लक्ष्मण रेखा को दुर्बल पहरा कहा गया है कारण कि लक्ष्मण के पहरे के बावजूद रावण जैसा कपटी सबल चोर देवी सीता का छलपूर्वक हरण करने में सफल रहा। यह बात जरूर है कि रावण ने उस पहरे को भेद कर पर्णकुटी में प्रवेश नहीं किया। देवी जानकी के हरण के पश्चात् श्रीराम के दुःख की कोई सीमा न थी। वे अत्यंत क्रोधित होकर देवी को सम्मानपूर्वक लौटाने हेतु चेतावनी देते हैं और कहते हैं कि ऐसा नहीं करने पर रावण सहित लंका नगरी को सर्वनाश से कोई नहीं बचा सकता। इस तरह की पौराणिक कथाओं पर आधारित पहेलियों के प्रचलन से एक बात तो स्पष्ट हो जाती है कि रामायण, महाभारत जैसे धार्मिक ग्रंथों में निहित मूल्यों को चाय श्रमिक समाज भी आत्मसात कर नैतिक उत्थान की दिशा में अग्रसर हो रहा है। उपर्युक्त पहेली में 'दुर्बल' और 'सबल' संस्कृत भाषा में प्रयुक्त होने वाले उच्च कोड के शब्द हैं। 'पहरा', 'सर्वनाश', 'चोर' हिंदी के शब्द हैं, 'हात' (हाथ) और 'गोड़' क्रमशः असमिया और भोजपुरी के शब्द हैं। 'होल्यो' और 'गेलो' ये दोनों ही शब्द बांग्ला भाषा के क्रमशः उच्च कोड और निम्न कोड रूप हैं। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति है। 'चोर किन्तु भितरे नाई गेलो' पंक्ति को बागानिया भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना के अनुसार 'किन्तु चोर भितरे नाई गेलो' के रूप में होना चाहिए। यहाँ 'चोर' पर बल देने के लिए उसे वाक्यारंभ में रखा गया है। अतः इस पहेली में टॉपिकीकरण की स्थिति है। इसके अतिरिक्त आधार भाषा सादरी के वाक्यों में संस्कृत, बांग्ला, हिंदी, असमिया तथा भोजपुरी के शब्दों का प्रयोग होने के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की प्रवृत्ति स्पष्टतः दृष्टव्य है। साथ ही इस पहेली की भाषा के आधार पर हम यह भी कह सकते हैं कि चाय जनगोष्ठी समाज एक बहुभाषी समाज है। इसके लोक साहित्य में भाषाई सम्मिश्रण की स्थिति सहज ही दिखायी देती है।

- 'हमहमाये आला बुड़ी/ डांगल दुकान धरे/ तिनेर माथाई बसाई देखे/ पेट खलखल करे/ अग्नि कुंडे बसे हामि/ ताई'त करि ध्यान/ मासि-पिसि सबाई खुशी/ दिले हामार ज्ञान': उत्तर- चूल्हा और महिला बावर्ची[36]

किसी भी परिवार में गृहणियाँ ही अमूमन सभी सदस्यों का ख्याल रखती हैं। परिवार की ख़ुशी के लिए वे हर संभव प्रयास करती हैं। इस पहेली में किसी भी सामान्य गृहणी की दिनचर्या में आने वाली चुनौतियों का उल्लेख किया गया है जिसे पारिवारिक जिम्मेदारियों का नाम देकर नज़रन्दाज कर दिया जाता है। महिलाएँ अपना अधिकतर समय रसोई में बीताती हैं। इनमें भी विशेषकर चाय श्रमिक महिलाओं की बात की जाए तो वे एक तरफ कड़ी धूप में बागानों में श्रम करती हैं। और, दूसरी तरफ घर-परिवार के लिए चूल्हे के नजदीक बैठकर खाना बनाती हैं। ये महिलाएँ संघर्ष की दोहरी कसौटी पर अपनी खुशियाँ तलाशती हैं। उक्त पहेली में 'बुड़ी' शब्द बांग्ला भाषा का है। हिंदी तथा असमिया भाषा में इसी शब्द के लिए 'बूढ़ी' शब्द प्रचलित है। 'दुकान', 'पेट', 'खुशी', 'अग्नि कुंड', 'ध्यान', 'ज्ञान', 'दिल' आदि शब्द हिंदी के हैं। हालाँकि 'अग्निकुंड', 'ध्यान' तथा 'ज्ञान' शब्द का संस्कृत में भी प्रयोग होता है। 'माथा' (सिर) बांग्ला तथा भोजपुरी दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं और 'बसे' (बैठना) बांग्ला क्रिया-रूप है। सादरी भाषा के वाक्य में प्रयुक्त होकर ये सभी शब्द कोड-मिश्रण की स्थिति को दर्शाते हैं। 'खलखल' शब्द में पूर्ण पुनरुक्ति है। 'अग्नि कुंड', 'ध्यान', 'ज्ञान' ये तीनों शब्द हिंदी में तत्सम प्रधान तथा उच्च कोड के हैं अतः इनका प्रयोग यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति का सूचक है। 'मासि-पिसि' बांग्ला भाषा की रिश्ते-नाते की शब्दावली है जिसका अर्थ है 'मौसी और बुआ'। 'अग्नि कुंडे बसे हामि' तथा 'दिले हामार ज्ञान' पंक्ति को सामान्य भाषा-व्यवस्था के अनुरूप 'हामि अग्नि कुंडे बसे', तथा 'हामार दिले ज्ञान' होना चाहिए। अतः यहाँ टॉपिकीकरण की स्थिति है। 'अग्नि कुंडे' और 'दिले' पर अतिरिक्त बल देने के लिए उन्हें वाक्यारंभ में रखा गया है। 'मासि-पिसि सबाई खुशी' यह प्रमुख रूप से बांग्ला भाषा की पंक्ति है जो सादरी के वाक्य के साथ प्रयुक्त होकर कोड-अंतरण की स्थिति को दर्शाती है।

- 'बुढ़ाकाले सिधा हामि/ जोवान काले बाँका/ राजा परजा सिझाई खाय/ हाँय कपालेर लेखा': उत्तर- ढेकिया साग[37]

अक्सर चाय जनगोष्ठी के लोकसाहित्य में ढेकिया साग/ शाक (आयरन और पोटैशियम से युक्त एक विशेष प्रकार की वनस्पति जिसे अंग्रेजी में 'fiddle head fern' कहा जाता है) का उल्लेख मिलता है। यह देखा जाता है कि चाय श्रमिक बागानों से श्रम करके जब घर लौटते हैं तो जंगलों से ढेकिया तोड़कर लाते हैं। इनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण रोज साग-सब्जी खरीदकर खाना इनके लिए संभव नहीं होता है। अतः शरीर में पौष्टिक तत्वों की आपूर्ति के लिए ढेकिया, कलमी आदि अनेक स्थानीय वनस्पतियों को आमतौर पर अपनी खाद्य-सामग्री में शामिल कर लेते हैं। उपर्युक्त पहेली में इसी ढेकिया साग का वर्णन करते हुए कहा

गया है कि ढेकिया साग अपनी कोमल अवस्था में टेढ़ा व घुमावदार होता है लेकिन ज्यों-ज्यों समय बीतता है यह साग परिपक्व, कठोर और सीधा हो जाता है। एक विशेष बात ध्यान देने योग्य है कि यद्यपि ढेकिया असम के जंगलों में अथवा बाजारों में अत्यंत सस्ते दरों पर मिल जाता है किन्तु इसे आर्थिक दृष्टि से समृद्ध तथा दरिद्र सभी लोग खाते हैं। इस पहेली में सिधा, जोवान, परजा शब्द हिंदी के 'सीधा', 'जवान' (वयस्क) और 'प्रजा' शब्द के निम्न कोड हैं जो सादरी भाषा में प्रयुक्त होकर भाषाद्वैत की स्थिति को दर्शा रहे हैं। इसी तरह बाँका (टेढ़ा) तथा लेखा (लिखा/ विधि का विधान) शब्द बांग्ला भाषा के हैं। इसमें प्रयुक्त सिझाई शब्द भोजपुरी, असमिया तथा बांग्ला की क्रिया 'सिझाना' (पकाना) के समानार्थी है। खाय और कोपाल ये शब्द असमिया तथा बांग्ला दोनों भाषाओं में क्रमश 'खाना' तथा 'नसीब' के अर्थ में व्यवहृत होते हैं। कुलमिलाकर हम यह कह सकते हैं कि इस पहेली में भाषाद्वैत के अतिरिक्त बांग्ला, असमिया, भोजपुरी तथा हिंदी आदि भाषाओं के शब्द-प्रयोग से कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति दिखाई देती है। 'बुढ़ाकाले सिधा हामि' में टॉपिकीकरण की स्थिति है। यह वाक्य बागानिया भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना के अनुसार 'हामि सिधा बुढ़ाकाले' के रूप में होना चाहिए लेकिन यहाँ 'बुढ़ाकाले' पर बल देने के लिए उसे वाक्यारंभ में कर्ता के नियत स्थान पर रखा गया है।

- 'ढाँक बाजे ढोल बाजे/ धामसा बाजाय राणी/ मरा गांगे ढेउ उठे/ सात सागरर पानी/ हेलका पानी झरे पानी/ धासना भांगे जाय/ खालेर माझे खाल भराबा/ तखन पानी पाय': उत्तर- बरषुण/ वर्षा[38]

प्रस्तुत पहेली में भीषण गर्मी के बाद वर्षा-जल के धाराप्रवाह से समूची पृथ्वी के प्राणियों की तृप्ति को दर्शाया किया गया है। यहाँ चाय जनगोष्ठी के लोक वाद्यों (ढाँक, ढोल, धामसा) की ध्वनि को बिजली के गरजने की अनुकरणात्मक ध्वनि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। स्वच्छ आकाश में जब अचानक काली घटा उठती है तो वह दृश्य अत्यंत मनमोहक तथा सुकून देने वाला होता है। इसके बाद सात सागर के पानी अर्थात् मूसलाधार बारिश से सभी वनस्पतियों तथा प्राणियों को जैसे एक नया जीवन मिल जाता है। इस पहेली में ढाँक, ढोल और धामसा तीनों ही चाय जनगोष्ठी के लोकवाद्य हैं। इन्हें संगीत क्षेत्र की वाद्ययंत्र संबंधी प्रयुक्ति कह सकते हैं। 'धामसा बाजाय राणी' पंक्ति की सामान्य संरचना 'राणी धामसा बाजाय' के रूप में होनी चाहिए लेकिन यहाँ 'धामसा' पर ज़ोर देने के लिए उसे कर्ता के स्थान पर वाक्यारंभ में रखा गया है। अतः यहाँ टॉपिकीकरण की स्थिति है। बाजाय (बजाना) और भांगे (टूटा) बांग्ला भाषा के शब्द हैं तथा ढेउ तथा खाल शब्द असमिया के हैं जिसका अर्थ क्रमशः 'लहर' और 'गड्ढा' है। ये सभी भिन्न भाषा के शब्द सादरी भाषा

के वाक्य में प्रयुक्त होकर कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त राणी, मरा, गांगे तथा झरे ये सभी क्रमशः हिंदी के 'रानी', 'मृत', 'गंगा' और 'झड़ना' शब्द के निम्न कोड हैं। वाक्य में निम्न कोड का प्रयोग भाषाद्वैत की स्थिति का सूचक है।

- कूदाईते नाई पारि/ आसे लंबा भड़/ माथाई आसे खड़ग हामार/ ना होय बोनेर गड़/ लंबा-लंबा मोछ आसे/ ना होय शहजादा/ पानीये हामि बास कोरि/ गाये नाई कादा/ माछेर नाम धोरि हामि/ किंतु आसे ठेंग/ काश-मगर नहीं हामि/ नहीं पानीर बेंग': उत्तर- चिंग्ड़ी माछ/ झींगा मछली[39]

असम में खान-पान में मछलियों की कुछ प्रजातियाँ खूब पसंद की जाती हैं। इनमें से एक है झींगा मछली। चाय जनगोष्ठी में भी चिंग्ड़ी माछ यानी झींगा मछली बेहद लोकप्रिय है। प्रस्तुत पहेली में कौतूहलपूर्ण ढंग से झींगा मछली के शारीरिक गठन को रेखांकित करते हुए उसकी विशेषताएँ बतायी गयी हैं। इस पहेली का अभिधार्थ है: 'कूद नहीं सकता किंतु लंबे पैर हैं, सिर पर खड़ग है लेकिन जंगल का गेंडा नहीं है, लंबी-लंबी मूँछें हैं किन्तु वह कोई शहजादा नहीं है। पानी में रहनेवाला है लेकिन शरीर पर कोई गंदगी (कीचड़) नहीं है। मछली की प्रजाति है मेरी, कछुआ-मगरमच्छ अथवा मेंढक नहीं है परंतु लंबी टाँगे हैं।' इस पहेली में 'लंबा', 'खड़ग', 'नहीं', 'मगर' ये सभी शब्द हिंदी के हैं। 'कूदाईते' शब्द हिंदी के 'कूदना' क्रिया का निम्न कोड है। कई बार बांग्ला भाषा में इस शब्द का प्रयोग देखा जाता है। इसके अलावा'माथाई' (सिर), 'ठेंग' (टाँग), 'बेंग' (मेंढक), 'मोछ' (मूँछ) ये सभी शब्द बांग्ला के ही हैं। ध्यातव्य है कि 'माथा' और 'मोछ' शब्द भोजपुरी भाषा में भी प्रयुक्त होते हैं। 'मोछ' शब्द को हिंदी के 'मूंछ' शब्द का निम्न कोड कहा जा सकता है। 'शहजादा' शब्द फारसी भाषा है तथा 'गड़' और 'काछ/ कास' असमिया शब्द हैं जिनका हिंदी अर्थ क्रमशः 'गेंडा' और 'कछुआ' है। 'भड़' शब्द असमिया भाषा के 'भोरि' शब्द से प्रभावित है। यहाँ भाषा के निम्न कोड के प्रयोग के कारण भाषाद्वैत की स्थिति देखी जा सकती है। 'गाये नाई कादा' यह पंक्ति बांग्ला भाषा की है जो सादरी भाषा के वाक्य के साथ प्रयुक्त हुई है। अतः यहाँ कोड-अंतरण की स्थिति है। इस वाक्य में टॉपिकीकरण को भी हम सहज ही देख सकते हैं। इसके अलावा उक्त पहेली में कुछ और पंक्तियाँ हैं जिनमें टॉपिकीकरण की स्थिति है। मसलन, 'आसे लंबा भड़', 'माथाई आसे खड़ग हामार', 'ना होय बोनेर गड़', 'ना होय शहजादा', 'पानीये हामि बास कोरि', 'माछेर नाम धोरि हामि', 'किंतु आसे ठेंग', तथा 'काश-मगर नहीं हामि'। सामान्य भाषा-व्यवस्था के अनुसार ये सभी पंक्तियाँ क्रमशः 'गाये कादा नाई', 'लंबा भड़ आसे', 'हामार माथाई खड़ग आसे', 'बोनेर गड़ ना होय', 'शहजादा ना होय', 'हामि पानीये बास कोरि', 'हामि माछेर नाम धोरि', 'किंतु ठेंग आसे',

तथा 'हामि काश-मगर नहीं' के रूप में होनी चाहिए। 'लंबा-लंबा' में पूर्ण पुनरुक्ति है। यहाँ 'लंबा' शब्द विशेषण के रूप में व्यवहार किया गया है। पैर, सर, मूँछ, टाँग आदि शारीरिक अंगों के उल्लेख को शरीर रचना विज्ञान की प्रयुक्तियों के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है। इस तरह इस पहेली में हिंदी, असमिया, बांग्ला, भोजपुरी आदि भाषाओं के भिन्न शब्दों के प्रयोग से कोड मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति उत्पन्न हुई है। कुछ शब्दों के निम्न कोड के प्रयोग से हम भाषाद्वैत की स्थिति को स्पष्टतः देख सकते हैं। अधिकाधिक वाक्यों में कुछ शब्दों पर विशेष बल देने हेतु उन शब्दों को नियत स्थान से हटाया गया है जिससे टॉपिकीकरण की स्थिति उत्पन्न हुई है।

* ***बच्चों के गीत***

चाय जनगोष्ठी में बाल गीत को 'छवा खेला', 'छेना खेला' अथवा 'छेना-पोना गीत' कहा जाता है। असमिया में इसी को 'निचुकनी गीत' कहा जाता है। यहाँ 'छवा या छेना' का तात्पर्य अबोध बालक से है। हम सभी बालकों के स्वभाव से परिचित हैं। बाल-मनोजगत कल्पना के सागर में गोते लगाता है। इसीलिए लौकिक तथा अलौकिक जगत के उपमानों को लेकर बच्चों को बहलाने-फुसलाने अथवा सुलाने के लिए चाय जनगोष्ठी की महिलाएँ छवा गीत गाती हैं। ये गीत विस्मय, जिज्ञासा, कौतूहल, भय, आदि भावों से ओत-प्रोत होते हैं। इसके अलावा बच्चों के गीतों में खेलने के गीत भी शामिल हैं। बाल गीत अथवा छेना-पोना गीत के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं-

- पालने के गीत

"नाइ आसबिरे कुड़िया शियाल,
पिंजारा दिगे थाक
बाबूर माँ जलके गेछे
बाबूर काण काट।"[40]

बच्चों को सुलाना माताओं के लिए बेहद चुनौती भरा काम होता है। इसके लिए अक्सर माताएँ गीतों के माध्यम से कभी विस्मित करते हुए तो कभी डराकर अलग-अलग पैंतरे अपनाते हुए अपने शिशु को सुलाती हैं। उपर्युक्त गीत की पंक्तियों में इसी बात का उल्लेख है। माता अपने बच्चे को प्यार भरी थपकी से सुलाते हुए कहती है कि आलसी सियार तुम अपने पिंजरे में ही रहो। फिर ज्यों ही माता को लगता है कि उसका शिशु सोना

नहीं चाहता है। उस क्षण अपने शिशु को डराते हुए कहती है कि बाबू की माता पानी लेने गयी है सियार आकर बाबू का कान काट लो। चाय जनगोष्ठी में धूर्त, बदमाश आदि चारित्रिक विशेषताओं को दर्शाने के लिए सियार का उल्लेख मिलता है। इसीलिए बालगीतों में बच्चों के मन में विस्मय, भय, जुगुप्सा आदि भाव जागृत करने के लिए ऐसे प्रसंगों का ज़िक्र किया जाता है।

चाय जनगोष्ठी में प्रचलित इस लोरी में 'आसबि' (आना), 'दिगे' (तरफ), 'गेछे' (गया) शब्द बांग्ला भाषा के हैं। 'नाई' (नहीं), 'शियाल' (लोमड़ी), 'थाक' (रहो) आदि शब्द असमिया और बांग्ला दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं। 'जल', 'पिंजारा' और 'काट' ये तीनों शब्द हिंदी, बांग्ला, असमिया आदि कई भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त होते हैं। अर्थात् यहाँ सादरी भाषा के गीत में भिन्न भाषाओं के शब्दों का प्रयोग होने के कारण कोड-मिश्रण के साथ-साथ बहुभाषिकता की स्थिति भी दिखायी देती है। इसमें 'पिंजारा' शब्द 'पिंजरा' का निम्न कोड है। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थितियों को देख सकते हैं। 'कान' के लिए 'काण' लिखा जाना असमिया भाषा का प्रभाव है। असमिया में 'कान'/ 'काण'/ 'कर्न' आदि सभी शब्द कान के पर्यायवाची हैं। 'बाबू' तथा 'माँ' ये दोनों शब्द रिश्ते-नाते की संबोधन शब्दावली से संबंधित प्रयुक्तियाँ हैं।

बाल गीतों में लौकिक तथा अलौकिक जगत के तत्वों के साथ कल्पना का सामंजस्य मिलता है। बाल मनोविज्ञान में चाँद-सूरज आत्मीय चरित्र होते हैं। गीत की पंक्तियों में यथास्थान इन्हें मामा कहकर संबोधित किया जाता है। नीचे उद्धृत पंक्तियाँ चाँद, सूरज तथा तारे से संबंधित मिथकीय कथा के आधार पर निर्मित बालगीत है। वास्तविक जगत से कोसों दूर एक काल्पनिक कथा को आधार बनाकर माता चाँद से पूछती है कि तारे कहाँ गये? प्रत्युत्तर में चाँद कहता है की सूरज मामा की शादी हो रही है। तारे वहीं गये हैं। ऐसे ही बातों-बातों में बालक सो जाता है। और, माता कहती है कि लटिया ढेकिया अर्थात कोमल ढेकिया (एक जंगली उद्भिद जिसे कोमल अवस्था में विशेषकर चाय जनगोष्ठी में खाद्य के रूप में ग्रहण किया जाता है) अब सख्त हो गया है। और, हमारा नटखट बालक भी सो गया है। तात्पर्य यह है कि कोमल ढेकिया को जैसे सख्त होने में समय लगता है वैसे ही बच्चे को सुलाना भी समय साध्य है। यहाँ ढेकिया के माध्यम चाय जनगोष्ठी समाज के आम जनजीवन और खान-पान की शैली को दर्शाया गया है। चाँद, सूरज, तारे आदि के वर्णन के द्वारा बच्चों में कौतूहल का भाव जागृत करने का प्रयास किया गया है।

"चान्द' मामा! चान्द' मामा

तारा काँहा गेल?

सुरुज मामार शादी होइहे

तारा हुवा गेल!

चान्द' मामा! चान्द' मामा

तारा काँहा गेल?

सुरुज मामार चुमान बठिहे

तारा हुवा गेल!

चान्द' मामा! चान्द' मामा

तारा काँहा गेल?

सुरुज मामार मामा आसिहे

तारा हुवा गेल!

लटिया ढेकिया बुढ़ाई गेल

चान्द' मामा! चान्द' मामा

हामदेर बाबू घुमाइ गेल।"[41]

उद्धृत पंक्तियों में 'चान्द'' शब्द 'चाँद' के लिए प्रयुक्त हुआ है। यहाँ चान्दअ' उच्चारण के लिए असमिया सादरी की अ' ध्वनि प्रयुक्त हुई है। गीत की पंक्तियों में 'तारा', 'सादी', 'बुढ़ाई' (बुढ़ापा) ये सभी हिंदी के शब्द हैं। 'सादी' और 'काहाँ' शब्द क्रमशः 'शादी' तथा 'कहाँ' के निम्न कोड हैं। वैसे तो 'काहाँ' शब्द भोजपुरी में भी प्रयुक्त होता है। इसके अलावा 'गेल' (गया), 'सुरुज' (सूर्य), 'होइहे' (होगा), 'हुवा' (वहाँ) ये सभी भोजपुरी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। 'चुमान' भोजपुरी शब्द 'चुमावन' का निम्न कोड है जिसका तात्पर्य विवाह संस्कार में हल्दी, चावल आदि से की गयी विशेष रीति है। गीत में भाषा के निम्न कोडों का प्रयोग भाषाद्वैत की स्थिति को दर्शाता है। 'आसिहे' (आएंगे), 'घुमाई' (सोना) ये दोनों शब्द बांग्ला भाषा के हैं। अर्थात् उपर्युक्त पंक्तियों में हिंदी, असमिया, भोजपुरी, बांग्ला आदि भाषाओं के शब्दों का सादरी भाषा के गीत में प्रयोग के कारण कोड-मिश्रण की उपस्थिति है। साथ ही बहुभाषिकता की स्थिति भी सहज अनुमेय है। चाय जनगोष्ठी समाज की भाषा में विभिन्न भाषाओं के वैकल्पिक प्रयोग ने भाषाई विकल्पन की भी स्थिति पैदा की है। तारा, चान्द', सुरुज आदि खगोलीय प्रयुक्तियाँ हैं।

- खेलने के गीत

"आयरे छेना-पोनारा, माछ धरिते जाबो
माछेर काँटा पाये लाग्ले दलाय चापे जाबो
दलाय आछे कामरंगा खाते खाते जाबो।"[42]

बचपन में साथियों के साथ इधर-उधर पेड़ों पर चढ़ना, फल-मूल तोड़ कर खाना, तरह –तरह की शैतानियाँ करना आदि जीवन की अविस्मृत घटनाएँ होती हैं। हम सभी उम्र के इस पड़ाव से गुजरते हैं। उपर्युक्त गीत की पंक्तियाँ कुछ ऐसी ही नटखट हरकतों को चिन्हित करती हैं। चाय जनगोष्ठी के अधिकतर परिवारों में महिला और पुरुष दोनों ही बागानों में कार्यरत रहते हैं। इधर उनके बच्चे दिन भर खेल-कूद में अपना समय व्यतीत करते हैं। प्रस्तुत गीत की पंक्तियों से आशय है कि चाय श्रमिकों के बच्चे पोखर, तालाब आदि में मछली पकड़ने जाने हेतु एकत्रित होते हैं। उस दौरान उन्हें इस बात की भी चिंता रहती है कि मछली पकड़ने में काँटा चुभ जाने पर समस्या होगी। अतः सावधानी बरतना आवश्क होगा। यदि उस दौरान काँटा चुभ भी जाए तो चिंता की बात नहीं है। घर लौटने के दौरान हम कमरख तोड़ कर खाते-खाते आ जायेंगे। ध्यातव्य है कि जलीय जीवों में एक तरह का विष होता है। अतः मछली पकड़ने के दौरान काँटा चुभ जाने पर विष फैलने का खतरा होता है। उसी से बचने के लिए घरेलू उपचार के रूप में कमरख खाते हैं क्योंकि कमरख में औषधीय गुण होता है। यह इतना खट्टा होता है कि विष के असर को निष्क्रिय कर देता है। इस गीत के माध्यम से चाय श्रमिक समाज के आम जनजीवन और बच्चों की दिनचर्या को दर्शाया गया है। इन श्रमिकों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती। इसीलिए इनके बच्चे खुद ही दिन-भर में लकड़ी, खाद्य-सामग्री आदि का जुगाड़ करते हैं। बचपन से अभाव में जीते हुए ये बच्चे माता-पिता के बागान चले जाने के बाद स्वयं भी घर की मूलभूत जरूरतों की पूर्ति में लग जाते हैं। आनंद, हर्ष, खेल-कूद आदि के बहाने चाय श्रमिकों के ये बच्चे ढेकिया, कचु (अरबी) आदि खाने की चीजें तथा जलावन इकट्ठा करते हैं।

उपर्युक्त गीत की पंक्तियों में 'आयरे' (आओ), 'जाबो' (जाएंगे), 'पाये' (पैरों में), 'लागले' (लगने पर), 'खाते' (खाने), 'काम रांगा' (कमरख) शब्द बांग्ला भाषा के हैं। इसमें 'खाते' शब्द में भाषाद्वैत है। यह बांग्ला के 'खेते' का निम्न कोड है। इसके अलावा 'माछ' (मछली), 'दोलाय' (ठेले जैसी सवारी) बांग्ला तथा असमिया दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। असमिया क्रिया 'धरा/ धरि' (पकड़ना) को बागानिया भाषा में 'धरिते' (पकड़ने के लिए) शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है। 'काँटा' हिंदी शब्द है। 'छेना-पोना'

असमिया सादरी/ बागानिया भाषा में बच्चों के लिए व्यवहृत होता है। 'खाते खाते' में पूर्ण पुनरुक्ति है जो क्रिया विशेषण के रूप में यहाँ प्रयुक्त हुआ है। इसके अलावा वाक्य के स्तर पर देखें तो 'दलाय आछे कामरंगा खाते खाते जाबो' इस पंक्ति में 'आछे' क्रिया पर ज़ोर देने के लिए वाक्य-संरचना के अंतर्गत उसके नियत स्थान से स्थानांतरित किया गया है। सादरी भाषा की सामान्य वाक्य-व्यवस्था के अनुसार इस पंक्ति को 'दलाय कामरंगा आछे खाते-खाते जाबो' के रूप में होना चाहिए। अतः उक्त गीत की पंक्तियों में हिंदी, असमिया, बंग्ला, असमिया सादरी के शब्दों के प्रयोग से कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति को हम सहज ही देख सकते हैं।

"इछिक मिछिक दाँत किछ् किछ्
लोहा लति बेल पात
बाड़ीये आछे निम गाछ
निम झर-झर कोरे
सता सतिनेर बेटि
नित लड़ाई लागे
खाखड़ा-न-कुँचिया?"[43]

चाय जनगोष्ठी के चार या पाँच बच्चे गोलाकृति में एक साथ बैठकर दोनों हाथ आगे करके इस उद्धृत गीत को गाते हैं। ऐसे गीत किसी गंभीर अर्थ की प्रतीति नहीं करते अपितु मनोरंजन प्रधान होते हैं। इन गीतों में कुछ सार्थक तथा कुछ निरर्थक शब्दों का प्रयोग होता है। इस गीत का तात्पर्य है कि लोहे की लता और बेला का पत्ता है और घर के आँगन में नीम का पेड़ है। नीम के पेड़ के झर-झर करते ही सौतन की बेटी रोज झगड़ने लगती है। इस खेल-गीत को गाते हुए जिस बच्चे के हाथ पर गीत समाप्त होता है उससे 'खाखड़ा-न-कुँचिया' अर्थात् केकड़ा अथवा कुचिया मछली में से एक के चयन के लिए कहा जाता है। केकड़ा कहने वाला अपना बाँया हाथ तथा कुचिया कहने वाला बच्चा अपना दाँया हाथ सर पर रख लेता है।

इस खेल-गीत में 'लति' (लता), 'बाड़ीये' (आँगन में), 'गाछ' (पेड़), 'सातिन' (सौतन) ये सभी शब्द बंगला भाषा के हैं। इसके अतिरिक्त 'गाछ' शब्द पेड़ के लिए भोजपुरी में भी प्रयुक्त होता है। 'पात' भोजपुरी तथा असमिया भाषा में 'पत्ते' के लिए और 'आछे/आसे' का प्रयोग बांग्ला तथा असमिया में 'है' के अर्थ में होता है। 'नित' और 'लड़ाई' हिंदी के शब्द हैं। 'खाखड़ा' (केकड़ा) और 'कुँचिया' (कुचिया मछली) बागानिया

भाषा के शब्द हैं। सादरी भाषा के अंतर्गत उपर्युक्त भिन्न भाषाओं के शब्द-प्रयोग से यहाँ कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति का बोध होता है। 'इछिक मिछिक' अनुकरणात्मक शब्द हैं। 'किछ् किछ्' और 'झर-झर' में पूर्ण पुनरुक्ति है जो क्रमशः विशेषण और क्रिया-विशेषण के रूप में यहाँ प्रयुक्त हुआ है। 'बाड़ीये आछे निम गाछ' पंक्ति में टॉपिकीकरण है। यह पंक्ति बगानिया भाषा की सामान्य वाक्य-संरचना के अनुसार 'बाड़ीये निम गाछ आछे' के रूप में होना चाहिए। इस संपूर्ण गीत में 'लति', 'गाछ', 'पात', 'बेल', 'निम' (नीम) ये सभी वनस्पति संबंधी तथा 'खाखड़ा', 'कुँचिया' प्राणी संबंधी प्रयुक्तियाँ हैं।

"आटूल पाटूल डिंगला पाटूल/ डिंगला गेल हाट।
हाट बाजारे तेल नाई, निमख नाई/ दे बुढ़िया भात।।
आटूल पाटूल चिमला चाटूल/ दादा गेल हाट
आनबि दादा काँचा तेतूल/ पाका तेतूल/ दे भोजी भात।"[44]

बागानों के 'लेबर लाइन्स' में बच्चे अपने पैर पसारकर आपस में दाल, भात, भाजी-सब्जी आदि नाम रखते हुए खेल खेलते हैं। इसी दौरान उपर्युक्त गीत को गाया जाता है। इस गीत का शाब्दिक अर्थ है- 'कद्दू बाजार गया है/ बाजार में तेल-नमक कुछ भी नहीं है/ बुढ़िया भात दे/ भईया बाजार गया है/ कच्ची अथवा पक्की इमली कैसी भी हो ले आना/ भाभी भात दो।' इस गीत में 'डिंगला' (कद्दू), 'आनबि' (लाना), 'काँचा' (कच्चा), 'पाका' (पका हुआ), 'तेतूल' (इमली) आदि शब्द बांग्ला भाषा के हैं। 'निमख' (नमक) असमिया शब्द है तथा 'दादा' शब्द 'भईया' के लिए असमिया और बांग्ला दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त होता है। सादरी भाषा में इन भिन्न भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति है। 'गेल' तथा 'भोजी' दोनों में भाषाद्वैत की स्थिति है। ये दोनों शब्द क्रमशः भोजपुरी भाषा के 'गईल' और 'भौजी' के निम्न कोड हैं। 'डिंगला', 'तेल', 'निमख', 'तेतूल', 'भात' आदि सभी खाद्य-सामग्री संबंधी प्रयुक्तियाँ हैं। 'हाट-बाजार' में आधिक्यबोधक पुनरुक्ति है क्योंकि 'हाट' हिंदी का और 'बाजार' फारसी का शब्द है और दोनों एक ही अर्थ को द्योतित कर रहे हैं। इसी तरह से 'डिंगला गेल हाट', 'दे बुढ़िया भात', 'दादा गेल हाट' तथा 'दे भोजी भात' पंक्तियों में टॉपिकीकरण की स्थिति को हम देख सकते हैं। ये पंक्तियाँ असमिया सादरी की सामान्य भाषिक-व्यवस्था के अनुरूप क्रमशः 'डिंगला हाट गेल', 'बुढ़िया भात दे', 'दादा हाट गेल' तथा 'भोजी भात दे' के रूप में होना चाहिए लेकिन पहले वाक्य में 'गेल' पर, दूसरे वाक्य में 'दे' पर, तीसरे वाक्य में 'गेल' पर तथा चौथे वाक्य में पुनः 'दे' क्रिया पर बल देने के लिए उन्हें उनके नियत स्थान से स्थानांतरित किया गया है।

उपर्युक्त सभी विवेचनों के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि चाय जनगोष्ठी में लोक सुभाषितों का अक्षय भंडार है। लोकोक्तियों, मुहावरों तथा पहेलियों से इस समन्वित समाज की सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशिष्टता का सहज बोध हो जाता है। इस समुदाय में भी अन्य समाज की ही भाँति बालकों के लिए नाना प्रकार के गीत प्रचलित हैं। इनमें पालने के गीतों को अधिकतर महिलाएँ ही गाती हैं। खेल-कूद के गीतों में बालकों का चंचल मन, उत्साह आदि उभरकर आता है। ध्यातव्य है कि भिन्न जाति-गोष्ठी के समन्वय के कारण चाय जनगोष्ठी के प्रकीर्ण साहित्य की भाषा में हिंदी, भोजपुरी, बांग्ला, असमिया, अंग्रेजी, उड़िया आदि भाषाओं के शब्द सम्मिश्रित हैं। इसी कारण यथास्थान कोड-मिश्रण, कोड-अंतरण, कोड-बॉरोइंग, भाषाद्वैत, बहुभाषिकता तथा भाषाई विकल्पन की स्थिति अनायास ही दिखती है। इस साहित्य में विभिन्न भाषाओं की शब्दावली के साथ ही भिन्न-भिन्न वार्ता क्षेत्रों की प्रयुक्तियाँ भी व्यवहृत हुई हैं। इसके अतिरिक्त पुनरुक्तियों और वाक्य के किसी विशेष शब्द पर बल देने अथवा तुकबंदी हेतु टॉपिकीकरण का भी प्रयोग भी सहज ही दृष्टव्य है।

संदर्भ सूची-

1. तथ्यदाता: श्री गगन मिर्धा, दिनजॉय चाह बागीचा, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 20.09.2022)
2. वही
3. वही
4. तथ्यदाता: श्री मनोज पानिका, खेरजान चाह बागीचा, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 24.09.2022)
5. वही
6. तथ्यदाता: श्रीमती सोमारी ताँती, शियालकाटी चाह बागीचा, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 04.11.2022)
7. वही
8. वही
9. वही
10. वही
11. तथ्यदाता: श्री मनोज पानिका, खेरजान चाह बागीचा, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 24.09.2022)
12. तथ्यदाता: श्री बुधुवा गोराइत, बहुबोर चाह बागीचा, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 04.11.2022)
13. तथ्यदाता: श्रीमती अनीता एल.पी., खुमटाई चाह बागीचा, चराईदेव (दिनांक: 24.11.2022)
14. तथ्यदाता: श्री मंगलू कर्मकार, पानीतोला चाह बागीचा, तिनसुकिया (दिनांक: 12.11.2022)
15. वही
16. वही
17. तथ्यदाता: श्री बुधुवा गोराइत, बहुबोर चाह बागीचा, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 04.11.2022)
18. वही
19. तथ्यदाता: श्री शिबू खड़िया, कचूजान चाह बागीचा, तिनसुकिया (दिनांक: 01.11.2022)
20. वही
21. वही
22. तथ्यदाता: श्री गगन मिर्धा, दिनजॉय चाह बागीचा, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 20.09.2022)
23. तथ्यदाता: श्री सचिन खड़िया, बोलोमा चाह बागीचा, जोरहाट (दिनांक: 10.11.2022)
24. वही

25.

26. तथ्यदाता: श्री तिलेश्वर घटवार, हालमिरा चाह बागीचा, गोलाघाट (दिनांक: 11.11.2022)

27. वही

28. वही

29. वही

30. तथ्यदाता: श्रीमती रीता गोवाला, दुलियाबाम चाह बागीचा, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 22.10.2022)

31. वही

32. वही

33. वही

34. वही

35. वही

36. वही

37. तथ्यदाता: श्रीमती सारिका गोवाला, जोकाई टी इस्टेट, तिनसुकिया (दिनांक: 14.11.2022)

38. वही

39. वही

40. तथ्यदाता: श्रीमती मूलेश्वरी कुर्मी, हिलिखागुड़ी गाँव, तिनसुकिया (दिनांक: 08.01.2020)

41. वही

42. तथ्यदाता: श्रीमती साबिता राजोवार, नाजिरा, शिवसागर (दिनांक: 24.12.2021)

43. तथ्यदाता: श्री भद्र राजोवार, नाजिरा, शिवसागर (दिनांक: 22.12.2021)

44. तथ्यदाता: श्रीमती सोमारी ताँती, शियालकाटी चाह बागीचा, डिब्रूगढ़ (दिनांक: 04.11.2022)

5.3 मंत्र साहित्य

'मंत्र' लोक में प्रचलित कुछ विशिष्ट क्रियाओं की शाब्दिक अभिव्यक्ति होते हैं। इन मंत्रों की वैचारिकी में तार्किकता बिल्कुल भ्रामक होती है। मंत्रों में प्रयुक्त सभी शब्दों का सटीक अर्थ ज्ञात कर पाना दुष्कर है क्योंकि इन मंत्रों में कुछ सार्थक व निरर्थक शब्द और ध्वनियों का प्रयोग होता है। इसी कारण मंत्रों में गोपनीयता बनी रहती है। भिन्न क्षेत्रों व संदर्भों में व्यवहृत मंत्रों को मंत्र साहित्य के अंतर्गत समाहित किया जाता है। दरअसल, मंत्र साहित्य के अंतर्गत वे सभी मंत्र सम्मिलित हैं जो देवी-देवताओं के आह्वान तथा आराधना के साथ-साथ नाना रोग-व्याधियों के उपचार हेतु प्रयोग किये जाते है। मंत्र साहित्य मूलतः लोक विश्वास से जुड़ा होता है। ईश्वर की पूजा-अर्चना में प्रयोग किये गये मंत्रोच्चार में सभी प्राणियों में सहृदयता, सुख-समृद्धि की कामना निहित होती है परंतु कुछ मंत्रों को तंत्र साधना से सिद्ध किया जाता है। इनका प्रयोग विभिन्न रोगों के उपचार, स्वप्न दोष, नजर दोष, भूत-प्रेत से बचाव, वशीकरण आदि के लिए किया जाता है। प्राचीन काल में तंत्र-मंत्र का प्रचलन बहुताधिक देखा जाता था किंतु शिक्षा के प्रचार-प्रसार तथा विज्ञान के विकास से तंत्र-साधना में कमी आयी है। फिर भी ऐसा नहीं कहा जा सकता कि लोक में तंत्र-मंत्र का प्रभाव एवं प्रचलन खत्म हो गया है। आज भी चाय जनगोष्ठी में तंत्र-मंत्र को प्राथमिकता दी जाती है। इस समाज में किसी भी अप्रिय घटना के पीछे भूत-प्रेत, डायन आदि नकारात्मक शक्तियों का प्रभाव माना जाता है। इसीलिए इस समाज में लोग ओझा-तांत्रिक, डाकिनी आदि के पास जाकर जंगली औषधियों तथा मंत्रोच्चार से अपनी समस्याओं के निवारण हेतु तत्पर रहते हैं। ग़ौरतलब है कि चाय जनगोष्ठी में प्रचलित मंत्रों में अन्य जाति व आदिवासी समुदायों के अतिरिक्त स्थानीयता का प्रभाव भी स्पष्टतः देखा जा सकता है। पूर्वोत्तर राज्य असम अति प्राचीन काल से ही तंत्र साधना हेतु प्रसिद्ध रहा है। सर्वविदित है कि मायंग और शक्तिपीठ कामाख्या में ओझा, योगी, औघड़ आदि अपने तंत्र-मंत्र को सिद्ध करते हैं। अतः चाय जनगोष्ठी में प्रचलित मंत्रों में भी इन सबका यथास्थान उल्लेख मिलता है जिससे असम के परिवेश के साथ ही भिन्न जातीय समाज के लोकविश्वास का बोध होता है। चूंकि ईश्वर की पूजा-अर्चना हेतु जिन मंत्रों का उच्चारण किया जाता है वे सभी संस्कृत के मंत्र हैं जो किसी भी हिंदू समाज में आमतौर पर विधिवत उच्चरित होते हैं। इसीलिए इस उप-अध्याय में समाजभाषिक दृष्टि से विश्लेषण हेतु ऐसे मंत्रों को लिया जा रहा है जो ओझा अथवा तांत्रिकों द्वारा नकारात्मक शक्तियों के प्रभाव को कम करने तथा बीमारियों के उपचार हेतु प्रयोग किये जाते हैं।

* *किसी भी रोग को ठीक करने के लिए दैवीय आह्वान हेतु मंत्र-*

"डाँक डाँक डाँक

चंडी माईके डाँक।

पालामौ के चंडी

हाजारीबाग के चंडी,

रांची के चंडी,

लालटन गंजके चंडी,

डेल्टन गंजके चंडी,

चहँपल चाहिए।

एई कारण आच्छा करना चाहिए

जेनेके बभूत उड़े

तेनेके कारण उड़ना चाहिए।।"[1]

चाय जनगोष्ठी में किसी भी मंत्रोच्चार के पूर्व ओझा अथवा तांत्रिक आदि अपने गुरु तथा आराध्य देव-देवी का स्मरण करते हैं। उन्हें सादर स्मरण करने के पश्चात् ही किसी रोग संबंधी मंत्र का उच्चारण करना फलदायी होता है। ऐसी मान्यता है कि आराध्य के मंत्र के उच्चारण से मंत्र जागृत हो जाते हैं तथा उनका प्रभाव बढ़ जाता है। प्रस्तुत मंत्र ऐसे ही दैवीय स्मरण का मंत्र है जिसके उच्चारण के बाद ही किसी भी तरह की रोग-व्याधि के झाड़-फूँक की प्रक्रिया आदि प्रारंभ की जाती है। उपर्युक्त मंत्र झारखंड के हजारीबाग से आये खोरठा भाषी मजदूर समाज में प्रचलित है। इस मंत्र में परहित की भावना से चंडी देवी का आह्वान किया गया है। यह कहा गया है कि हे देवी! अतिशीघ्र उपस्थित होकर अपनी अनुकंपा से रोगी को आरोग्य प्रदान कीजिए। जैसे हवा में राख (भभूत/ भस्म) उड़ जाती है ठीक वैसे ही रोगी के रोग का भी तुरंत निदान कर दीजिए।

उपर्युक्त मंत्र में *'डाँक'* तथा *'एई'* शब्द बांग्ला भाषा के हैं जिनका अर्थ क्रमशः 'बुलाना' और 'यह' है। *'जेनेके'* (जैसे), *'तेनेके'* (तैसे) असमिया के अविकारी शब्द हैं। *'माई'* (माँ) भोजपुरी का संबोधन शब्द है। 'चाहिए', 'कारण', 'करना', 'उड़ना' आदि शब्द हिंदी के हैं। मंत्र की प्रथम पंक्ति में 'डाँक' शब्द की आवृत्ति के कारण यहाँ पूर्ण पुनरुक्ति की स्थिति है जिसका उद्देश्य देवी का आवाहन-प्रक्रिया पर बल देना है। इसके अतिरिक्त 'पालामौ', 'हाजारीबाग', 'डेल्टन गंज', 'चहँपल', 'आच्छा', 'बभूत' इन सभी शब्दों का निम्न

कोड के रूप में प्रयोग हुआ है। इन शब्दों का उच्च कोड या मानक रूप क्रमशः 'पलामू', 'हजारीबाग', 'डाल्टन गंज', 'पहुँचल' (भोजपुरी क्रिया), 'अच्छा' तथा 'भभूत' होगा। व्यवहार के स्तर पर भाषा के निम्न कोड का प्रयोग होने के कारण यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति है। इसका एक प्रमुख कारण इन मंत्रों के प्रयोगकर्ताओं का शैक्षिक दृष्टि से पिछड़ा होना भी है। इस मंत्र में शामिल भिन्न स्थानों के नाम यथा- पलामू, हजारीबाग, रांची, लालटनगंज आदि स्थान-सूचक प्रयुक्तियाँ हैं। मंत्र में प्रयुक्त 'चंडी माई', 'बभूत' (भभूत/ भस्म) आदि पूजा-साधना संबंधी प्रयुक्तियाँ हैं। हिंदी, भोजपुरी, बांग्ला तथा असमिया आदि भाषाओं के शब्द-व्यवहार के कारण कोड-मिश्रण, बहुभाषिकता के साथ ही भाषाई विकल्पन की स्थिति भी यहाँ देखी जा सकती है।

इसी तरह से चाय जनगोष्ठी के संथाल समुदाय में गुरु-कृपा और देवी-आह्वान हेतु मंत्र दृष्टव्य है-

"कालीघाटे काली बंधन
मन करि स्थिर
पेड़ोते बंदिलाम आमि
जाऊँ समुद्र तीर
दशहराय बंदिलाम
देव पंचानन
कामाख्या बंदिलाम
कामरूपी माई
एई बंधन आमार संगे
शीघ्रे लाग, शीघ्रे लाग
करि दोहाई
कामरू कामाख्या ईश्वर-गौरा
पार्वतीर दोहाई।"[2]

आदिवासी संथाल समाज में 'कामरू' एक प्रसिद्ध और शक्तिशाली तांत्रिक थे। इसीलिए उन्हें गुरु मानते हुए इस समाज के लोग उनकी पूजा-आराधना करते हैं। उपर्युक्त मंत्र में कामरू गुरु, देवी काली, शिव-पार्वती, शक्तिस्वरूपा माँ कामाख्या का नाम स्मरण करते हुए उनके प्रति अगाध श्रद्धा व्यक्त की जाती है। कलकत्ते में स्थित कालीघाट की देवी काली के श्रीचरणों में स्थिर-चित्त होकर वंदन करते हैं। विशेषकर दशहरे

के दिन शिव, पार्वती तथा कामरूपी माई अर्थात् देवी कामाख्या से अतिशीघ्र कृपा-प्राप्ति की कामना व्यक्त की गयी है ताकि इष्ट की असीम अनुकंपा से भक्त और भगवान के बीच एक प्रगाढ़ संबंध स्थापित हो सके। जनश्रुति है कि दशहरे के दिन बहुत से तांत्रिकादि अपने मंत्रों को विशेष रूप से अभिमंत्रित कर सिद्धि प्राप्त करते हैं।

उक्त मंत्र में *'बंधन', 'मन', 'स्थिर', 'दशहरा'* आदि शब्द आमतौर पर हिंदी भाषा में प्रयुक्त होते हैं। *'मन'* शब्द हिंदी सहित अन्य कई भारतीय भाषाओं में व्यवहृत होता है। *'माई'* तथा *'दोहाई'* भोजपुरी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। *'बंदिलाम'* शब्द का प्रयोग अधिकतर बांग्ला भाषा में 'आवाहन या बुलाने' के अर्थ में होता है। इसके अलावा *'आमार'* (हमारा), *'लाग'* (लगना), *'कार'* (किसका), *'संगे', 'शीघ्रे'* आदि शब्द बांग्ला के अतिरिक्त असमिया भाषा-व्यवहार के शब्द हैं। उक्त मंत्र में *'पेड़ोते बंदिलाम आमि'* पंक्ति बांग्ला भाषा की है तथा *'जाऊँ समुद्र तीर'* पंक्ति हिंदी की है। दो अलग-अलग भाषाओं के वाक्यों का एक साथ प्रयोग होने के कारण यहाँ कोड-अंतरण की स्थिति है। मंत्र में असमिया, बांग्ला, हिंदी, भोजपुरी आदि भिन्न भाषाई प्रभाव के कारण भाषिक विकल्पन के साथ ही बहुभाषिकता की स्थिति भी सहज ही दृष्टव्य है। 'पंचानन', 'कामाख्या', 'कामरूपी माई', 'कामरू', 'ईश्वर-गौरा', 'पार्वती' आदि हिंदू धर्म के देव-देवियों के नाम हैं। अतः ये सभी धर्म विषयक प्रयुक्तियों के अंतर्गत शामिल हैं। *'मन करि स्थिर', 'पेड़ोते बंदिलाम आमि'* तथा *'जाऊँ समुद्र तीर'* वाक्यों में टॉपिकीकरण की प्रवृत्ति है। इन वाक्यों की सामान्य व्याकरण सम्मत संरचना क्रमशः 'मन स्थिर करि', 'आमि पेड़ोते बंदिलाम' तथा 'समुद्र तीर जाऊँ' होनी चाहिए लेकिन वाक्य में विभिन्न अवयवों पर बल देने हेतु उन्हें उनके नियत स्थान से स्थानांतरित किया गया है ताकि विशेष प्रभाव उत्पन्न हो सके। जैसे पहले वाक्य में करना क्रिया पर बल देने के लिए 'करि' को 'स्थिर' से पहले रखा गया है। दूसरे वाक्य में 'आमि' की जगह कर्ता के स्थान पर 'पेड़ोते' को लाया गया है ताकि उस पर विशेष जोर दिया जा सके इसी तरह से तीसरे वाक्य में 'जाऊँ' क्रिया पर देने के लिए उसे 'समुद्र' के स्थान पर वक्यारंभ में लाया गया है।

* *शरीर के किसी भी हिस्से में हुए दर्द के निवारण हेतु मंत्र-*

"कतरी कतरी सुदर्शन कतरी

तुई कतरी थिलू काहाँ

सात समुंदर लंका जाए

मोर सुमरटा आइलो धाँय

जाहाँ के पेसबो ताहाँ के जाबि

जाबि जे छाती अंते ढुकबि

भूत काट, डाहिन काट, जुगनी काट

बाण काट, सिंगार काट, नासन काट

पांगन काट, हावा काट, बातास काट

छेद काट, भेद काट, चुंकरिया काट

पितासि काट, घरसिरि काट, दुवारसिरि काट

जंतर काट, मंतर काट, नजर काट, बजर काट

के काटे? गुरु काटे

गुरु आइज्ञा बीर हनुमानेर दोहाई गुरु"[3]

ओझा अथवा तांत्रिक अपने हाथ में थोड़ा-सा चावल लेकर उद्धृत मंत्र का तीन बार उच्चारण करता है। तत्पश्चात् मंत्रसिद्ध चावल को रोगी पर छिड़क दिया जाता है। ऐसा तीन अथवा पाँच दिनों तक अनवरत किया जाता है। प्रस्तुत मंत्र में श्रीहरि के सुदर्शन चक्र द्वारा शरीर के विभिन्न अंगों में हुए दर्द व पीड़ा के नाश की बात कही गयी है। इसीलिए इस मंत्र में विष्णु (राम) के अनन्य भक्त वीर हनुमान को को दुहाई देते हुए सभी रोग-व्याधि, भूत-प्रेत, पिशाच-निशाचर, नजर दोष आदि के भेदन हेतु प्रार्थना करते हैं। जिस तरह से मारुति नंदन सातों समुद्र को पवन वेग से लाँघकर देवी सीता का पता लेकर आते हैं। और, अपने स्वामी श्रीराम के दुःख का निवारण करते हैं। ठीक उसी प्रकार रोगी की शारीरिक पीड़ा भी अत्यंत शीघ्रतापूर्वक हर लें।

उल्लिखित मंत्र में *'तुई'* (तू), *'जाबि'* (जाना), *'ढुकबि'* (घुसना), *'अंते'* (अंदर), *'आइलो'* (आया) आदि शब्द बांग्ला भाषा के हैं। *'मोर'* असमिया भाषा का 'मैं' सर्वनाम है। *'जहाँ'* हिंदी का अविकारी शब्द है। इसके अलावा *'छेद'*, *'भेद'*, *'बजर'*, *'गुरु'* आदि हिंदी के शब्द हैं। *'बाण'* संस्कृत का, *'थिलू'* (थी/ था) उड़िया का तथा *'नज़र'* अरबी भाषा का शब्द है। आधार भाषा उड़िया के वाक्यों में बांग्ला, असमिया, हिंदी तथा संस्कृत के शब्दों के प्रयोग के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति के साथ ही बहुभाषिकता की स्थिति का भी बोध होता है। इस मंत्र में *'समुंदर'* (समुद्र/ समंदर), *'ताहाँ'* (तहाँ), *'डाहिन'* (डायन), *'जुगनि'* (जोगिन), *'सिंगार'* (श्रृंगार), *'हावा'* (हवा), *'बातास'* (बतास), *'आइज्ञा'* (आज्ञा), *'बीर'* (वीर) तथा *'दोहाई'* (दुहाई) आदि शब्द निम्न कोड के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। यह भाषाद्वैत के साथ ही भाषाई विकल्पन की स्थिति का सूचक है। *'हावा'* तथा *'समुंदर'* प्रकृति विषयक प्रयुक्तियाँ हैं और *'सुदर्शन'*, *'लंका'*, *'गुरु'*, *हनुमान'* आदि धर्म

विषयक प्रयुक्तियाँ हैं। इसके अलावा *'भूत', 'डाहिन', 'जुगनि', 'नज़र'* आदि सभी शब्द नकारात्मक शक्तियों से संबंधित या भूत-प्रेत विषयक प्रयुक्ति के अंतर्गत शामिल किये जा सकते हैं। *'तुई कतरी थिलू काहाँ'* पंक्ति को सामान्य भाषिक-व्यवस्था के अनुरूप 'तुई कतरी काहाँ थिलू' होना चाहिए किंतु यहाँ 'थिलू' पर विशेष बल देने हेतु 'काहाँ' से पहले रखा गया है। अतः यहाँ टॉपिकीकरण की स्थिति है।

* *पानी पढ़ा मंत्र-*

"ओउ तोरा भाई जाईथिलू काहाँ?

चमड़ दरी लोहा ठेंगाले

भूत काट, डाहिन काट, जुगनी काट

बाण काट, सिंगार काट, नासन काट

पांगन काट, हावा काट, बातास काट

छेद काट, भेद काट, चुंकरिया काट

पितासि काट, घरसिरि काट, दुवारसिरि काट

जंतर काट, मंतर काट, नजर काट, बजर काट

के काटे? गुरु काटे

गुरु आइज्ञा ईश्वर पार्वती कुटि-कुटि दोहाई"[4]

चाय जनगोष्ठी में इस मंत्र को *'पानी पढ़ा'* मंत्र भी कहा जाता है। किसी व्यक्ति के पेट में दर्द होने पर ओझा अपने हाथ में एक लोटा पानी लेकर अपने गुरु का स्मरण करते हुए इस मंत्र का उच्चारण करता है। उसके बाद अभिमंत्रित जल को रोगी प्रातः खाली पेट में पीता है। ऐसा माना जाता है कि इससे पेट का दर्द ठीक हो जाता है। उक्त मंत्र में सभी प्रकार की नकारात्मक शक्तियों के प्रभाव को नष्ट करने की बात कही गयी है। इसमें गुरु के मार्गदर्शन तथा सभी देवी-देवताओं के आशीर्वाद से भूत-प्रेत, डायन-जोगन, नज़र दोष आदि से मुक्ति पाकर व्यक्ति के अरोग्यमय जीवन की कामना की गयी है।

इस मंत्र में *'ओउ'* शब्द संबोधन हेतु प्रयुक्त हुआ है। *'तोरा'* (तुमलोग) शब्द बांग्ला भाषा का है। *'जाईथिलू'* उड़िया शब्द है जिसका अर्थ है 'गये थे'। *'लोहा', 'भेद', 'छेद', 'बजर', 'भाई', 'काट'* आदि शब्द हिंदी के हैं; *'बाण'* संस्कृत का तथा *'नज़र'* अरबी शब्द है। इन विविध भाषाओं के शब्दों का आधार भाषा उड़िया के वाक्यों में मिश्रण के कारण यहाँ कोड-मिश्रण की स्थिति है। साथ ही इस भाषाई विवधता से

बहुभाषिकता की स्थिति का भी बोध होता है। इसके अलावा अधिकतर शब्दों के निम्न कोड का प्रयोग हुआ है जो भाषाद्वैत की स्थिति को दर्शाता है। जैसे- *'काहाँ', 'चमड़', 'डाहिन', 'जुगनी', 'सिंगार', 'हावा', 'बातास', 'मंतर', 'आइज्ञा', 'दोहाई'* तथा *'कुटि-कुटि'* आदि। इन सभी शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'कहाँ', 'चमड़ी', 'डायन', 'जोगन', 'श्रृंगार', 'हवा', 'बतास', 'मंत्र', 'आज्ञा', 'दुहाई' तथा 'कोटि-कोटि' है। *'कुटि-कुटि'* में पूर्ण पुनरुक्ति है। *'डाहिन', 'जुगनी', 'पितासि'* (पिशाच), *'नज़र'* आदि सभी शब्दों का संबंध भूत-प्रेत संबंधी या नकारात्मकता सूचक प्रयुक्ति से है। इसी तरह *'गुरु', 'ईश्वर', 'पार्वती'* धर्म संबंधी प्रयुक्तियाँ हैं। अतः इन्हें प्रयुक्ति कहा जा सकता है। *'ओउ तोरा भाई जाईथिलू काहाँ?'* पंक्ति में टॉपिकीकरण की स्थिति है। इसे सामान्य भाषिक-व्यवस्था के अनुरूप 'ओउ भाई तोरा काहाँ जाईथिलू?' होना चाहिए। इस वाक्य में 'जाईथिलू' पर बल देने के लिए उसे 'काहाँ' से पहले रखा गया है।

* *पशु झाड़ा मंत्र-*

"गौरो गोले गुटके अंसाए सुक पुक सुक
सुक-सुक बोली
कार आइज्ञा? गुरु आइज्ञा
ईश्वर पार्वती कुटि-कुटि दोहाई"[5]

चाय श्रमिक बागानों में काम करने के अलावा गाय, बकरी, मुर्गी, हंस, बत्तख, कबूतर आदि का पालन भी करते हैं। ऐसे में जब पशु-पक्षियों को चोट लगने, घाव होने अथवा घाव में कीड़ा लगने पर उसे ठीक करने के लिए उपर्युक्त मंत्र को पढ़ा जाता है। इसके लिए *'ढेकिया'(fiddle head fern)* की विशेष आवश्यकता पड़ती है। ऐसे पशु-पक्षियों को रोगमुक्त करने के लिए ओझा ढेकिया साग के पत्तों से पशु को सहलाते हुए उक्त मंत्र का तीन बार उच्चारण करता है। उक्त मंत्र में गुरु का स्मरण करते हुए देवी पार्वती को कोटिशः आवाहन करते हुए यह प्रार्थना की जाती है ताकि पशु को सभी प्रकार की पीड़ा से निवृत्ति मिले।

इस मंत्र में *'गोले'* तथा *'पुक'* शब्द असमिया भाषा के हैं जिसका अर्थ क्रमशः 'जाना' तथा 'कीड़ा' है। *'अंसाए'* (परेशान) भोजपुरी का तथा *'बोली'* हिंदी शब्द है। ये सभी विभिन्न भाषाओं के शब्द आधार भाषा उड़िया के वाक्य में प्रयुक्त होकर कोड-मिश्रण को दर्शाते हैं। *'कुटि-कुटि', 'दोहाई'* और *'आइज्ञा'* क्रमशः 'कोटि-कोटि', 'दुहाई' तथा 'आज्ञा' के निम्न कोड वाले रूप में हैं। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति है। इसके साथ ही *'कुटि-कुटि'* तथा *'सुक-सुक'* में पूर्ण पुनरुक्ति है जो अधिकता के अर्थ का सूचक है। साथ ही *'पुक-*

सुक' में आंशिक पुनरुक्ति है जो अतिरिक्त के अर्थ को द्योतित कर रहा है। *'ईश्वर'*, *'पार्वती'* हिंदू धर्म विषयक प्रयुक्तियाँ हैं।

* *बुखार के लिए मंत्र-*

"फूल-फूल, फूल दिते जा रबिर गाये हात दिलो
ईश्वर महादेव पार्वतीर दोहाई, माँ मनसार दोहाई
गुरु गुरुवाईर दोहाई
आसन बाँधि पासन बाँधि दस दुवार बाँधि
भूत बाँधि प्रेत बाँधि डाहिन बाँधि जोगिन बाँधि
मोरी बाँधि मासान बाँधि
हामि बाँधि कार दोहाई
ईश्वर महादेव पार्वती नरसिंह गुरुर दोहाई
धूल धूल धूलार मूठी
एई मूठी कि कोरे
स्वर्गे मारे इंद्र राजा
पाताले मारे बासुकी
भूत मारे प्रेत मारे डाहिन मारे जोगिन मारे
मोरि मारे मासान मारे
के मारे गुरु मारे गुरुवाई मारे
हामि मारि कार दोहाई
ईश्वर महादेव पार्वतीर दोहाई"[6]

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि कुछ लोगों के चिंताग्रस्त होने पर अथवा किसी भयावह सपने के कारण उन्हें ज्वर हो जाता है। विशेषकर बच्चों के भयभीत होने पर अचानक उनके शरीर के तापमान में वृद्धि देखी जाती है। चाय जनगोष्ठी में उपर्युक्त मंत्र के विधिवत उच्चारण से ज्वर को ठीक करने का प्रचलन है। ओझा रोगी के शरीर के ऊपर से नीचे तक अपने बाएँ हाथ की तर्जनी और कनिष्ठा उंगली को एक साथ मिलाकर फिराते हुए प्रस्तुत मंत्र का तीन बार उच्चारण करता है। गुरु-गुरुवाइन के मार्गदर्शन में ओझा अथवा तांत्रिक इष्टदेव की

आराधन से सिद्धि प्राप्त करता है। इसके बाद ही भूत-पिशाच के प्रभावों को नष्ट करने में वह सक्षम होता है तथा किसी भी व्यक्ति को आरोग्य प्रदान करता है।

ऊपर उद्धृत मंत्र में *'फूल-फूल'* तथा *'धूल-धूल'* में पूर्ण पुनरुक्ति है जो क्रमशः प्रत्येक तथा अधिकता के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। *'फूल दिते जा रबिर गाये हात दिलो'* तथा *'एई मूठी कि कोरे'* ये बांग्ला भाषा के वाक्य हैं जिनका प्रयोग आधार भाषा सादरी के वाक्यों के साथ हुआ है। अतः यहाँ कोड-अंतरण की स्थिति है। *'ईश्वर'*, *'स्वर्ग'* तथा *'आसन'* ये शब्द संस्कृत के हैं। *'दस'* हिंदी का संख्यासूचक शब्द है। *'हामि'* (मैं) सादरी भाषा का सर्वनाम है। *'बाँधि'* (बाँधकर), *पाताले* (पाताल) शब्द बांग्ला का है। *'मुठी'* (मुट्ठी) असमिया तथा बांग्ला दोनों ही भाषाओं में प्रयुक्त शब्द है। *'दुवार'* भोजपुरी भाषा में प्रचलित शब्द है। इसे हिंदी के 'द्वार' शब्द का निम्न कोड भी कहा जा सकता है। इसी तरह से *'गुरुवाइर'*, *'डाहिन'*, *'जोगिन'*, *'मासान'*, *'बासुकी'* तथा *'दोहाई'* शब्द क्रमशः 'गुरुवाइन', 'डायन', 'जोगन', 'श्मशान', 'वासुकी' तथा 'दुहाई' के निम्न कोड वाले रूप हैं अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति स्पष्टतः दिखायी देती है। कुलमिलाकर इस मंत्र में भिन्न भाषाई शब्दों के प्रयोग से कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति उत्पन्न हुई है। बहुत से शब्दों का निम्न कोड प्रयुक्तहोने के कारण यहाँ भाषाद्वैत के साथ ही भाषिक विकल्पन की स्थिति भी देखी जा सकती है। इसके अलावा *'ईश्वर'*, *'मनसार'*, *'महादेव'*, *'पार्वती'*, *'नरसिंह'* आदि धर्म विषयक और *'भूत'*, *'प्रेत'*, *'डाहिन'*, *'जोगिन'* आदि भूत-प्रेत अथवा नकारात्मक शक्तियों से संबंधित प्रयुक्तियाँ हैं। *'स्वर्गे मारे इंद्र राजा'* तथा *'पाताले मारे बासुकी'* पंक्ति में टॉपिकीकरण की स्थिति है। इन दोनों पंक्तियों को सामान्य व्याकरणिक संरचना के अनुसार क्रमशः 'इंद्र राजा स्वर्गे मारे' तथा 'बासुकी पाताले मारे' के रूप में होना चाहिए लेकिन पहले वाक्य में स्वर्ग पर, दूसरे वाक्य में पाताल पर जोर देने के लिए उन्हें कर्ता के स्थान पर वाक्यारंभ में रखा गया है।

* *सरसों झाड़ा अथवा सरसों पढ़ा मंत्र-*

"फूल-फूल, फूल दिते जा रबिर गाये हात दिलो
ईश्वर महादेव पार्वतीर दोहाई, कर दोहाई माँ मनसार दोहाई
गुरु गुरुवाईर दोहाई
सोनार हाल रूपार फाल बाघ बाघिन हार जोतलि
इपर्बत उपर्बत बुनलाम सरसा, एई सरसा बज्रअंगी
पात सरसा हालधीया रंगेर फूल बज्र बने गुटि एई सरसाइ कि करे

(अमुकार/ रोगी का नाम) भूत मारे प्रेत मारे डाहिन मारे जोगिन मारे

मोरि मारे मासान मारे के मारे गुरु मारे गुरुवाइन मारे

गुरुर आइज्ञा के मारि हामि मारि

कार दोहाई ईश्वर महादेव पार्वतीर दोहाई

माँ मनसार दोहाई, देबि दुर्गार दोहाई, देबि कालीर दोहाई''[7]

चाय जनगोष्ठी में गर्भवती महिलाओं तथा बच्चों को किसी भी नकारात्मक ऊर्जा, भूत-प्रेत आदि के प्रभाव से बचाने के लिए ताबीज़ पहनाया जाता है। इसके लिए अभिमंत्रित सरसों को काले या नीले कपड़े में बाँधकर गले अथवा हाथ में ताबीज़ की तरह पहना दिया जाता है। दरअसल, चाय श्रमिक महिलाएँ गर्भावस्था के दौरान तथा संतानोत्पत्ति के बाद अपने नवजात शिशु को पीठ पर बाँधकर बागानों में पत्तियाँ तोड़ती हैं। और, ऐसा माना जाता है कि जंगलों-बागानों में भूत-प्रेत, डायन आदि का आवागमन बना रहता है। अतः ऐसी नकारात्मक शक्तियों से बचने के लिए महिलाओं तथा बच्चों को ताबीज़ पहनाया जाता है। सरसों को अभिमंत्रित करते हुए उपर्युक्त मंत्र का उच्चारण किया जाता है। इस मंत्र में सोने-चाँदी के हल-जुवाल से बाघ-बाघिन के माध्यम से दो बैलों की जोड़ी की ओर संकेत किया गया है जो एक साथ मिलकर जुताई करते हैं। इसके बाद कठिन परिश्रम से सरसों की खेती होती है। तांत्रिक अथवा ओझा पीले-कोमल फूलों वाले आकर्षक खेत से इस वज्र के समान कठोर सरसों के बीजों को चुनकर लाता है। सरसों के इन्हीं बीजों को अभिमंत्रित कर वह ताबीज़ बनाता है जिससे नकारात्मक शक्तियाँ, नज़र दोष आदि प्रभावहीन हो जाते हैं।

उपर्युक्त मंत्र में *'फूल-फूल'* में पूर्ण पुनरुक्ति है जो प्रत्येक के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। *'फूल दिते जा रबिर गाये हात दिलो'* यह बांग्ला भाषा का वाक्य है जो आधार भाषा सादरी के वाक्यों के साथ प्रयुक्त हुआ है। अतः यहाँ कोड-अंतरण है की स्थिति है। यह मंत्र मूलतः बांग्ला भाषा से प्रभावित है। *'सोनार'* (सोने का), *'रूपार'* (चाँदी का), *'बुनलाम'* (बोया), *'सरसा'* (सरसों), *'बज्रअंगी'* (वज्रअंगी), *'रंगेर'* (रंग का), *'देबि'* (देवी), *'रबि'* (रवि/ सूर्य) आदि बांग्ला भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। *'बाघ-बाघिन'* हिंदी के शब्द हैं। *'पात'* (पत्ता), *'हालधीया'* (पीला), *'हाल'* (हल) आदि शब्द असमिया भाषा के हैं। *'गुटि'* , *'हात'* असमिया तथा बांग्ला दोनों ही भाषाओं में क्रमशः 'बीज' और 'हाथ' के लिए प्रयुक्त होते हैं। *'जोतलि'* भोजपुरी भाषा का शब्द है। *'इपर्बत उपर्बत'* में 'इ' तथा 'उ' असमिया सादरी के अविकारी शब्द हैं जिनका अर्थ क्रमशः 'यह' और 'वह' है। इस प्रकार हम देखते हैं कि उक्त मंत्र में बांग्ला, असमिया, भोजपुरी आदि कई भाषाओं के शब्दों

का मिश्रण मिलता है जो कोड-मिश्रण की स्थिति को दर्शाता है। यह चाय जनगोष्ठी समाज के बहुभाषी परिवेश का सूचक है। इसके साथ ही मंत्र में बांग्ला भाषा के प्रभावस्वरूप 'पर्वत' के स्थान पर *'पर्बत'* शब्द का प्रयोग हुआ है। *'गुरुवाइर', 'हार' 'डाहिन', 'जोगिन', 'मासान', 'आइज्ञा'* तथा *'दोहाई'* शब्द क्रमशः 'गुरुवाइन', 'हल', 'डायन', 'जोगन', 'श्मशान', 'आज्ञा' तथा 'दुहाई' के निम्न कोड के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। अतः यहाँ भाषाद्वैत की भी स्थिति है। इसके अतिरिक्त *'ईश्वर', 'मनसार', 'महादेव', 'पार्वती', 'दुर्गार', 'कालीर'* आदि हिंदू धर्म के देव-देवी हैं। इन्हें धर्म विषयक प्रयुक्तियों के अंतर्गत रखा जा सकता है। *'फूल', 'रबि'* (सूर्य), *'बाघ-बाघिन', 'सरसा'* (सरसों) आदि सभी प्रकृति विषयक तथा *'भूत', 'प्रेत', 'डाहिन', 'जोगिन'* आदि भूत-प्रेत संबंधी नकारात्मक प्रयुक्तियाँ हैं। *'इपर्बत उपर्बत बुनलाम सरसा'* इस वाक्य में टॉपिकीकरण का प्रयोग किया गया है। इस वाक्य को सामान्य भाषिक संरचना के अनुसार 'इपर्बत उपर्बत सरसा बुनलाम' के रूप में होना चाहिए लेकिन 'बुनलाम' पर बल देने के लिए उसे कर्म यानी 'सरसा' के स्थान पर रखा गया है। इससे एक विशेष प्रभाव उत्पन्न होता है।

* *भय खोवा (स्वप्न दोष)-*

"फूल-फूल एई फूल फूक दिते जा रबिर गाइरे हात दिल

ईश्वर महादेव पार्वतीर दोहाई

कार दोहाई? श्रीबीर हनुमानेर दोहाई

के फूके गुरु फूके, गुरु गुरुवाइन फूके

देबि दुर्गा फूके, माँ मनसा फूके

कार दोहाई ईश्वर महादेव पार्वतीर दोहाई।

सरिसा-सरिसा पुड़ा

चड़-चड़ मड़-मड़ करुते सरिसा पुड़ा

कार आइज्ञा कामाख्या, कामाख्या मायेर दोहाई

पूर्बे पश्चिमसे आवे गुरु गुरुवाई तोरे चरण धोरि

गुरु गुरुवाई तोरे पावे धोरि

एई बेथा दूर होय जा

कार दोहाई ईश्वर महादेव पार्वतीर दोहाई।

(अमुकार/ व्यक्ति का नाम) बाण चोले बाण काटे

डाहिन चोले डाहिन काटे, भूत चोले भूत मारे

बेथा चोले बेथा मारे

के मारे गुरु मारे गुरुवाइन मारे

कार दोहाई ईश्वर महादेव पार्वतीर दोहाई

माँ मनसार दोहाई, देबि दुर्गार दोहाई"[8]

चाय श्रमिक-समाज में स्वप्न दोष से निजात पाने के लिए उक्त मंत्र से उपचार किया जाता है। ओझा इस मंत्र की कुल तीन बार आवृत्ति करता है। इस दौरान वह अपने हाथ में चूल्हे की राख और चावल अथवा सरसों लेकर उसे अभिमंत्रित करता है। तत्पश्चात् इसे ताबीज़ की तरह काले अथवा लाल रंग के धागे से बाँध दिया जाता है। यह मंत्र प्रमुखतः बांग्ला भाषा से प्रभावित है। इसमें हिंदू धर्म के विभिन्न आराध्य देवी-देवताओं का चरण-वंदन करते हुए स्वप्न दोष तथा सभी प्रकार के कष्टों से निवृत्ति हेतु प्रार्थना की गयी है। प्रस्तुत मंत्र में *'कार'* (किसका), *'पुड़ा'* (जला हुआ), *'धोरि'* (पकड़ना) असमिया तथा बांग्ला दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। *'फूके'* (फूंकना), *'आवे'* (आना), *'तोरे'* (तुम्हारे) आदि भोजपुरी के तथा *'चरण'* और *'बाण'* क्रमशः हिंदी तथा संस्कृत के शब्द हैं। *'देबि'* (देवी), *'मायेर'* (माता की), *'पावे'* (पैरों में), *'चोले'* (चला गया), *'बेथा'* (दर्द) आदि बांग्ला शब्द हैं। विभिन्न भाषाओं के इन शब्दों के आधार भाषा सादरी में के वाक्यों में प्रयोग होने के कारण कोड-मिश्रण की स्थिति का पता चलता है। साथ ही बहुभाषिकता एवं भाषिक-विकल्पन की स्थिति का भी बोध होता है। *'पूर्बे'* (पूर्व दिशा में), *'डाहिन'* (डायन), *'आइज्ञा'* (आज्ञा), *'बीर'* (वीर) आदि शब्दों का निम्न कोड के रूप में प्रयोग हुआ है। इन सभी शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'पूर्वे', 'डायन', 'आज्ञा', तथा 'वीर' है। अतः यहाँ भाषाद्वैत की स्थिति है। *'सरिसा-सरिसा'* में पूर्ण पुनरुक्ति है। *'चड़-चड़'*, *'मड़-मड़'* अनुकरणात्मक शब्द हैं। *'एई फूल फूक दिते जा रबिर गाइरे हात दिल'* तथा *'एई बेथा दूर होय जा'* ये दोनों पंक्तियाँ बांग्ला भाषा की हैं जो आधार भाषा सादरी के वाक्यों के साथ प्रयुक्त होकर कोड-अंतरण की स्थिति को दर्शाती हैं। विभिन्न देव-देवियों के नाम धर्म विषयक तथा भूत-प्रेतादि का उल्लेख नकारात्मक शक्तियों से संबंधित प्रयुक्तियाँ हैं। *'पूर्बे'*, *'पश्चिमसे'* ये दोनों दिशाओं से संबंधित तथा *'फूल'*, *'सरसों'* आदि प्रकृति से संबंधित प्रयुक्तियों के अंतर्गत शामिल किये जा सकते हैं। कुलमिलाकर यहाँ कोड-मिश्रण, कोड-अंतरण, भाषाद्वैत, बहुभाषिकता, प्रयुक्ति, पुनरुक्ति तथा भाषाई विकल्पन की स्थिति का सहज बोध होता है।

* *बाण मारा व वशीकरण मंत्र-*

दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि चाय श्रमिक समाज में अंधविश्वास और तंत्र-मंत्र का प्रबल प्रभाव है। ऐसा माना जाता है कि कुछ सिद्ध मंत्रों के द्वारा मारण, सम्मोहन, उच्चाटन और वशीकरण संभव है। इस समाज में ऐसे बहुत से मंत्र प्रचलित हैं जिनके विधिवत उच्चारण से डायन अथवा तांत्रिक किसी व्यक्ति को अपने वश में कर लेते हैं। इतना ही नहीं यह भी जनविश्वास है कि ये मंत्र प्राणघातक तक हो सकते हैं। नीचे *'बाण मारा'* अर्थात् वशीकरण द्वारा किसी व्यक्ति के प्राण लेने की क्षमता वाले मंत्र का उल्लेख किया जा रहा है-

सोनेक नांगल, रूपेक फाह

बाघ बोल्दा, जुरलाम हाल।

तोईते उठलो कालो माटी

तोईते बुन्लाम सरिषार मुठि।

बेल बर्ण छटा, सेल बर्ण गोटा, ताल परमाण सरिषार गाछ।

मन परमाण पाता।

शस्ये सरिषा कूट्लाम्

से सरिषा मारलाम्

से सरिषा के पेरे?

मोर गुरुपेरे।

गुरुआज्ञाई आमि पेरि।।

एई सरिषा पेराई कि कि झारे?

मोरा झारे, माशान झारे।

डाईन झारे, जोगिन झारे।।

गुण झारे, गुणजार झारे।।

दश झारे, चामुंडा झारे।।

झार मारबो अग्निबाण।

मारिबो सेर सेरि बाण।।

बुके मारे, पिठे करलाम पार।

कार दोहाई?

कुरु कामाख्या, हरिर जी चंडीर आज्ञाई।।"[9]

उपर्युक्त *'बाण मारा'* मंत्र उराँव आदिवासी समुदाय में बहुत प्रचलित है। इस मंत्र का तात्पर्य है कि सोने-चाँदी के हल-जुवाल को लिए दो बैल अत्यंत सघनता से काली मिट्टी की जुताई करते हैं। उसके बाद ही उस उर्वर जमीन में सरसों के बीज बोये जाते हैं। सरसों की फसल इतनी लहलहा उठती है कि उसके पौधे ताड़ के पेड़ की तरह लंबे तथा सरसों के बीज बेल के आकार की तरह बड़े हो जाते हैं। तत्पश्चात् गुरु की आज्ञा से तांत्रिक सरसों से तेल निकालकर डायन, भूत-प्रेत, श्मशान की भटकती आत्माओं आदि को वश में करता है। और, देवी कामाख्या, चंडी, श्रीहरि की आज्ञा से ऐसे लक्ष्य भेदक बाण का संधान करता है जो व्यक्ति के सीने के आर-पार जाकर उसे पूर्णतः वशीभूत करता है।

प्रस्तुत मंत्र में 'सोनेक' तथा 'रूपेक' ये दोनों शब्द क्रमशः 'सोना' और 'चाँदी' के लिए प्रयुक्त हुए हैं। दरअसल, असमिया तथा बांग्ला भाषा में इनके लिए *'सोना-रूपा'* शब्द प्रचलित है। इसी तरह से *'नांगल'* (हल), *'फाह'* (जुवाल), *'हाल'* (जुताई), *'ताल'* (ताड़ का पेड़), *'शस्ये'* (अनाज), *'मोर'* (मेरा) आदि शब्द प्रमुखतः असमिया भाषा में व्यवहार किये जाने वाले शब्द हैं। *'जुरलाम'* (जुताई करना), *'बाघ-बोल्दा'* (दो बैलों का जोड़ा), *'सरिषार'* (सरसों), *'कूट्लाम्'* (कूटना), *'मारलाम्'* (मारा), *'मारबो'* (मारूँगा), *'बुके'* (सीने में), *'पाता'* (पत्ता) आदि शब्द बांग्ला भाषा में व्यवहृत होते हैं। *'छटा', 'गुण', 'दोष'* आदि हिंदी के शब्द हैं। *'बाण'* तथा *'आज्ञा'* शब्द संस्कृत के हैं और *'पेरे'* शब्द भोजपुरी की क्रिया है। इस मंत्र में *'गोटा'* (पूरा), *'आमि'* (बांग्ला भाषा में 'मैं' तथा असमिया भाषा में 'हम' के लिए प्रयुक्त सर्वनाम) असमिया तथा बांग्ला दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं तथा 'गाछ' शब्द बांग्ला और भोजपुरी में 'पेड़' के लिए प्रयुक्त होता है। ये सभी शब्द आधार भाषा सादरी के वाक्यों में प्रयुक्त होकर कोड-मिश्रण की स्थिति को दर्शाते हैं। साथ ही चाय जनगोष्ठी समाज की बहुभाषी संरचना का भी बोध कराते हैं। यहाँ कुछ शब्दों के निम्न कोड रूप का भी प्रयोग हुआ है जो भाषाद्वैत की स्थिति का सूचक है। जैसे- *'बर्ण', 'परमाण', 'मरा', 'माशान', 'डाईन', 'जोगिन'* आदि। इन शब्दों का मानक रूप क्रमशः 'वर्ण', 'परिमाण', 'मृत', 'मशान', 'डायन', 'जोगन' होगा। यहाँ *'तोईते उठलो कालो माटी'* और *'तोईते बुन्लाम सरिषार मुठि', 'एई सरिषा पेराई कि कि झारे?'* तथा *'बुके मारे, पिठे करलाम पार'* पंक्तियाँ बांग्ला भाषा की हैं। इनका प्रयोग आधार भाषा सादरी के वाक्यों के साथ हुआ

है। अतः यहाँ कोड-अंतरण की स्थिति है। *'झार मारबो अग्निबाण', 'मारिबो सेर सेबि बाण' तथा 'बुके मारे, पिठे करलाम पार'* पंक्तियों में टॉपिकीकरण का प्रयोग है। सामान्य भाषिक संरचना के अनुरूप इन पंक्तियों को क्रमशः'झार अग्निबाण मारबो', 'सेर सेरि बाण मारिबो' तथा 'बुके मारे, पिठे पार करलाम' के रूप में होना चाहिए लेकिन पहले वाक्य में 'मारबो' पर, दूसरे वाक्य में 'मारिबो' तथा तीसरे वाक्य में 'करलाम' पर जोर देने के लिए उन्हें वाक्य में उनके नियत साथ से स्थानांतरित किया गया है। इसके अतिरिक्त इस मंत्र में भिन्न क्षेत्रों की प्रयुक्तियों का प्रयोग भी दृष्टव्य है। यथा- *'माटि'* (मिट्टी), *'सरिषा'* (सरसो), *'बेल', 'ताल'* (ताड़), *'पाता'* (पत्ता), *'शस्य'* (अनाज) आदि प्रकृति तथा कृषि विषयक प्रयुक्तियाँ हैं। *'डाईन', 'जोगिन'* भूत-प्रेत या नकारात्मक शक्तियों से संबंधित प्रयुक्तियाँ हैं। *'बुक'* तथा *'पीठ'* शरीर संबंधी और *'चामुंडा', 'कामाख्या', 'हरि'* तथा *'चंडी'* आदि धर्म विषयक प्रयुक्तियाँ हैं।

* *बिष झाड़ा मंत्र-*

"आस माँ सरस्वती
कंठे दे माँ भर
तुमारि प्रसादे माँ
शिखिलाम गुरुर मंत्री।
सबे गुरुआई, आई गंगामाई,
हेलिये हेलिये आई।
कार दोहाई?
कुरु कामाख्या, ईश्वर-गौरा पार्वतीर दोहाई।।"[10]

चाय जनगोष्ठी में किसी भी विषाक्त जीव-जन्तु के दंश के परिणामों से बचने के लिए कुछ विशेष मंत्रों का विधिवत उच्चारण किया जाता है। आमतौर पर श्रमिक जब बागानों में काम करते हैं अथवा जंगलों में शिकार के लिए जाते हैं तो विषैले कीट-पतंगों के काटने या सर्प-दंश से लोगों को काल कवलित होना पड़ता है। ऐसी स्थिति में अविलंब किसी ओझा अथवा वैद्य के पास ले जाकर झाड़-फूँक करवाया जाता है। ध्यातव्य है कि इस समाज में विषाक्त जीवों के दंश से रक्षा के लिए देवी मनसा और फुसपुनी माई की पूजा की जाती है। उपर्युक्त मंत्र का उच्चारण सर्प-दंश के प्रभाव को क्षीण करने के लिए किया जाता है। इसीलिए इस मंत्र को *'बिष झाड़ा'* मंत्र कहा जाता है। उक्त मंत्र में ओझा माँ सरस्वती, गुरु कामरू, देवी कामाख्या तथा गौरा-पार्वती का

आह्वान करते हुए रोगी को विषमुक्त करने की प्रार्थना करते हैं। समग्र देवी-देवताओं के आशीष से ही मंत्रोच्चार प्रभावी होता है। मध्यप्रदेश और पश्चिम बंगाल से असम आव्रजित श्रमिक समुदायों में इस मंत्र का अधिक प्रचलन है। इस मंत्र में बांग्ला भाषा का सर्वाधिक प्रभाव है।

प्रस्तुत मंत्र में *'आस'* (आओ/ आइए), *'शिखिलाम'* (सीखा), *'सबे'* (सभी), *'तोमारि'* (तुम्हारी) आदि शब्द प्रमुखतः बांग्ला भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। *'तोमारि'* शब्द को हिंदी के 'तुम्हारी' का निम्न कोड भी कहा जा सकता है। *'कंठ'* तथा *'गुरु'* संस्कृत भाषा के शब्द हैं। *'माँ'* तथा *'प्रसाद'* ये दोनों हिंदी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्द हैं। ये भिन्न भाषाई शब्द आधार भाषा सादरी के वाक्यों में प्रयुक्त होकर कोड-मिश्रण की स्थिति को दर्शाते हैं। साथ ही इस समाज के बहुभाषिक मिजाज का भी बोध कराते हैं। इसी तरह से *'आई'* हिंदी की 'आयी' क्रिया है। किन्तु यह क्रिया रूप *'गुरु'* शब्द के साथ प्रयुक्त होने के कारण भाषाई विकल्पन की स्थिति को दर्शाता है। इसके अलावा *'कंठे दे माँ भर'* पंक्ति में *'दे'* के स्थान पर 'दीजिए' होना चाहिए और *'शिखिलाम गुरुर मंत्री'* पंक्ति में *'मंत्री'* के स्थान पर 'मंत्र' उच्चरित होना चाहिए। अतः ये भाषाई विकल्पन के सूचक हैं। *'गंगामाई'* में *'माई'* भोजपुरी भाषा में 'माँ' के संबोधन के लिए प्रयुक्त होता है तथा *'दोहाई'* (भोजपुरी) हिंदी की 'दुहाई' के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है। *'हेलिये-हेलिये'* में पूर्ण पुनरुक्ति है जो क्रिया-विशेषण के रूप में यहाँ प्रयुक्त हुआ है। मंत्र में प्रयुक्त *'कंठे दे माँ भर'*, *'तुमारि प्रसादे माँ'*, *'शिखिलाम गुरुर मंत्री'*, *'सबे गुरुआई, आई गंगामाई'* इन सभी पंक्तियों में टॉपिकीकरण की स्थिति है। सामान्य भाषिक संरचना के अनुसार इन पंक्तियों को क्रमशः 'माँ कंठे भर दे', 'माँ तुमारि प्रसादे', 'गुरुर मंत्री शिखिलाम', तथा 'सबे गुरुआई, गंगामाई आई' के रूप में होना चाहिए लेकिन विशेष प्रभाव उत्पन्न करने तथा निश्चित शब्द पर अतिरिक्त बल देने के उद्देश्य से वाक्य के अवयवों का क्रम भंग किया गया है। जैसे- पहले वाक्य के अंतर्गत वाक्यारंभ में कर्ता के स्थान पर 'कंठे', दूसरे वाक्य में 'तुमारि' तथा तीसरे वाक्य में 'शिखिलाम' को रखा गया है। इसी तरह चौथे वाक्य में 'आई' क्रिया पर जोर देने के लिए उसे वाक्य के अंत में न रखकर 'गंगामाई' से पहले रख दिया गया है। मंत्र में यह भी दृष्टव्य है कि *'सरस्वती'*, *'प्रसाद'*, *'गुरु'*, *'गंगामाई'*, *'करु-कामाख्या'*, *'ईश्वर'*, *'गौरा'*, *'पार्वती'*, *'दोहाई'* आदि शब्द हिंदू धर्म संबंधी प्रयुक्तियाँ हैं।

उपर्युक्त सभी विवेचनों के आधार पर सारतः यह कहा जा सकता है कि तंत्र-मंत्र, टोना-टोटका आदि सभी लोक मान्यताओं तथा लोक विश्वास पर टिके हुए हैं। हालाँकि आज शिक्षा के प्रसार के कारण तंत्र-मंत्र के प्रचलन में कमी आयी है किंतु आज भी लोक में इसकी प्रसिद्धि है। विशेषकर चाय जनगोष्ठी में आज भी

बीमारियों के उपचार के लिए लोग चिकित्सक के पास न जाकर ओझा-तांत्रिक के पास जाना अधिक लाभप्रद मानते हैं। इनके सामने किसी महान संकट की संभावना बताकर अथवा इन्हें किसी संशय में डालकर तांत्रिक, ओझा आदि अपनी साधना को प्रासंगिक बताकर भ्रमित करते हैं। इस उप-अध्याय में उल्लिखित मंत्रों के आधार पर यह सहज बोध हो जाता है कि इस समाज में टोने-टोटके पर कितना विश्वास किया जाता है। बहरहाल, उद्धृत मंत्रों पर ग़ौर किया जाए तो इनमें ओझा या तांत्रिक कुछ विशिष्ट क्रियाओं के माध्यम से मंत्रों को सशक्त और प्रभावी बनाते हैं। मंत्रों के आरंभ में देवी-देवताओं का आह्वान किया जाता है। उसके बाद उद्देश्य का वर्णन तथा अंत में 'स्वाहा', 'दुहाई', 'कोटि-कोटि दुहाई' जैसे शब्दों से मनवांछित कार्य की सिद्धि की कामना व्यक्त की जाती है। इन मंत्रों का निश्चित समय (विशेषकर प्रातः काल में) में निश्चित सामग्री (चावल, राख, सरसों, ढेकिया आदि) के साथ शुद्ध उच्चारण करना अनिवार्य होता है। चाय श्रमिक समाज के अंतर्गत भिन्न जातीय समुदाय में अलग-अलग मंत्र प्रचलित हैं। ग़ौरतलब है कि इन मंत्रों में बांग्ला भाषा का सर्वाधिक प्रभाव देखा जा सकता है। बांग्ला, असमिया, हिंदी, भोजपुरी, उड़िया आदि भाषाओं के शब्दों के प्रयोग के साथ ही अधिकतर स्थानों पर भाषा के निम्न कोड का प्रयोग हुआ है। इससे मंत्रों में भाषाद्वैत, भाषिक विकल्पन, कोड-मिश्रण तथा बहुभाषिकता की स्थिति को देखा जा सकता है। वस्तुतः सभी मंत्र एकाधिक वाक्यों की संसक्त इकाई अर्थात् प्रोक्ति हैं जो निश्चित उद्देश्य और संदेश प्रेषित करते हैं। हालाँकि ये सभी मंत्र अत्यंत प्राचीन हैं किन्तु इनमें कामरूपी माई, कामाख्या देवी का उल्लेख मिलना स्थानीयता का सूचक है। इसके साथ ही इस बात की भी पुष्टि हो जाती है कि कामरूप एक समय में तंत्र-साधना का केंद्र स्थल रहा है। बहरहाल, इन मंत्रों में विभिन्न भाषाओं और बोलियों के शब्दों, वाक्यों तथा अन्य व्याकरणिक इकाइयों के प्रयोग के पीछे सबसे बड़ा कारण चाय जनगोष्ठी समाज का भिन्न जातीय समुदायों के समुच्चय से निर्मित होना है। जनगोष्ठी में शामिल विभिन्न भाषा-भाषी समुदायों के आपसी संपर्क, साहचर्य एवं संसर्ग का प्रभाव उनकी भाषा एवं संस्कृति पर स्पष्ट रूप से दिखायी देता है। मंत्र-साहित्य इसका अपवाद नहीं है।

संदर्भ सूची-

1. (सं.) बसंत राजोवार, गणेश चंद्र कुर्मी रचनावली, पृष्ठ संख्या. 751-752
2. वही, पृष्ठ संख्या. 819
3. तथ्यदाता: श्री सुरेश घटवार (ओझा), हिलिखागुड़ी गाँव, तिनसुकिया (दिनांक: 13.11.2022)
4. वही
5. वही
6. तथ्यदाता: श्री लवखन कुर्मी, हिलिखागुड़ी गाँव, तिनसुकिया (दिनांक: 13.11.2022)
7. वही
8. वही
9. (सं.) बसंत राजोवार, गणेश चंद्र कुर्मी रचनावली, पृष्ठ संख्या. 754-755
10. वही, पृष्ठ संख्या. 750)